जज़्बाते बिसमिल

दूसरा भाग

सुखदेवप्रसाद सिनहा "बिसमिल"
इलाहाबादी

हिन्दी प्रेस, प्रयाग

प्रथम बार १००० | सन् १९३० | मूल्य १)

मुद्रक और प्रकाशक
रघुनन्दन शर्म्मा, हिन्दी प्रेस, प्रयाग

विषय-सूची

२—राष्ट्रीय-सामाजिक—



श्रीसुखदेवप्रसाद सिनहा "बिसमिल"

हिन्दी प्रेस, प्रयाग]   [चित्रकार आर० बी० यल० विश्वकर्मा, प्रयाग

'कलामे-बिसमिल' के बारे में



'बिस्मिल' जी 'छापे में छपे हुए' मशहूर शाइर है, हिन्दीवालों को यह बतलाना जानो हुई बात को जतलाना है। "बिस्मिल" उर्दू के कवि है पर उर्दूवालों से कही ज़्यादा इन्हें हिन्दीवालों ने अपनाकर शोहरत दी है। हिन्दी-पत्र-पत्रिकाओ में 'कलामे-बिस्मिल' बरसो छपता रहा है और अब भी छपता है, इस बारे मे हिन्दी या उर्दू का कोई कवि शायद ही "बिस्मिल" के मुक़ाबले का दावा कर सके। जहाँ तक मालूम है प्रयाग के सुप्रसिद्ध "अभ्युदय" ने सबसे पहले 'फ़रयादे-बिस्मिल' से अपने कालम सजाने शुरू किये थे ('जज़्बाते-बिस्मिल' का पहला हिस्सा भी अभ्युदय-कार्यालय से ही प्रकाशित हुआ है) अभ्युदय के प्रत्येक अंक में ख़ूब सजधज के साथ बेलबूटो के अन्दर, वह भी अकसर दो दो जगह "कलामे-बिस्मिल" चमकता नज़र आता था। बाद को दूसरे पत्रो ने भी 'अभ्युदय' की नक़ल की। उनमे भी बदाबदी से 'कलामे-बिसमिल' छपने लगा। 'मतवाला',

'हिन्दूपञ्च', 'वर्तमान', 'आर्यमित्र', और 'प्रताप' जहाँ देखो वहीं 'बिस्मिल' साहब बिराजमान है। हिन्दी उर्दू के इस विरोधकाल मे इस तरह की लोकप्रियता किसी उर्दू कवि को प्राप्त नहीं हुई। प्रायः प्रतिष्ठित पत्रो की यह नीति होती है कि किसी दूसरी जगह छपी हुई कविता को नही छापने, पर 'कलामे-बिस्मिल' इस नीति का अपवाद समझा गया है। 'बिस्मिल' की एक ही कविता अनेक पत्रों मे समान रूप से स्थान पाती रही है। यह 'कलामे-बिस्मिल' की सर्वप्रियता का एक प्रमाण है, जिससे इनकार नही किया जा सकता और 'बिस्मिल'जी अपनी इस असाधारणता पर गर्व करें तो अनुचित नही कहा जा सकता; यदि इतनी अधिक लोकप्रियता किसी कविता के अच्छा होने में प्रमाण मानी जा सकती है तो 'कलामे-बिस्मिल' निःसन्देह अच्छा है।

पर अब इस बात को छिपाना सचाई को छिपाना होगा कि 'बिस्मिल' और 'कलामे-बिस्मिल' के सम्बन्ध मे एकाध हिन्दी पत्र और अनेक हिन्दी कवियों का—(वह भी उनका जो कुछ दिन पहले 'बिस्मिल'जी के बेहद मद्दाह या भूरि भूरि प्रशंसक थे) दृष्टिकोण बदल गया है, कुछ सज्जन तो 'बिस्मिल' के आज उतने ही विरोधी बन गये हैं जितने कि पहले प्रशंसक थे। रुचि-परिवर्तन भी इसका कारण हो सकता है; पर बात कुछ और ही मालूम होती है। संसार का यह कुछ नियम सा है कि जब किसी की हद से और जरूरत

से ज़्यादा प्रसिद्धि या प्रतिष्ठा होने लगती है तब हमपेशा 'रक़ीब' भी पैदा हो जाते है। जो कवि आज सर्वमान्य समझे जाते है उनके साथ भी ऐसा हुआ है,—"होता आया है कि अच्छो को बुरा कहते है"—'बिस्मिल'जी की कविता सीधी सादी और सरल होती है। रोज़मर्राह की मामूली बातें होती है, थोडे पढ़े लिखे, उर्दू न जाननेवाले श्रोता और पाठक भी आसानी से समझ जाते है और दिल खोल कर दाद दे देते है। 'बिस्मिल' के पढ़ने का ढंग भी ख़ास है; वह और भी कलाम को चमका देता है, जिससे दाद का दौगड़ा बरस जाता है, वाह वाह की धूम मच जाती है, बारबार पढ़ने का अनुरोध किया जाता है।

आत्मश्लाघा कवियो का एक प्रसिद्ध रोग है। दाद (प्रशंसा) के कुपथ्य से वह और बढ़ जाता है; मस्त को मतवाला बना देता है—

"सौ बोतलो का नशा है इक वाह वाह में"

इस चढ़े हुए नशे की हालत मे 'बिस्मिल भी' कभी कभी ऐसी बात बकार जाते है जो सुननेवालों को और हरीफ़ों को नागवार गुज़रती है, उन्हे शिकायत का मौक़ा दे देती है। फ़ारसी और उर्दू के शाइरो मे "तअल्ली" और "फ़खोमुबाहात" की आदत सदा से चली आई है। यह उनका कवि-समय-सिद्ध सनातनधर्म है। मामूली शाइर भी अपने मुक़ाबले में 'मीर'

और 'मिर्ज़ा' को ललकारता है, अपने सामने अफ़लातून को भी 'तिफ्लेदबिस्तां' समझता है, ऐसा दावा करनेवाला .खुद अपनी हक़ीक़त को समझता है पर आदत से लाचार होता है, 'बड़ा बोल' बोल ही उठता है। संस्कृत और हिन्दी के कवियो में भी ऐसे आत्मश्लाघो कवि हुए है सही, पर बहुत कम। भारतीय सभ्यता में आत्मश्लाघा अच्छी नही समझी जाती। गोस्वामी तुलसीदास जैसे जगन्मान्य महाकवि भी

"छन्द प्रबन्ध एक नहि मोरे,
कहौं सत्य लिखि कागद कोरे।"

कहते सुनाई देते है। बिस्मिलजी उर्दू के कवि है, उर्दू कविता का परम्पराप्राप्त यह गुण या दुर्गुण इनमें भी है, बड़ा बोल बोल जाते है, ख़ासकर जब से 'बिस्मिल'जी ने 'अकबरे-सानी' होने की बाँग दी है, अकबर की ग़ज़लों पर गजलें कहनी शुरू की हैं, तभी से उनकी उस सर्वप्रियता का ह्रास प्रारम्भ हुआ है। यद्यपि किसो महाकवि की ग़ज़ल पर ग़ज़ल कहना—उन्हीं रदीफ़ क़ाफ़ियों में मजमून निकालना, नवाभ्यासी कवि के लिए भी कोई ऐब की बात नही है, उर्दू फ़ारसी मे यह बहुत पुराना रिवाज चला आता है, फिर भी 'अकबर' जैसे अद्वितीय महाकवि के मुक़ाबले की बात लोग बरदाश्त नहीं कर सकते। मैं .खुद 'अकबर' का अनन्य भक्त हूँ। उर्दू के किसी भो नये पुराने कवि को 'अकबरे-सानी' या 'अकबरे अव्वल' मानने को तय्यार

नहीं हूँ। 'अकबर' का अपना एक ख़ास रंग था, जो उन्होंने ही ईजाद किया और उन्ही के साथ ख़त्म होगया। 'अकबर' के अनुकरण में किसी को भी—यहाँ तक कि अल्लामा 'इक़बाल' को भी—सफलता नही मिली। अकबर का यह दावा बिलकुल बजा है—

"मेरी तर्ज़े-फ़ुग़ाँ की बुल्-हवस तकलीद करते है।
ख़िजल होगे असर की भी अगर उम्मीद करते हैं॥"

फिर भी 'अकबर' का अनुकरण करने की लोगों ने चेष्टा की है। यही बेचारे 'बिस्मिल' ने किया है। इसलिए यह 'बिस्मिल' के विरोध का कारण न होना चाहिए। 'बिस्मिल' के साथ यह अन्याय होगा यदि केवल इसी "अपराध" के कारण उन्हे कवि मानने से भी इन्कार किया जाय—(जैसा कि कुछ लोग कहने लगे है)—

बिस्मिलजी के कुछ पुराने प्रशसक मित्रो को जब यह बात मालूम हुई कि मुझसे 'जज़्बाते बिस्मिल' पर भूमिका या सम्मति लिख देने का अनुरोध किया जा रहा है तब उन्होंने कुछ ऐसा ही भाव प्रकट किया कि—"बिस्मिल की कविता पर भूमिका लिखने का अर्थ यह होगा कि मै भी इन्हें 'अकबरे-सानी' मानता हूँ, और यह कि मुझे हिन्दीवालो के उस परिवर्तित दृष्टि-कोण का ध्यान करते हुए भी भूमिका या सम्मति न लिखनी चाहिए"। इसी बात को साफ़ करने के लिए मैने यह ऊपर की

भूमिका बाँधी है। मै साफ़ कहता हूँ और सच कहता हूँ (भले ही बिस्मिलजी इस साफ़गोई से बुरा माने) कि मैं 'बिस्मिल' को, और सिर्फ़ 'बिस्मिल' ही को क्यों—किसी दूसरे को भी—अकबरे-सानी' नहीं समझता। मैं 'बिस्मिल' को वही 'बिस्मिल' मानता हूँ, जैसा कि वह 'अकबरे-सानी' होने का दावा करने से पहले थे। उनकी कविता मेरी दृष्टि मे अब भी वैसी ही अच्छी या बुरी है जैसी 'जज़बाते-बिस्मिल' का पहला हिस्सा प्रकाशित होने के समय थी। मेरा कहना सिर्फ़ इतना ही है कि 'बिस्मिल' की कविता जैसी पहले आदर का पात्र समझी गई थी, अधिक नहीं तो उतनी ही अब भी समझी जानी चाहिए और उसका वैसा ही प्रचार होना चाहिए। 'बिस्मिल' के बारे मे मेरा दृष्टिकोण नही बदला है। 'बिस्मिल' की कविता को मैं जिस दर्जे की पहले समझता था अब भी उसी दर्जे की समझता हूँ, बल्कि उससे कुछ आगे बढ़ी हुई।

'ज़ज्बाते-बिस्मिल' के पहले हिस्से को साहित्यप्रेमियों ने क़द्र की थी। यह दूसरा हिस्सा भी (जो अब प्रकाशित हो रहा है) उसी क़द्र का मुस्तहक़ है। इसे भी अपनाना चाहिए। मुझे आशा है इसका यथेष्ट प्रचार होगा।

हिन्दी प्रेस, प्रयाग
१०–३–१९३०

पद्मसिंह शर्मा

कवि का परिचय



प्रयाग के मशहूर उर्दू शायर मुन्शी सुखदेवप्रसाद सिनहा 'बिसमिल' का जन्म ११ नवम्बर, १८६६ को तीर्थराज प्रयाग मे हुआ। जब ये सात-आठ बरस के थे, इनके पूज्य पिता मुन्शी बिश्वेश्वरदयालजी ने, जैसा कि कायस्थों में होता है, इन्हें मकतब में पढ़ने के लिए बिठा दिया। वहाँ ये तेरह चौदह बरस तक फ़ारसी का अध्ययन करते रहे। इनको फ़ारसी में भी पद्य पढ़ने ही की ज़्यादह रुचि थी। महाकवि 'हाफ़िज़' और 'शम्श' तबरेज़ी की कविताओं के ये बचपन ही से शैदाई हो गये थे और सच पूछिये तो शायरी का शौक़ इनके दिल में यही से पैदा हो गया था। उर्दू कवियों मे महाकवि "दाग़" की शायरी इनके दिल में जगह कर चुकी थी। जब १५ बरस की अवस्था हुई, तो अँगरेज़ी पढ़ने के लिए कायस्थ पाठशाला इलाहाबाद मे, जो कायस्थों की क़ौमी प्रसिद्ध सस्था है, नाम लिखा दिया गया। आलिम फ़ाज़िल मुन्शी गनेशीलाल साहब उस ज़माने मे कायस्थ पाठशाला के हेड मास्टर थे। मुन्शी कालीप्रसादजी कुलभास्कर का जो

कायस्थ पाठशाला के जन्म दाता थे, उनका जन्म दिवस तीसरी दिसम्बर को हर साल मनाया जाता है। अकसर विद्यार्थी उनकी प्रशंसा में कवितायें पढ़ते है। 'बिसमिल' साहब इस वार्षिक उत्सव मे कविता पढने का साहस तो न करते थे, मगर अपने सहपाठियों की कवितायें सुनने के बडे प्रेमी थे। अकसर विद्यार्थियो की कविताओं की प्रशंसा मास्टर लोग किया करते थे तो इनके दिल मे यह विचार उसी समय उठता था कि यह भी कविता किया करें। एक तरह की लहर दिल मे उठती थी और उठकर रह जाती था। जब ये मिडिल क्लास मे थे तब इनके बड़े जोर की माता निकली, मरने से बचे। दिमाग़ पर इसका बडा असर हुआ और इस क़दर कमज़ोर हो गये कि लिखने-पढ़ने से दिमाग चक्कर खाने लगा। इसी सबब से मिडिल क्लास के इम्तिहान मे ये नाकामयाब हुए। नाकमयाबी से इनके दिल पर बडा दुख हुआ। ये यहाँ तक हताश हुए कि पढ़ना-लिखना छोड़कर घर बैठ गये। तीन चार बरस तक यार-दोस्तो मे व्यर्थ ही समय व्यतीत किया। अच्छी बुरी सब तरह की सङ्गतों का तजरुबा हुआ। इनके पुराने मित्र बाबू ओंकारनाथजी गुप्त से उसी जमाने मे इनका परिचय हुआ। उनकी दूकान पर इनकी रात-दिन की बैठक रहा करती थी। गुप्तजी भी बड़े साहित्य-प्रेमी है। उर्दू कवियों के दीवान अकसर कुछ और लोगो के साथ बैठ कर पढ़ते थे और इस तरह कविता का आनन्द उठाया करते थे। इससे मालूम होता है कि

'बिसमिल' साहब जिस रंग में भी रहे कविता की मदिरा में डूबे रहे।

तीन-चार बरस यों ही मटरगश्ती में गुज़रे। बुरो-बुरी सुहबतो का भी सामना करना पड़ा। यकायक इनके दिल ने पलटा खाया और फिर माडर्न हाई स्कूल इलाहाबाद मे मिडिल क्लास मे नाम लिखा कर पढ़ना प्रारम्भ किया। वहाँ के हेड मास्टर डाक्टर जोज़ेफ़ घोष साहब बड़े इल्म दोस्त आदमी है। फ़ारसी और अरबी के बड़े विद्वान् है। हर शुक्रवार को वहाँ एक साप्ताहिक उर्दू-कवि-सम्मेलन होता था। उसमें सातवें दरजे से लेकर दसवे दरजे तक के विद्यार्थी भाग लेते थे। अकसर दी हुई समस्याओं पर स्कूल के मास्टर भी कवितायें करते थे। इस कवि-सम्मेलन (मुशायरा) के सभापति डाक्टर घोष साहब ख़ुद ही होते थे। हर रग की कविताये पढ़ी जाती थी। व्यंग्य कविताओं मे अकसर विद्यार्थी मास्टरो पर ख़ूब फबतियाँ कसते थे। बाबू बंशगोपाल साहब, जो इन दिनों फतहपूर में वकालत करते है उसी ज़माने में यहाँ मास्टर थे। उनकी 'बिसमिल' साहब पर बड़ी कृपा रहती थी। उन्ही के कहने-सुनने से इन्होंने भी स्कूल के साप्ताहिक मुशायरों मे भाग लेना आरम्भ किया। अपनी टूटी-फूटी कविता पढने का उनके उत्साह दिलाने से 'बिसमिल' साहब के दिल में शौक़ बढ़ता गया। मास्टर साहब भो कभी-कभी अपनी रचना स्कूल के मुशायरे मे पढ़ते थे। 'बिसमिल' साहब इसी स्कूल से सच

पूछिये, तो कवि हुए और माडर्न स्कूल के एक मुशायरे मे जो ६ नवम्बर १६२७ को हुआ था उसका इज़हार 'बिसमिल' साहब ने एक रुबाई मे पढ़कर यों किया था।

दरियाये दिलावेज़ मे बहना सीखा।
बज़्मे सखुन अफ़रोज़ में रहना सीखा॥
स्कूल सलामत यह रहे ऐ 'बिसमिल'।
मैं ने यहीं अशआर का कहना सीखा॥

इस रुबाई से डाक्टर घोष के दिल पर बड़ा असर हुआ और वे 'बिसमिल' साहब से बेहद ही .खुश हुए। .खुश होने की बात ही थी। इस रुबाई का ज़िक्र डाक्टर घोष ने ७ नवम्बर सन् १६२६ के वार्षिक उत्सव की छपी हुई रिपोर्ट मे, जो बड़े समारोह से मनाया गया था, किया है और 'बिसमिल' साहब को 'बुलबुले इलाहाबाद' का ख़िताब दिया। यह ख़िताब 'बिसमिल' साहब की ओज भरी कविता और उनके पढ़ने के निराले ढङ्ग को देखते हुये बहुत ही मौज़ूं और ठीक मालूम होता है। बिसमिल थे ही; इन्होने अपना उपनाम (तख़ल्लुस) अपनी ही तबीयत से 'बिसमिल' रक्खा। परमात्मा जाने यह शब्द 'बिसमिल' इन्हें क्यो इतना प्यारा मालूम हुआ और आज तक इसी उपनाम से ये कविता कर रहे है। माडर्न स्कूल का साप्ताहिक मुशायरा 'बिसमिल' साहब की वजह से बढ़ता ही गया और आज तक इस साप्ताहिक मुशायरें का सिलसिला जारी है। डाक्टर घोष को 'बिसमिल'

साहब बहुत प्रिय है। यहाँ तक कि विद्यार्थियों के एक मुशायरे में, जिसमे पदक वग़ैरह दिया जाता है, 'बिसमिल' साहब को डाक्टर घोष ने सभापति बनाया था। 'बिसमिल' साहब के बारे मे डाक्टर घोष साहब ने इस प्रकार कहा था कि, "वह बिसमिल जो यहाँ के विद्यार्थी थे और स्कूल के मुशायरे में समिलित हुआ करते थे आज सभापति की हैसियत से यहाँ मौजूद है। मुझे घमण्ड है कि आज उर्दू-दुनिया मे बिसमिल साहब ने बड़ा नाम पैदा किया है। इससे ज़्यादा मेरे लिए क्या ख़ुशी की बात हो सकती है, स्कूल का सर आज उर्दू-कविता-संसार में बिसमिल साहब से ऊँचा है, बिसमिल साहब ही के निर्णय पर विद्यार्थियों को पदक दिया गया। डाक्टर घोष ने बिसमिल साहब का बड़ा उत्साह बढ़ाया। नये कवि को इसकी बड़ी ज़रूरत होती है। नही तो वह हताश होकर कविता करने से बाज आता है। या कविता भी करता है तो उसको वह सफलता जो होनी चाहिए, नहीं होती। कवि और फिर नया कवि अगर उत्साह पाता रहे, तो फिर क्या कहना? मगर आजकल की प्रथा ही दूसरी है। लोग किसी को उत्साह देना तो दूर, हर तरह से दबाने को कोशिश करते हैं। जब यह माडर्न स्कूल मे दसवें दरजे में शिक्षा पा रहे थे, तब इनके पाँव में एक बड़ा भयंकर फोडा निकला। तीन-चार महीने तक ये बीमार रहे और उसी में पढ़ना-लिखना बिलकुल छूट सा गया। अच्छा होने पर किसी तरह इम्तहान में नाम करने के लिये

शामिल हुए। मगर नाकामयाबी का मुंह देखना पड़ा। दिल टूट गया और फिर दोबारा लिखना पढ़ना छोड़कर घर बैठ रहे और शायरा के चक्कर में पड़ गये। अभी तक बिला संशोधन ही कविता पढ़ते थे। उस्ताद (गुरु) की आवश्यकता थी ही। जहाँ कही इलाहाबाद मे मुशायरे होते थे वहाँ कविता सुनने के लिए ये ज़रूर ज़ाते थे। मगर कविता पढ़ने का साहस न करते थे।

उस जमाने की तुकबन्दी ऐसे मुशायरे मे जहाँ अच्छे-अच्छे कवि मौजूद हैं किस तरह पढ़ते ? जैसा कि आजकल के कुछ नौसिखिये कवि कविता पढ़ने का साहस करते है कविता पढ़ना ही नही, अपने को ऊँचे दर्जे के कवियो मे गिनते है। कविता बगैर किसी उस्ताद के सशोधन किये हुए मुशायरे मे न पढ़नी चाहिए। मालूम नही क्या त्रुटि रह जाय। सच तो यह है कि बग़ैर उस्ताद के शागिर्द कभी शायरी दुनिया में सफलता नही पा सकता और उर्दू मे तो इसका चलन ही है। २५ दिसम्बर सन् १९१८ इसवी का दिन बहुत शुभ दिन था। सुबह के वक्त जब ये बाहर तख़्त पर बैठे हुए कुछ कविता कर रहे थे कि इतने में इनके स्वर्गीय चचा बाबू अनन्तलाल साहब वकील बाहर आये और सबेरे सबेरे इनको कविता करते हुए देखकर बहुत नाखुश हुए। नाखुश होने की बात ही थी। सबेरे का समय तो परमात्मा के नाम लेने का होता है। और यहाँ बिस-मिल साहब हुस्नो इश्क़ के झगड़े मे उलझे हुए कविता कर

रहे हैं। आख़िर में चचा साहब ने नाराज़ होने के बाद उसी समय यह राय दी कि अगर कविता ही करना है तो किसी उस्ताद की शागिर्दी करो। यह फ़न इस तरह नहीं आ सकता। उनका यह कहना था कि 'बिसमिल' साहब का साहस बढ़ा। कविता की ज्वाला दिल में दहक ही रही थी। अपने चचा से पूछा कि मैं किसको अपना गुरु बनाऊँ ? आप ही राय दीजिये। उन्होंने जवाब दिया कि जब मैं शिवराखन (सी० ए० बी०) स्कूल इलाहाबाद में हेडमास्टर था, तो मेरे स्कूल में नाखुदाय सखुन हज़रत "नूह" शिक्षा पाते थे। वे आजकल हिन्दोस्तान के मशहूर कवि है और बुलबुले हिन्दोस्ताँ नवाब मिरज़ा 'दाग़' देहलवी के शागिर्द हैं। मैं उनको एक सिफ़ारशी पत्र लिखे देता हूँ तुम उनके शागिर्द हो जाओ। 'बिसमिल' साहब ने कहा अच्छी बात है। चचा साहब ने भी उसी समय हजरत नूह के नाम ख़त लिख दिया। बिसमिल साहब उसी दिन ११ बजे की गाड़ी से सिराथू रवाना हुये और सीधे 'नारा' पहुँचे। नारा सिराथू से नौ मील की दूरी पर आबाद है। यही नाखुदाय सखुन हज़रत 'नूह' नारवी का मुक़ाम है। क़रीब पाँच बजे शाम के ये नारा पहुँच गये। सौभाग्य से हजरत 'नूह' से मुलाक़ात हो गई। 'बिसमिल' साहब ने अपने चचा का सिफ़ारशी ख़त दिया। 'नूह' साहब बडी ख़ातिर से पेश आये। इतने बड़े कवि का, ऐसा सादा स्वभाव देखकर ये दङ्ग रह गये और दिल ही दिल में अपनी क़िसमत पर घमंड करने लगे। हज़रत 'नूह' ने यह भी

कहा कि अब मैंने शागिर्द बनाना कम कर दिया है क्योंकि मेरे शागिर्दों को तादाद २०० के लगभग है। कविता-संशोधन करने मे मुझे अब तकलीफ़ होती है और दूसरे मुझे भी कविता करने का समय नहीं मिलता। 'बिसमिल' साहब ने हताश हो कर जवाब दिया कि आप हजरत 'नूह' होकर डूबते को सहारा नहीं देते, आचर्श्य है। इस पर 'नूह' साहब हँस पड़े और फ़रमाया कि आप घबराते क्यो हैं ?

अब मै आपका और आप मेरे हो गये। इस वाक्य से जो 'बिसमिल' साहब को तसल्ली हुई, वह इनका दिल ही जानता है और कौन जान सकता है ? 'नूह' साहब ७ बजे शाम को बड़े कमरे में आये और आराम कुरसी पर बैठ गये। बड़े दिन की छुट्टियाँ थी और भी कई उनके शागिर्द मिलने के लिए बाहर से आये हुए थे। सब आकर 'नूह' साहब के पास बैठ गये, ये भी कमरे में तलब किये गये। ये इनकी परीक्षा का समय था। ये भी साहस करके वहाँ गये और चुपचाप बैठ गये। 'नूह' साहब ने एक ब्राह्मण के यहाँ इनके खाने पीने का प्रबन्ध कराया और फ़रमाया कि यह आप का घर है यहाँ किसी तरह का अब संकोच करना ठीक नही। 'बिसमिल' साहब ने भी इसका उचित जवाव दिया। शायरी का ज़िक्र छेड़ा और सब से पहले हज़रत 'नूह' ने 'बिसमिल' साहब से कविता पढ़ने को कहा। यह सुन कर इनके पाँव के नीचे से ज़मीन निकल गई और ये सकते के आलम में हो गये। ठीक

भी था। इतने बड़े कवि के सामने कविता पढ़ना कोई खेल नही था। बड़ी हिम्मत करके यह ग़ज़ल 'बिसमिल' साहब ने आरम्भ की, जिसका पहला पद यह है—

क्या फ़ायदा है छुप के वह बैठे है जो घर में।
हर वक्त फिरा करते हैं दुनिया की नज़र में॥

'नूह' साहब और इनके शिष्यों ने इसकी बड़ी प्रशंसा की। 'बिसमिल' साहब दिल ही दिल में बहुत .खुश हुए। नूह साहब ने फ़रमाया क्या यह ग़ज़ल आपकी .खुद कही हुई है या किसी ने कह दी है? 'बिसमिल' साहब ने कहा—यह मेरी ही रचना है। 'नूह' साहब यह सुन कर बहुत .खुश हुए।

पूरी ग़ज़ल सुन कर, कुछ संशोधन करने के बाद हज़रत 'नूह' ने फरमाया कि आपका दिल, दिमाग़ शायरी के लिए मौजूं है। आप अच्छे कवि हो सकते हैं। वे अब इनकी शागिर्दी में इसी दिन से गिने जाने लगे और अपने दिल में यह समझे कि 'नूह' साहब क्या मिले, गोया दुनिया मिल गई। और भी शिष्यों ने अपनी-अपनी कवितायें पढ़ीं। 'बिसमिल' साहब ने और उनके शिष्यों ने भी 'नूह' साहब से प्रार्थना की कि आप भी अपनी .ज़ुबाने मुबारक से कोई कविता सुनायें। 'बिसमिल' साहब तो 'नूह' साहब की कविता सुनने के लिए बहुत ही उत्सुक थे। इतने बड़े कवि से कविता सुनने का इनको कभी सौभाग्य प्राप्त नही हुआ

था। नूह साहब ने यह लाजवाब कविता पढ़ी जिसका पहला पद यह है।

किसी का दर्द अहले ऐशो राहत कम समझते हैं।
हमारा हाल जैसा कुछ है उसको हम समझते है॥

पूरी कविता उस्तदाना रंग में डूबी हुई थी। रात के दस बज चुके थे, नूह साहब आराम फ़रमाने के लिए चले गये। बिसमिल साहब ने भी खाना खाया। दिन भर की थकान थी ही फ़ौरन सो गये। सवेरा हुआ। हाथ-मुँह धोकर बैठे ही थे कि नूह साहब तशरीफ़ लाये। कुछ जलपान करने के बाद बिसमिल साहब नूह साहब के पास बैठ गये।

जो कवितायें डाक से आई हुई थी उनमें से दो-चार लिफ़ाफ़ा लेकर नूह साहब उन सबो का संशोधन करने लगे। नूह साहब जब नारे में रहते है तो सात बजे सबेरे से ११ बजे दिन तक बराबर अपने शिष्यों की कविताओं पर संशोधन करते हैं। कमाल है और क्या कहा जाय? सशोधन का तरीक़ा यह है कि जो कविताये कवि-सम्मेलन (मुशायरे) के लिए होती है उन कविताओ पर सशोधन जल्दी होता है और नहीं तो डाक से कवितायें आती रहती हैं, संशोधन होता रहता है। कवितायें इस तरह संशोधन के लिये आती हैं। एक लिफ़ाफे पर नूह साहब का पता होता है, लिफ़ाफे में कविता होती है और एक फ़ालतू लिफ़ाफ़ा होता है जिस पर उस शार्गिद का,

जिसकी कविता होती है पता लिखा हुआ रहता है अगर पता नहीं लिखा रहता तो वह कापी जिसमें शागिर्दों के पते दर्ज हैं हज़रत नूह उसमें से पता देख कर और लिफ़ाफा पर पता लिख कर रवाना कर देते है। एक लिफाफ़े में दो ही कवितायें भेजने का नियम है। शागिर्दों से नूह साहब संशोधन की कोई फ़ीस नहीं लेते। हाँ और जो उस्ताद हैं वह कुछ न कुछ किसी न किसी बहाने से अपने शागिर्दों से अपनी फ़ीस निकाल ही लेते हैं। यह कोई ऐब की बात नही है। बड़े-बड़े उस्तादों ने ऐसा किया है। जो शागिंद कई दिन से आये हुए थे, दो एक दिन रहने के बाद अपने-अपने वतन को रवाना हो गये। इन्होंने भी इलाहाबाद आने की आज्ञा माँगी। नूह साहब ने फ़रमाया कि चलिए आपको अपने इलाक़े की सैर करा लाएँ। यह उनका पहला हुक्म था, बिसमिल साहब किस तरह इनकार करते। नूह साहब के साथ दूसरे दिन इलाक़े की तरफ़ रवाना हुए। नारा से दो मील की दूरी पर एक गाँव 'धाता' है, जो हजरत नूह का इलाक़ा है। क़रीब एक हफ़ते के ठहरना पड़ा। वहाँ पहुँचते ही कारिन्दों और सिपाहियों ने तरह-तरह का आराम इकट्ठा कर दिया। हर वक्त शैरो शायरी का चर्चा रहता था। बिसमिल साहब को कई कविताओं पर यहाँ संशोधन हुए और बहुत सी बातें कविता के सम्बन्ध में इनको मालूम हुईं। इस क़दर नेक उस्ताद की सेवा में रह कर कौन न फूला समायेगा। एक हफ़ते के बाद यह वहाँ से इलाहाबाद के लिए

रवाना हो गये। प्रयाग आकर इन्होंने सब बातें चाचा साहब से कहीं। वे भी बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे कि अब शायरी करने का मज़ा भी है। नूह साहब की सेवा मे बिसमिल साहब बराबर संशोधन के लिए कविताएँ डाक से भेजते रहे। १४ अप्रेल के सन् १९१९ को नूह साहब इलाहाबाद तशरीफ़ लाये और बिसमिल साहब से भी मिलने के लिए इनके मकान पर आये। २० अप्रेल सन् १९१९ को नूह साहब की लड़की की शादी थी। उसी सिलसिले में मुशायरा भी था। बिसमिल साहब भी इस अवसर पर सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रित किये गये। मुशायरे का मिसरा तरह यह था—

"ख़ुशी के वक्त इज़हारे ख़ुशी मख़लूक़ करती है"

बिसमिल साहब उस्ताद की आज्ञानुसार १९ अप्रेल सन् १९१९ को सुबह की गाडी से इलाहाबाद से नारा के लिए रवाना हुए और शाम होते नारा पहुँच गये। वहाँ शायरों का जमघट था। बाहर के बड़े-बड़े धुरन्धर कवि शादी और मुशायरे मे सम्मिलित होने के लिए पधारे थे। नवाब सिराजुद्दीनख़ाँ साहब 'साइल' देहलवी दामाद बुलबुले हिन्दोस्ताँ नवाब मिर्ज़ा 'दाग़' देहलवी, जनाब 'अहसन' मारहरवी, जनाब स्वर्गीय 'क़रार' शाहजहाँपुरी, जनाब नारायणप्रसाद साहब 'मेह्र' ग्वालियारी, आदि आदि नाम उल्लेखनीय है। इन महाकवियों से बिसमिल साहब का वही परिचय प्रथम

बार हुआ। नूह साहब के शागिर्दों की भी गिनती बहुत ही ज़्यादा थी। इलाहाबाद, कानपुर, मेरठ, ग्वालियार, पटना, गया, रायबरेली, बुलन्दशहर और अन्य अन्य जगह के शागिर्द आये थे। हर घड़ी शैरो-शायरी का चर्चा रहता था। नारे का मुशायरा तीन दिन और रात में समाप्त हुआ। नवाब 'साइल' देहलवी इस अद्भुत मुशायरे के सभापति थे। इसी से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि यह जमघट शायरों का विराट् जमघट था। बिसमिल साहब ने पहले पहल बाक़ायदा मुशायरे में यही गज़ल पढ़ी थी। बिसमिल साहब के लिए यह कितने घमण्ड की बात थी कि इनकी शायरी का श्रीगणेश नारा ही के मुशायरे से हुआ। उस समय जैसी इनकी शायरी थी, उसको देखते हुए इनकी कविता की बहुत कुछ प्रशंसा हुई। उस्ताद भाइयो (गुरु भाइयों) में 'सोग' साहब, 'दुआ' साहब, 'सूफ़ी' साहब मेरठी, 'रयाज़' साहब जेवरी, 'मौज' साहब ग्वालियारी, डाक्टर 'आज़म' साहब करेवी, 'तौबा' साहब, भाई सिद्दीक़ नारवी आदि आदि से परिचय हुआ और आपस मे ख़ूब मेल-मिलाप बढ़ गया। नव्वाब 'साइल' देहलवी का पढना सुनकर तो बिसमिल साहव 'बिसमिल' हो गये और यह सत्य है कि 'साइल' साहब की तरह पढने वाला हिन्दोस्तान मे नही है। अव्वल तो लाजवाब शायरी और उस पर 'साइल' साहब का पढ़ना सोने मे सोहागा है। जब तक 'साइल' साहब नारा मे थे, बिसमिल साहब बराबर उनकी सेवा में दोनों

समय दो-एक घण्टे बराबर हाज़िरी देते थे। अच्छे अच्छे कवियों की कविता सुनने का अवसर बिसमिल साहब को यहीं प्राप्त हुआ। हिन्दू कवियों के भी खाने-पीने और रहने का इन्तज़ाम नूह साहब ने बहुत माकूल किया था। किसी तरह की किसी को शिकायत न थी। एक हफ़्ता रह कर बिसमिल साहब भी नारे से इलाहाबाद आये। बेकार बैठे रहना बिसमिल साहब ने मुनासिब न समझा और अपने एक दोस्त के कहने पर सपलाई और ट्रान्सपोर्ट आफ़िसर के नाम एक दरख़्वास्त डाक से देहली भेज दी। लड़ाई का ज़माना था। वहाँ आदमियों की ज़रूरत थी, दरख्वास्त मंज़ूर होकर आगई। १८ अगस्त सन् १९१९ को बिसमिल साहब देहली रवाना हुए। नव्वाब 'साइल' देहलवी से अच्छी तरह परिचय हो ही चुका था। उनके दौलतख़ाने पर 'बिसमिल' साहब जाकर ठहरे। 'साइल' साहब बड़ी आवभगत के साथ पेश आये। दफ़्तर की हाज़िरी के बाद बिसमिल साहब साइल ही साहब की सेवा में रहते थे। उनकी सङ्गत से बहुत कुछ इनको लाभ हुआ। कविता करने का अभ्यास यहाँ और भी बढ़ गया। शायरों का जमघट यहाँ भी हमेशा रहता था। बिसमिल साहब ने पढ़ने का ढङ्ग सच पूछिये तो साइल साहब की सेवा में रहकर सीखा और अब कविता पढ़ते-पढ़ते 'बिसमिल' साहब के पढ़ने का ढङ्ग और ही कुछ होगया है। जिसमें बड़ी आकर्षण-शक्ति है। इनके उस्ताद नूह साहब के शब्दों मे यह कहना कोई अनुचित नही

है कि "बिसमिल साहब अपनी कविता पढ़कर मुशायरों मे ज़बरदस्ती प्रशंसा लूटते हैं।" ३० अगस्त सन् १९१९ को मेरठ में आल इन्डिया मुशायरा था। जनाब 'हमीद' मेरठी एडीटर 'नज़्ज़ारा' दावत देने के लिए 'साइल' साहब की सेवा में आये हुए थे। 'साइल' साहब ने बिसमिल साहब का परिचय जनाब 'हमीद' मेरठी से कराया। 'हमीद' साहब ने बिसमिल साहब को भी मुशायरों में सम्मिलित होने के लिए ज़ोर दिया। इस मुशायरे के सभापति साइल साहब ही थे। बिसमिल साहब साइल साहब के कहने-सुनने से मुशायरे में सम्मिलित होने के लिए राज़ी हुए। इधर इनके उस्ताद नूह साहब का पत्र इनके पास इस विषय का आया कि "आप साइल साहब के साथ मेरठ के मुशायरे मे सम्मिलित होने के लिए ज़रूर आयें। यह आपके लिए लाजवाब मौक़ा है।" बिसमिल साहब ने नूह साहब का पत्र पाते ही फ़ौरन ही उत्तर दिया कि मै ज़रूर सम्मिलित हूँगा। मेरठ के मुशायरे का मिसरा तरह (समस्या) यह था—

"रश्क दुश्मन ने निकाला तेरी महफ़िल से मुझे"

इन्होंने भी जी तोडकर ग़ज़ल कही। ३० अगस्त को सुबह की गाडी से न०वाब साइल साहब के साथ मुशायरे में सम्मिलित होने के लिए मेरठ रवाना हुए। स्टेशन पर स्वागत-कारिणी के मेम्बरान मौजूद थे। साइल साहब के साथ ये भी जोडी मे बैठ कर ठहरने की जगह पहुँचे। नूह साहब भी शाम की गाडी से पहुँचे। नूह साहब डाक्टर आजम साहब करेवी, जो उस ज़माने

मे मेरठ ही मे थे, उनके मकान पर ठहरे। नूह साहब बिसमिल साहब को साइल साहब से इजाज़त लेकर अपने साथ लेगये। जनाब 'अफ़सर' मेरठी से इनका परिचय हुआ। थोड़ी देर के बाद जनाब 'मजज़ूब' साहब, जो वही डिप्टी इन्सपेक्टर स्कूल थे, नूह साहब से मिलने के लिए आये। थोड़ी देर के बाद खाने-पीने से फ़ुरसत पाकर मुशायरे में सम्मिलित होने के लिए रवाना हुए। मुशायरा टाउन हाल के मैदान में था। हर तरफ़ भीड़ ही भीड़ नजर आती थी। कहते है कि इतना बड़ा मुशायरा इस गये-गुज़रे ज़माने में कभी देखने मे नहीं आया। रात मे बिसमिल साहब को कविता पढ़ने का नम्बर आया। जिसका पहला पद यह था—

आज यह मौक़ा मिला है सख्त मुश्किल से मुझे।
दिल के बस दो हर्फ़ कहने हैं तेरे दिल से मुझे।

बिसमिल साहब की ग़ज़ल मुशायरे में बहुत फली फूली। इस पर साइल साहब, नूह साहब, और बड़े बड़े आये हुए कवियों ने बहुत कुछ प्रशंसा की, बिसमिल का दिल इस पर बहुत बढ़ गया। दिल बढ़ने की बात ही है। ऐसे मुशायरे मे सफलता पाना जहाँ एक से एक अच्छे कवि मौज़ूद हों, एक नये कवि के लिए सचमुच बडी बात है। साइल साहब की सेवा मे दो महीने के लगभग रहने पर बिसमिल साहब का दिल्ली से तबादला रावलपिंडी को होगया और वहाँ एक महीने के क़रीब रहने पर फिर मारीइन्द्स कालाबाग़ के लिए

तबादला हुआ, ६-७ महीने बिसमिल साहब को वहाँ रहना पड़ा और फिर सरहदी मोक़ाम जन्डोला के लिए तबादला हुआ। यहाँ डेढ़ दो बरस के लगभग रहना पड़ा। बिसमिल साहब सफ़र मे भो कबिता करते रहे। उस्ताद को स शोधन के लिए बराबर कविता भेजते रहे। शायरी का अभ्यास बढ़ता ही गया। बिसमिल साहब अपने दफ्तर मे और फ़ौजी अफ़सरो में बिसमिल ही के नाम से पुकारे जाते थे। अफ़सरों की भी इन पर ख़ास कृपा रहती थी। इस मुलाज़मत से अलग होने के बाद फिर वही बेकारी थी, शायरी थी और यह थे। इलाहाबाद मे कविता पढ़ने का इनको पहला अवसर स्वर्गीय बाबू कामतानाथ साहब रईस (कोठी लाला बन्सीधर) के मुशायरे में सम्मिलित होने का मिला और इसी मुशायरे से जनता की नज़र बिसमिल साहब पर पड़ने लगी। इस मुशायरे की ग़ज़ल, जो बिसमिल साहब ने पढ़ी थी, बहुत मशहूर हुई। उसका पहला पद यह था :—

कुछ भी न चली इश्क़ में तदबीर किसी की।
तदबीर पे हँसती रही तक़दीर किसी की॥

बाहर के मुशायरों मे भी अपने उस्ताद साहब के साथ पटना, गया, आरा, मैनपुरी, लखनऊ आदि आदि के मुशायरों में शरीक होने का बिसमिल साहब को सौभाग्य प्राप्त हुआ। नूह साहब की आज्ञा से ग्वालियार, इटावा, कानपुर, बनारस, जौन-

पुर, बलरामपुर, लाहौर आदि के बड़े-बड़े मुशायरों मे बिसमिल साहब अकेले सम्मिलित होते रहे। स्वर्गीय ख़ान बहादुर अब्दुल बाक़ीख़ाँ की देख-रेख में एक मुशायरा ईद के दिन स्थानीय बलुआघाट राजा बनारस की कोठी में हुआ। बिसमिल साहब भी इस मुशायरे में सम्मिलित हुए। यहाँ इनकी कविता बड़ी सफल रही। संयोग से रायसाहब लाला शिवचरनलाल रईस जो उस समय म्युनिसीपल बोर्ड के चेअरमैन थे, इस मुशायरे में पधारे थे, उनको बिसमिल साहब की कविता बहुत पसन्द आई और मुशायरा समाप्त होने के बाद बिसमिल साहब से ख़ुद मिले और बहुत प्रशंसा के बाद अपनी कोठी पर निमन्त्रित किया। रायसाहब को भी शायरी का शौक़ था। बड़े इल्म-दोस्त थे। दूसरे दिन सुबह को बिसमिल साहब उनकी कोठी पर गये, जो ग़ज़ल इन्होंने ईद के मुशायरे में पढ़ी थी, उसको रायसाहब ने फिर दोबारा सुनी और बड़ी प्रशंसा की और इस शैर को कई बार पढ़वाया।

आईना देखने को शौक से देखो लेकिन।
अपनी सूरत न कही देख के हैराँ होना॥

राय साहब इनके पूज्य पिता मुं० बिश्वेश्वरदयाल के दोस्त थे। जब यह मालूम हुआ कि बिसमिल साहब उनके पुत्र हैं तो और भी खुश हुए। इनकी बेकारी का हाल जान कर उसी समय एक पत्र डिप्टी बेनीप्रसाद मिश्र, जो उस ज़माने

मे म्युनिसिल बोर्ड इलाहाबाद के एक्ज़िक्यूटिव अफ़सर थे, उनके नाम लिखा। यह पत्र बिसमिल साहब एक्ज़िक्यूटिव अफ़सर साहब के पास ले कर गये। उन्होंने पत्र पढ़ते ही दफ़्तर मे काम करने की आज्ञा दी। उस ज़माने से अब तक बिसमिल साहब उसी दफ़्तर में काम कर रहे है और आजकल पेशकारी के ओहदे पर है। मौजूदह चैयरमैन बाबू कामताप्रसाद साहब कक्कड़ और पण्डित ब्रजमोहन साहब व्यास एक्ज़िक्यूटिव अफ़सर बिसमिल साहब पर बडी कृपादृष्टि रखते हैं और अकसर मुशायरों मे जो इनके इन्तजाम से होते हैं यह लोग सम्मिलित होते हैं और इनकी कविता सुन कर बडा आनन्द उठाते हैं। बिसमिल साहब ने अपने इन्तज़ाम से कई मुशायरे इलाहाबाद में किये और वह मुशायरे जो राय धनवन्तनारायन साहब चड्ढा के भगवत बाग़ में हुए, अपने ढंग के निराले और अनोखे थे। इन मुशायरो मे ग्वालियार, कानपुर, लखनऊ, रायबरेली वगैरह के कविगण सम्मिलित होते थे। अच्छे अच्छे स्थानीय कवि भी निमत्रित किये जाते थे। राय धनवन्तनारायन साहब इन मुशायरों को सफल बनाने में बडा भाग लेते थे। बिसमिल साहब अपने उस्ताद के बड़े भक्त हैं, यहाँ तक कि जब किसी मुशायरे मे कविता पढ़ते है तब अपने उस्ताद की शान में एक रूबाई ज़रूर पढ़ते हैं। उन्ही के सभापतित्व मे ये मुशायरे होते थे। कल्याणी देवी क्लब इलाहाबाद के मुशायरे भी इन्हीं की देख-भाल मे होते थे। बाबू गयाप्रसाद साहब एम० ए०

प्रोफ़ेसर कायस्थपाठशाला और मैं इस क्लब के मुशायरे के सेक्रेटरी रहते थे। इन मुशायरो की भी सफलता बिसमिल साहब के ही दम से होती थी। कायस्थपाठशाला इलाहाबाद के भी मुशायरे जिसके सेक्रेटरी बाबू रघुराजप्रसाद साहब रईस बलरामपुर जो यहाँ कालेज में शिक्षा पाते थे, होते थे। कायस्थ पाठशाला के भी मुशायरे बिसमिल साहब ही के दम से कामयाब होते थे। बिसमिल साहब ने इतने मुशायरो के इन्तज़ाम करने से मुशायरों को सफल बनाने का बड़ा तजरुबा हासिल किया है, कवियों की सूची बनाने में तो कमाल ही है।

मुशायरे की सफलता कवियों की सूची पर निर्भर है। भगवत बाग़ के मुशायरे मे इनके उस्ताद नूह साहब ने यह एक रुबाई इनके लिये पढ़ी थी। देखने वाले देखे कि उस्ताद और शागिर्द में कितना प्रेम है। दूसरे शायरों को इससे सबक़ लेना चाहिए।

मै दादे सखुन सब से सिवा देता हूँ।
इनआम ज़माने से जुदा देता हूँ॥
अल्लाह करे खुश रहे आबाद रहें।
ऐ 'नूह' यह 'बिसमिल' को दुआ देता हूँ॥

उर्दू-हिन्दी पत्रों में बिसमिल साहब की कवितायें धड़ल्ले के साथ प्रकाशित हो रही है। ऐसा कोई ही पत्र होगा जिस मे इनकी कविता न प्रकाशित हुई हो। हर तरफ़ से इनकी

कविता की माँग आती है। बिसमिल साहब इतना ज़्यादा लिखते हैं कि लोग आश्चर्य करते हैं। रसिक, राष्ट्रिय और सामाजिक कवितायें तो हद से ज्यादह इन्होंने लिखी हैं। बिसमिल साहब लिखते भी ख़ूब है और पढ़ते भी ख़ूब हैं।

पूज्य पंडित कृष्णकान्तजी मालवीय जिनका बिसमिल साहब बहुत आदर करते हैं उनके कहने से इन्होंने व्यंग्य कविता का लिखना प्रारंभ किया। स्वर्गीय महाकवि 'अक़बर' इलहाबादी के बताये हुए पथ पर चलने की कोशिश की। महाकवि 'अकबर' व्यंग्य कविता के बादशाह माने जाते है। और सच तो यह है कि ज़मीन और आसमान मिल जाय मगर अब महाकवि 'अकबर' जैसा व्यंग्य लिखने वाला संसार मे पैदा ही नही हो सकता। पूज्य कृष्णकान्त मालवीय ने महाकवि अकबर की कविताओं का एक संग्रह इनको अध्ययन करने के लिए दिया। व्यंग्य कविता लिखने में पूज्य पण्डितजी ने इनका बहुत कुछ दिल बढ़ाया। इसको बिसमिल साहब जानते हैं, दूसरा नही जान सकता। स्वर्गीय पंडित ईश्वरीप्रसादजी शर्म्मा संपादक 'हिन्दूपंच' पर 'बिसमिल' साहब को व्यंग्य कविताओं का इतना अच्छा असर पड़ा, कि उन्होंने पंच के लिए विशेष रूप से विजय अङ्क के लिए व्यंग्य कविताये माँगी। इन्होने व्यंग्य कवितायें शर्माजी के पास पंच के लिए भेजी जिस के जवाब में स्वर्गीय शर्माजी ने एक पत्र २८ सितम्बर सन् १९२६ई० को लिखा कि "आप का पत्र और

कवितायें मिली। धन्यवाद। इन्हें विजय अंक में ज़रूर छापूँगा। आप को जब अवकाश हो तब हमारे लिये कविता लिखा करें। आपका 'पञ्च' पर प्रेम रहे, यही बहुत है। आपकी कवितायें 'अकबर' की याद दिलाती हैं। आपको उनका आसन मिलने में विलम्ब नहीं। मैं आपकी रचनायें बड़े प्रेम से पढ़ता हूँ।"

जज़्बाते बिसमिल (पहिला भाग) की समालोचना करते हुए 'मतवाला' अपने ७ मई सन् १९२७ ई० के अंक मे लिखता है कि 'बिसमिल' साहब स्वर्गीय महाकवि 'अकबर' के रग में हास्यरस की कवितायें भी अच्छी लिखते है।" इसी तरह कई उर्दू, हिन्दी पत्र के सम्पादकों ने बिसमिल साहब की व्यग्य रचना की प्रशसा की है। कुछ लोगों को जो छोटी तबियत और विचित्र प्रकृति के हैं, यह भ्रम होगया है कि बिसमिल साहब स्वर्गीय महाकवि अकबर के मुक़ाबले मे कविता लिखने का साहस करते है, यह सरासर ग़लत है। कहाँ महाकवि 'अकबर' और कहाँ बिसमिल ? सूर्य और कण की क्या तुलना हो सकती है ? हाँ यह जरूर देखने की बात है कि बिसमिल साहब ने दो-चार बरस में महाकवि 'अकबर' के बताये हुए पथ पर चल कर कितनी सफलता प्राप्त की है। बिसमिल साहब अपने को व्यंग्य कविता लिखने में महाकवि 'अकबर' के पाँव की धूल समझते है। मालूम नहीं क्यों ये छोटी तबियत वाले इनकी व्यंग्य कविता पर रुष्ट हैं। इनको ऐसे विचित्र प्रकृति वालों की परवा न करनी चाहिए और अपने काम से काम रखना चाहिए। अगर

इन ओछी तबियत वालों को इनकी व्यंग्य कवितायें पसन्द नहीं आती, तो वह न पढ़ें और क्या कहा जाय ? बात यह है कि साहित्य-सेवा करने में रोड़ा अटकाने वाले बहुत लोग मिल जाते है। इस गये गुज़रे जमाने में बिसमिल साहब का दम ग़नीमत है।

जब चुनाव का ज़माना था और 'अभ्युदय' दैनिक निकल रहा था तब बिसमिल साहब की कवितायें उसमें क़रीब-क़रीब हर अंक मे प्रकाशित होती थी। पण्डित बनारसीदासजी चतुर्वेदी से जो अभ्युदय के सम्पादन-विभाग मे थे, महामना पं० मदनमोहन मालवीय ने इनकी अभ्युदय में रोज़ इतनी कवितायें छपते हुए देख कर इनके बारे मे पूछा। पूज्य चतुर्वेदीजी के साथ ये महामना मालवीयजी की सेवा में गये। महामना मालवीय जी ने बिसमिल साहब की बहुत प्रशंसा की और कहा कि आपकी रचनायें 'अभ्युदय' मे बराबर पढ़ता हूँ और सबसे ज़्यादह आश्चर्य की बात यह यह है आप इतना किस तरह लिखते हैं ? बिसमिल साहब को महामना मालवीयजी ने बहुत कुछ आशीर्वाद दिया। बिसमिल साहब की कविताएँ बड़े-बडे लेखक नाटकों, उपन्यासो, कहानियो, रीडरों और अन्य संग्रहों में लेने लगे है। श्रीयुत प्रेमचन्द्रजीने 'कर्बला' में आपकी एक कविता ली है। कुछ कवितायें संगीत-प्रेमियों ने रिकार्ड मे गाकर भरी है।

अब यह दूसरा संग्रह इन कविताओं का कवितापेमियो के

सामने रक्खा जाता है। वे इसे देखें, जाचें परखे, और आनन्द उठाये। कविता आनन्द ही उठाने के लिए होती है। इस सग्रह में बहुत सी अप्रकाशित कविताये है जिनको इन्होंने बडे-बड़े मुशायरो मे पढ़ा है। मुज़फ़्फ़रपुर के साहित्य सम्मेलन मे पूज्य पं० पद्मसिहजी शर्मा ने सभापति के भाषण में भी 'बिसमिल' का ज़िक्र करते हुए कहा था कि यह कवि नही परन्तु महाकवि है। 'बिसमिल' साहब की कविताये बहुत सरल भाषा में भाव-पूर्ण होती हैं जिसको सब लोग आसानी से समझ सकते है उनकी सफलता का मुख्य कारण यही है। बड़ा से बड़ी बात को वह सीधे साधे शब्दों में अदा कर देते है। 'बिसमिल साहब मिलनसार, और हँस-मुख आदमी है। तीसरा भाग भी बहुत जल्द प्रकाशित होने वाला है। आशा है कि कविता-प्रेमी इस दूसरे भाग को ज़रूर पसन्द करेंगे।

कलामे 'बिसमिले' रंगीं बयाँ देखा नहीं तुमने।
अगर भूले से भी पढ़ लो तो पढ़कर शाद हो जाओ॥

देवानन्दपुर (रायबरेली)
२० मार्च सन् ३०

हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
'ज़या' बी० ए०

कविता-प्रेमियों से



कविता सरस्वतीदेवी का प्रसाद है। मैं भी उसके एक सेवको में हूँ। उसकी कृपा का फल-स्वरूप 'जज़बाते बिसमिल' का पहला भाग मैं कविता-प्रेमियों की सेवा में समर्पण कर चुका हूँ। अब यह उसका दूसरा भाग आप लोगो की सेवा में रखता हूँ। इस भाग में रसिक, राष्ट्रोय, सामाजिक और व्यग्य सभी तरह की कवितायें है। ऐसी भी कविताएं हैं जो पत्रों में प्रकाशित नहीं हुई हैं। यह सग्रह कैसा है ? और इसमें कैसी कविताएँ है ? इसको मैं नहीं परख सकता। मैं इसका जौहरी नही हूँ। मैंने तो हर एक मे अपना दिल निचोड़ कर रख दिया है। कविता-प्रेमी इसके परखने वाले है। वह इसको परख सकते हैं। आशा है कि कविता-प्रेमी इस भाग को भी पहले भाग की तरह अपनाएँगे, जिससे मेरा उत्साह बढ़े और मैं तीसरा भाग शीघ्र ही प्रकाशित करूँ।

हाँ एक ज़रूरी बात तो रही जाती है, वह यह कि पूज्य प० पद्मसिंहजी शर्मा ने भूमिका लिख कर मुझ ऐसे नाचीज़

पर बड़ा एहसान किया है। समय न मिलने पर भी शर्माजी ने मेरे लिए ख़ास तौर से समय निकाल कर भूमिका लिखने का कष्ट उठाया है। इसका मैं बड़ा एहसानमन्द हूँ। मुझे अच्छी तरह मालूम हुआ है कि कुछ तङ्ग दिल असहाब ने शर्माजी को इस संग्रह का भूमिका लिखने से बाज़ रखना चाहा था मगर शर्माजी ने ऐसों की एक भी न सुनी और भूमिका लिख दी।

इस संग्रह के बारे मे मुझे इतना ही निवेदन करना है कि मेरी चीज़ थी, मैंने उसे सर्वसाधारण को दे दी; अब हरएक अपनी-अपनी रुचि के मुताबिक़ उसका आनन्द ले। यह वह आईना है, जिसमें देखने वाला जिस रूप से देखेगा, वैसा ही दिखाई पड़ेगा।

अहबाब की आँखों में है रहने वाले।
आँसू न समझिये कि है बहने वाले॥
हम ज़र्र-ए ना चीज़ है लेकिन 'बिसमिल'।
ख़ुरशीद हमें कहते है कहने वाले॥

'सुखनिवास',
अहियापूर, प्रयाग।
१५ मार्च, सन् ३०

सत्कवियों का दास
'बिसमिल'

  

शृङ्गार

जज़्बाते बिसमिल
(दूसरा भाग)

(१)

हमारे सामने तुझको कभी तो आना था

किसी तरह न किसी से भी दिल लगाना था।
ख़याले यार में दुनिया को भूल जाना था॥
जो बे रुख़ी थी यही रुख़ यूँही छुपाना था।
मेरे ख़याल मे भी आपको न आना था॥
कहेगी क्या उन्हें दुनिया ज़रूर आना था।
दमे अख़ीर हमें आ के देख जाना था॥
इसी सबब से वह परदे में छुप के बैठे हैं।
कि पर्दे पर्दे में कुछ उनको रङ्ग लाना था॥

अजल(१) से रूह जो फूँकी गई है ज़र्रों में।
तो यह समझ लो कि जलवा(२) उसे दिखाना था॥
ज़माना खिँच के पहुँचता है अपने मरकज(३) पर।
ज़रूर दायरये ज़िन्दगी मे आना था॥
किसी को ढूँढ निकालेंगे ढूँढने वाले।
यह शक्ल थी तो न जलवा कभी छुपाना था॥
मिले है इसलिए आपस में ख़ाक के ज़र्रे।
नया नया इन्हे हर रोज रूप लाना था॥
अज़ल के रोज़ से परदे में बैठने वाले।
हमारे सामने तुझको कभी तो आना था॥
गुलों का नाम हुआ बाग़े हुस्न मे लेकिन।
हर एक रङ्ग से जलवा उसे दिखाना था॥
ज़ेहे(४) नसीब कि मर कर मिले मरातिबे(५) इश्क़।
मुझे तो हेच मेरी ज़िदगी ने जाना था॥
नेहॉ है ख़ाक के ज़र्रों मे जलवये क़ुदरत।
बशर बना कर उसे अपने को दिखाना था॥
मिली है दादे(६) सखुन "लखनऊ" मे ऐ "बिसमिल"।
वतन से दूर मुबारक हमारा आना था॥

१—आदि। २—चमत्कार। ३—शिखर। ४—भाग्यवान्। ५ पद। ६—कविता की वाहवाही।

(२)

कुछ समझ बूझ के दावा करो यकताई का

याद आता है समाँ मुझको .खुद(१) आराई का,
चांदनी रात मे आलम तेरी अंगड़ाई का।
आइना आइना(२) रूयो को ये देता है सबक़,
कुछ समझ बूझ के दावा करो यकताई का॥
और भी जोश बढ़ा हो गईं मौजें बे ताब,
अक्स दरिया में पडा जब तेरी अंगड़ाई का।
मेरे दिल में मेरी आँखो मे है तेरी शक्लें,
जेब देता नहीं दावा तुझे यकताई का॥
दिल की दुनिया अभी हो जायगी दर हम बर हम(३),
क़हर ढा जायगा आलम तेरी अंगडाई का।
मैं क़फ़स(४) मे हूँ गुलिस्ताँ(५) मे खिजाँ हो कि बहार,
जिक्र मुझसे न करे कोई गई आई का॥
चश्मे(६) मुशताक़(७) में रह रह के खिंचा करता है,
वही आलम वही नक़्शा तेरी अंगडाई का।
शौक कहता है कि दो इश्क मे तुम जान अपनी,
दिल यह कहता है रहे पास(८) भी रुसवाई का॥

१—सिंगार करना। २—आइने की तरह जिसका चेहरा हो। ३—तितरबितर। ४—पिंजरा। ५—बाग़। ६—आँख। ७—देखने वाले। ८—ध्यान।

दिल हुआ ज़ेरो जबर आह भी हम कर न सके,
रह गए देख के नक्शा तेरी अंगडाई का।
जब से जलवा सरे दीवार नजर आया है,
आस्माँ पर है दमाग़ उनके तमाशाई का॥
हाथ उठना था कि दुनिया मे ज़िया(१) फैल गई
बन गया एक फ़िसाना(२) तेरी अंगडाई का।
हजरते "नूह"(३)के शागिर्द जो हम हैं "बिसमिल"
क्यों हमे ध्यान न हो मार्का आराई का॥

---

(३)

जिसको दुनिया ने कहा क़ातिल वह क़ातिल हो गया

इश्क़ो उल्फ़त(४) में मेरा दिल आपका दिल हो गया,
मुझको जीना और मरना दोनों मुशकिल हो गया।
वसअते दुनियाये दर्दो गम मे कामिल(५) हो गया,
बढ़ते बढ़ते एक क़तरा ख़ून का दिल हो गया॥
रूह क्या निकली ग़मे दुनिया से फ़ुरसत मिल गई,
मरने वाले का जो मतलब था वह हासिल होगया।

१—ज्योति। २—क़िस्सा। ३—मेरे काव्य गुरू नाख़ुदाये सख़ुन हज़रतनूह नारवी। ४—प्रेम। ५—पूर्ण।

एक के कहने से तो मिलता नही ऐसा लक़ब(१),
जिसको दुनिया ने कहा।क़ातिल वह क़ातिल होगया॥
ज़िन्दगी जब तक रही आफ़त रही ज़हमत रही,
मौत मुझको आगई आराम हासिल हो गया।
आशियाँ(२) छूटा न छूटा गर्दिशें क़िसमत का साथ,
लो क़फ़स में भी ठहरना मुझको मुशकिल होगया॥
जिस जगह "बिसमिल" गए रौनक़ वही की बढ गई,
देखिये क्या था अभी क्या रगे महफ़िल हो गया॥

---

(४)

एक ही झोके में घर उड़ जायगा सैयाद का

है ख़याल आज़ाद रह कर भी वही बेदाद(३) का।
बाग़ से मुझको नजर आता है घर सैयाद का॥
हौसला इससे बढ़ा और उस सितम(४) ईजाद का।
टुकड़े टुकड़े जब हुआ दामन मेरी फ़रियाद का॥
हम सफ़ीरो(५) मेरो आहों की हवा बंधने तो दो।
एक ही झोंके में घर उड़ जायगा सैयाद का॥
ख़ाक होकर हम तने खाकी पर इतराते हैं क्यो।
ख़ाक़ है तो क्या भरोसा ख़ाक़ बे बुनियाद का॥

१—उपाधि। २—घोसला। ३—अत्याचार। ४—अत्याचारी।
५—साथी।

उस घड़ी क्या इश्क की दुनिया में हलचल मच गई।
सामना दिल ने किया जब नावके बेदाद का।
पूछती है क्या पता सब से .फुग़ाने(१) अन्दलीब(२)।
चांद सूरज की तरह रौशन है घर सैयाद का॥
मुझसे ऐ "बिसमिल" करै कोई न उस्तादी की बात।
देखने वाला हूँ मै भी "नूह" से उस्ताद का॥

---

(५)

हमारे दिल की दुनिया में न बैठो बे खबर होकर

पलट आते हैं नाले मेरे मायूसे(३) असर होकर।
यहाँ होकर वहाँ होकर इधर होकर उधर होकर॥
मरीज़े गम की बाली(४) से तुम्हारा उठके चल देना।
हुआ मशहूरे आलम यह भी मरने की ख़बर होकर॥
हमें ऐ शौक़े मर्ग(५) अब इसको चलकर आज़माना है।
.खुदा के घर पहुँच जाते है, क्योंकर उनके घर होकर॥
ये मेरा दिल है ऐ सैयाद यह मेरा कलेजा है।
कि देता हूँ दुआयें तुझको मैं बे बालो पर होकर॥
वह ग़फ़लत ही मेरी अच्छी थी मेरी होशियारी से।
बला में फँस गया मैं बे ख़बर से बा ख़बर होकर।

१—शोर। २—बुलबुल। ३—हताश। ४—सिरहाना। ५—मरना।

इधर होकर तो मुझपर दिल ने लाखों आफ़तें ढाईं।
ख़ुदा जाने करे क्या क्या सितम(१) अब यह उधर होकर॥
यह समझो दाग़े हसरत क्या है नक़्शे आरज़ू क्या है।
हमारे दिल की दुनिया में न बैठो बे ख़बर हो कर।
तड़पना लोटना ही रात दिन का तेरे हाथ आया।
मिला क्या तुझको "बिसमिल" बिसमि़ले(२) तेग़े(३) नजर होकर॥

---

(६)

आप भी उस दिल से मिलिए
मिलते हैं जिस दिल से हम

इसको देंगे ग़म उठाने के लिए मुशकिल से हम,
दिल न होगा तो तुम्हें चाहेंगे फिर किस दिल से हम।
वह हमे उठवा चुके अब उठ चुके महफिल से हम,
आप जिस मुशकिल से जायेंगे उसी मुशकिल से हम॥
दिल नहीं मिलता जो दिल से तो यह मिलना कुछ नही,
आप भी उस दिल से मिलिए मिलते हैं जिस दिल से हम।
दिल नही तो अब है दिल की आरज़ू दिल का ख़याल,
फँस गए दो मुशकिलो मे छुट कर एक मुशकिल से हम॥
आप की महफ़िल से उठने का नतीजा यह हुआ,
तंग आकर उठ गए दुनिया कि भी महफ़िल से हम।

१—अत्याचार। २—विह्वल। ३—तलवार।

दिल से वह बातें किसी के दिल की जब सुनते नही,
उनसे हाले दिल कहें भी तो कहें किस दिल से हम ॥
तेरी नजरो मे नहीं सैयाद(१) क़द्रे आशियाँ(२)
कर सके हैं जमआ यह तिनके बड़ी मुशकिल से हम ।
जादये(३) उलफ़त मे क्या क्या शौक ने चक्कर दिये,
थी कहाँ मंज़िल निकल आए कहाँ मंजिल से हम ॥
देखने मे चार तिनकों के सिवा कुछ भी नही,
अपने होते आशियाँ को फूँक दें किस दिल से हम ।
जोश में आकर कोई क़ातिल यह कह दे तो सही,
कुछ भी हो लेकिन मिलेंगे हज़रते "बिसमिल" से हम ॥

---

(७)

ऐसी वैसी हमारी आह नहीं

वह मुहब्बत नही वह चाह नही,
अब मेरी उन से रस्मो राह नही ।
वही आराम से है दुनिया में,
जिसके दिल पर तेरी निगाह नही ॥
तुम निबाहो अगर तो निभ जाये
न निबाहो तो फिर निबाह नही ।

१—बहेलिया । २—घोंसला ३—प्रेम-मार्ग ।

(६)

दिल नहीं जिसका चाह से वाक़िफ़,
कही दुनिया में उसकी चाह नहीं ॥
हश्र(१) में मुझको नाज़ है इसका,
कम किसी से मेरे गुनाह नहीं।
तेरा जलवा कहाँ नही मौजूद,
किस जगह तेरी जलवागाह(२) नहीं ॥
तू न दुनिया में दे पनाह जिसे,
हश्र में भी उसे पनाह नही।
दिल हिला देगी सुननेवालों का,
एसी वैसी हमारी आह नही ॥
दिल तो है बादशाह ऐ "बिसमिल"।
ग़म नही हम जो बादशाह नहीं ॥

---

(८)

अब हमारे दिल में कोई हौसला बाक़ी नहीं

कोई हसरत और कोई हौसला बाक़ी नही,
मिट गया अब दिल तो दिल का बलबला(३) बाक़ी नही।
चाक दामन हो गया टुकडे ग़रेबाँ हो गया,
अब जुनूं(४) के वास्ते कुछ मशग़ला(५) बाकी नही ॥

१—प्रलय। २—प्रकाश-गृह। ३—उमंग। ४—पागलपन।
५—धन्धा।

वह मेरी बालीं(१) पे आ जायँ उन्हें मै देख लूं,
मरते दम अब और कोई हौसला बाक़ी नहीं।
सो रहा हूँ जान दे कर क़ब्र में राहत(२) के साथ,
अब तो कोई ज़िन्दगी का मरहला(३) बाक़ी नही॥
जिस क़दर अहबाब थे वह रफ़ः रफ़ः उठ गए,
दिल बहलने का कहीं अब मशग़ला बाक़ी नही।
हज़रते "बिसमिल" जो सच पूछो तो मरने के सिवा,
अब हमारे दिल में कोई हौसला बाक़ी नहीं॥

---

(९)

दिल सलामत है तो आहों से असर दूर नहीं

भूल कर आह भी करनी मुझे मंजूर नहीं,
यह मुहब्बत का तरीक़ा नहीं दस्तूर नही।
जान दे दूं जो मुहब्बत में तो कुछ दूर नही,
मरना मन्ज़ूर है जीना मुझे मंज़ूर नही।
क्या कहा फिर कहो मिलना हमें मन्ज़ूर नही,
दिल सलामत है तो आहों से असर दूर नही।
जलवये होश रुबा(४) के लिए आँखें भी तो हों,
दूर हम जिसको है समझे हुए वह दूर नही।

१—सिरहाना। २—आराम। ३—मंज़िल। ४—होश ले जानेवाले।

खाक़ में क्यों नहीं तुम इनको मिला देते हो,
मिलने वालों से जो मिलना तुम्हे मंज़ूर नही।
कल तो कहते थे कि हम मिलने पर आमादा है,
आज कहते हो कि मिलना हमे मंज़ूर नही।
अश्क पुर(१) ख़ूं मेरी आखों से बहा करते है,
फिर भी तुम कहते हो दिल में कोई नासूर नहीं।
क्या लगाऊँ किसी क़ातिल से दिल अपना "बिसमिल"
इश्क़ो उलफ़त मे तड़पना मुझे मंज़ूर नहीं।

---

(१०)

दिल तो है पहलू में सबके लेकिन ऐसा दिल कहाँ

मिट गया दाग़े जिगर वह रगो बूये दिल कहाँ,
बुझ गई जब शमश्रा(२) तो फिर रौनक़े महफ़िल कहाँ।
हम तेरे दर से चले आए तो ज़ाहिर हो गया,
जिन्दगी आसाँ कहाँ है जिन्दगी मुशकिल कहाँ॥
दिल से अहले(३) दिल यह कहते थे मेरा दिल देख कर,
दिल है तो पहलू में सब के लेकिन ऐसा दिल कहाँ।
मरनेवाले को जो हसरत जल्द मर जाने की हो,
पूछले ख़ुद मौत से है कूचये क़ातिल कहाँ॥

१—ख़ून के आँसू। २—दीपक। ३—दिल वाले।

उनका दिल मिल जाय मेरे दिल से यह दुशवार है,
आज तक मिलते हुए देखे किसी ने दिल कहाँ।
कल तो यों बे ख़ुद न थे, बे दिल न थे बे दम न थे,
आज बिसमिल हो गए तुम हज़रते "बिसमिल" कहाँ॥

---

(११)

उसका मिल जाना कोई मुशकिल नहीं

कोई हाले ज़ार(१) में शामिल नही,
आज अपना दिल भी अपना दिल नही।
यह किसी लायक़ किसी क़ाबिल नहीं,
पहले दिल दिल था मगर अब दिल नही॥
रहरवे(२) उल्फत सम्हल कर राह चल,
अब तेरी मंजिल कई मंजिल नही।
पहले अपने को तो हम करलें तलाश,
उसका मिल जाना कोई मुशकिल नही॥
दिल जिसे कहते थे पहले अहले दिल,
अब वह क़तरा है लहू का दिल नही।
एक दुनिया कहती है क़ातिल तुम्हें,
और तुम कहते हो हम क़ातिल नही॥

१—कुसमय। २—पथिक।

ध्यान है दोनों को अपनी बात का,
आज या हसरत नहीं या दिल नहीं।
रूह का जाना बहुत आसान है,
मौत का आना कोई मुशकिल नहीं॥
ऐसे जीने से तो मरना ख़ूब है,
ज़िन्दगी का लुत्फ़, अगर हासिल नहीं।
अब मेरा इन्साफ़ हो ही जायगा,
हश्र(१) है यह आपकी महफ़िल नहीं॥
मौत ही के ग़म मे हम मरते रहें,
ज़िन्दगी का और कुछ हासिल नहीं।
तेरे घर में तेरी बज़्मे(२) नाज में,
और सब है हज़रते "बिसमिल" नहीं॥

---

(१२)

तुम नहीं तक़दीर में तो कुछ नहीं तक़दीर में

ऐ जुनूँ ठहरूँगा मैं क्या ख़ानये ज़ंजीर में,
पाँव में चक्कर है गर्दिश है मेरी तक़दीर में।
सिलसिला ज़ुल्फे मुसलसल(३) का तुम्हारी यों बढ़ा,
हम तो क्या जकडी गई दुनिया इसी ज़ंजीर में।

१—प्रलय। २—महफ़िल। ३—सिलसिलेवार।

तुम हो जब तक़दीर में तकदीर भी तक़दीर है,
    तुम नहीं तक़दीर में तो कुछ नहीं तक़दीर में।
कुछ कहे भी कुछ सुने भी कुछ मिले फिर कुछ खिंचे,
    इतनी बातें जब नही तो लुत्फ़ क्या तसवीर में।
ज़िन्दगी का नाम आया बाद को रोज़े अज़ल(१),
    सबसे पहले मौत ही लिक्खी गई तक़दीर में।
नाम उसका दिल है दिल कहते हैं उसको अह्ले दिल,
    ख़ून का क़तरा जो है पैवस्त(२) नौके तीर मे।
सब की किस्मत में लिखी है मौत अपने वक़्त पर,
    और है बे वक़्त मर जाना मेरी तक़दीर में।
शौक़ से बढ़कर कदमबोसी(३) को सब कड़ियाँ झुकी,
    मैंने रक्खा पाँव जिस दम खानये ज़ंजीर मे।
जिसने जल मरना पतिंगे के मुक़द्दर(४) में लिखा,
    उसने रोना भी लिखा है शमआ(५) की तक़दीर मे।
आपही से तो ज़माने भर के हैं नक्शो निगार,
    आप क्यो बैठे है छुप कर परदये तसवीर मे।
आता है 'प्रयाग' से 'काशी' जो 'बिसमिल' बार बार,
    लिख गया दर्शन बुतों का क्या तेरी तक़दीर मे।

१—आदि। २—मिला हुआ। ३—पाँव चूमना। ४—भाग्य। ५—दीपक।

(१३)

जीने को ग़नीमत समझे थे
जीने में मगर आराम नहीं ।

अफ़लाक(१) की गर्दिश से दम भर दुनिया मे हमे आराम नही,
वह दिन नही वह अब रात नही वह सुबह नही वह शाम नही ।
आज़ारो(२) जफ़ाये(३) पैहम(४) से उलझन मे जिन्हें आराम नही,
वह जीते है लेकिन उनको मरने के सिवा कुछ काम नहीं ।
गुल्शन(५) मे ख़िज़ाँ अब आपहुँची मयखाने(६) में जी क्योंकर बहले
वह रग नही वह लुत्फ़ नही वह दौर नही वह जाम नहीं ।
इसका भी अलम उसका भी क़लक़ यह ग़म भी हमे वह ग़म भी हमे,
जीने को ग़नीमन समझे थे जीने मे मगर आराम नहीं ।
क्यो हमने मुहब्बत की उनसे दिक्कत मे फॅसे ज़हमत मे फँसे,
आगाज़(७) ही में दिल कहता था अच्छा इसका अंजाम(८) नहीं ।
हर साँस से आतो है ये सदा मरने के लिए तैयार रहो,
जीने से नहीं कुछ दिलचस्पी जोने से हमें कुछ काम नही ।
क़ातिल को यह समझा दे कोई नाले से .फ़ुग़ाॅ से शेवन(९) से,
बिसमिल न करूँ मै ऐ 'बिसमिल' तो बिसमिल मेरा नाम नही ।

१—आकाश । २—दुःख । ३—.ज़ुल्म । ४—बार बार । ५—बाग़ ।
६—हौली । ७—शुरू । ८—नतीजा । ९—कराहना ।

(१४)

जो तुम रखते हो मुशकिल में
तो मैं रहता हूँ मुशकिल में।

अरे सैय्याद इस पर ग़ौर कर अच्छी तरह दिल में,
न होता आशियाँ(१) तो हम न फँसते आज मुशकिल में।
फँसेगी रूह जहमत में पड़ेगी जान मुशकिल में,
तुम्हारा तीरे नाज़ अब करवटें लेने लगा दिल में।
यह क्या है बदगुमानी मेरे हाले ज़ार पर दिल में,
जो तुम रखते हो मुशकिल में तो मैं रहता हूँ मुशकिल मे।
बुलाती है क़ज़ा यह कह के जाँबाजे(२) मुहब्बत को,
जिसे बेमौत मरना हो वह आए कूये(३) क़ातिल मे।
दमे आख़िर अजब। आलम रहा बीमारे उलफ़त का,
तुम्हारी शक्ल आँखों में तुम्हारी याद थी दिल में।
उधर वह आइना रू आइने मे महवेज़ीनत(४) है,
इधर बैठा है दिल थामे हुए चुप कोई महफ़िल मे।
अभी मशहूर हरसू हो रही हैं ख़ूबियाँ(५) इसकी,
कभी दुनिया निकालेगी हजारो ऐब "विसमिल" में।

१—घोंसला। २—जान पर खेलनेवाला। ३—गली। ४—शृङ्गार मुग्ध। ५—अच्छाई।

(१५)

ज़माना याद करेगा किसी ज़माने में

(एक क़ाफ़िया)

वफ़ा में हम हैं वह कामिल है ज़ुल्म ढाने में,
यह बात फैल गई हर तरफ़ ज़माने में।
फ़ुज़ूल सर्फ़ किया वक़्त आने जाने में,
हमारी सैर न पूरी हुई ज़माने में।
यह क्या ग़ज़ब है कही वह नजर नही आता,
निगाहें ढूँढ़ रही है उसे ज़माने में।
अभी तो मेरी वफ़ाओं की क़द्र ख़ाक नहीं,
ज़माना याद करेगा किसी जमाने मे।
किसो को क़त्ल किसी को हलाक कर डाला,
वह चाहते है हमी हम रहें ज़माने में।
जमाने भर में तो है उसके हुस्न का चर्चा,
किसी ने शक्ल न देखी मगर ज़माने में।
करो जो ग़ौर तो दिलही जलीलो ख़्वार नही
निगाहे नाज़ भी बदनाम है ज़माने में।
हज़ार बार जिये हम हजार बार मरे,
ज़िन्दगी थी कोई जिन्दगी जमाने में।
ख़ुद उनको चाहनेवालों की आरज़ू होगी,
अगर बदल गई दुनिया किसी ज़माने में।

मेरी निगाह से देखे वह तेरी आँखों को,
दिखा रही है जो आँखें मुझे ज़माने मे।
नज़र न आओ किसीको तो है नजर का कुसूर,
हजार शक्ल से जाहिर हो तुम जमाने में।
किसी को नाज किसी को है रश्क(१) ऐ 'बिसमिल'
कि इतने होगये मशहूर हम जमाने मे।

---

(१९)

जो तुम मुझको सताते हो तो मैं फ़रियाद करता हूँ

यही बस बैठते उठते दिले नाशाद करता हूँ,
कि हूँ मजबूर जीने से कज़ा को याद करता हूँ।
वहाँ होते हो बस तुम दूसरा कोई नही होता,
तमन्नाओं(२) की दुनिया मे जहाँ आबाद करता हूँ।
ज़रा इन्साफ़ से लो काम क्या इसमे ख़ता मेरी,
जो तुम मुझको सताते हो तो मै फ़रियाद करता हूँ।
ज़माना जानता है भूल जाता हूँ ज़माने को,
तुम्हे अच्छी तरह जब दिल ही दिल मे याद करता हूँ।
फ़ना(३) के बाद आना फ़ातहा को मेरी तुरबत(४) पर,
तुम्हारे वास्ते मै ज़िन्दगी बरबाद करता हूँ।

१—डाह। २—इच्छाओं। ३—नाश हो जाना। ४—कब्र।

असर हो ही नही सकता किसी के दर्द बे दिल पर,
ये मैं बेकार आहो नालओ फ़रियाद करता हूँ।
वही चरख़ो(१) सितमगर ताक कर बिजली गिराता है,
नशेमन(२) शाख़े गुल पर मै जहाँ आबाद करता हूँ।
जमाने मे कभी उस्ताद बनना है मुझे "बिसमिल,"
इसी उम्मीद पर मैं ख़िदमते उस्ताद करता हूँ।

---

(१७)

है ग़नीमत मेरा मर जाना खयाले यार में

तीर भी यह तीर में तलवार भी तलवार में,
लुत्फ़ है दोनों तरह का इक निगाहे यार में।
क्यों न निकले दम मेरा इश्के निगाहे यार में,
इसमे भी वह काट है जो काट है तलवार मे॥
उठ गए बालो(३) से यह कह कह के सब तीमारदार(४),
पुतलियाँ तक फिर गई अब कुछ नही बीमार में।
ज़िन्दगी से मौत अच्छी जिन्दगी अच्छी नही,
है ग़नीमत मेरा मर जाना ख़याले यार में॥
भूल बैठे घर भी अपना हम क़फ़स(५) से छूट कर,
याद इतना है कही था आशियाँ गुलजार(६) में।

१—आकाश। २—घोंसला। ३—सिरहाना। ४—देखभाल करने वाले। ५—पिंजड़ा। ६ बाग़।

मैं हुआ बेताब मेरा दिल भी मुज़्तर(१) हो गया,
किसने बिजली कूट कर भर दी निगाहे यार में ॥
क़ैद ज़िन्दा में रहेंगे क्या तेरे आशिफ्ता(२) हाल,
सर जहाँ टकरा दिया दर हो गया दीवार में ।
मेरी आँखों से नजर डालें ज़रा अहले नज़र,
ज़िन्दगी भी मौत भी सब कुछ है चश्मे यार में ॥
'नूह' सा उस्ताद पे "बिसमिल" है मेरा ना .खुदा(३),
मेरी कश्ती ग़र्क़(४) हो सकती नहीं मझधार में ।

---

(१८)

मुझको तुम भूले हुए हो कब तुम्हे मैं याद हूँ

(एक क़ाफ़िया)

यह न पूछो कौन हूँ वह ख़ानुमा बरबाद हूँ,
ख़ाक में मिलकर भी मै दुनिया को अब तक याद हूँ ।
एक मुद्दत में मिला तुमसे बिछुड़ कर अहले(५) बज़्म,
किसको-किसको मै हूँ भूला किसको-किसको याद हूँ ॥
ज़िन्दगी तो भूल बैठी ज़िन्दगी का जिक्र क्या,
मौत को देखो कि एक एक सास पर मैं याद हूँ ।
याद हो अच्छी तरह तुम तो मुझे भूले नही,
मुझको तुम भूले हुए हो कब तुम्हें मैं याद हूँ ॥

१—बेचैन । २—दीवाने । ३—माँझी । ४—डूबना । ५—सभावाले

चन्द टूटे फूटे टुकड़े अपने दिल के दे दिये,
क्या अजब मैं इस बहाने से अब उसको याद हूँ ।
गुलशने(१) आलम(२) में कोई पंखड़ी भूलो नही,
वह गुले .खुशरङ्ग हूँ हर रंग को मै याद हूँ ॥
भूल जाए किस तरह लुत्फ़े निशाते(३) ज़िन्दगी,
मुझको दुनिया याद मैं दुनिया को अब तक याद हूँ ।
क्या वतन का ज़िक्र .गुरबत(४) हीं मे गुजरी ज़िन्दगी,
अब पलट कर जाऊँ तो देखूँ किसे मै याद हूँ ॥
.खैर ये भी है ग़नीमत .खैर ये भी है करम(५),
बाद मर जाने के मैं कातिल को "बिसमिल" याद हूँ ।

---

(१९)

तुम्हारे तीर हैं उस्ताद घर बनाने में

मज़ा है पीने मे या लुत्फ है पिलाने में,
खुलेगा राज़ यह हम पर शराबखा़ने में ।
मज़ा मिला उन्हें सुनने मुझे सुनाने मे,
कोई नो बात थी ऐसी मेरे फ़िसाने(६) में ॥
उधर जो दिल में चुभे तो इधर जिगर मे चुभे,
तुम्हारे तीर है उस्ताद घर बनाने में—

१—बाग़ । २—संसार । ३—आनन्द । ४—परदेश । ५—कृपा ।
६—क़िस्सा ।

दिया न हुक्म कभी आपने रिहाई का,
हमारी उम्र हुई खत्म .कैदखाने में।
हम इस ख़याल से .खुद हो गए क़फ़स(१) मे असीर(२),
कि दिक्कते थी बहुत आशियाँ बनाने मे॥
जहाँ का ज़िक्र हो वायज़(३) वही वह ज़ेबा है,
शराबख़ाने की बातें शराबख़ाने में।
वह मुझको क़ब्र मे रख कर सुपुर्दे(४) ख़ाक करे,
कि जहमते नही मिट्टी के घर बनाने मे॥
.ज़ुबान पर हो मुझे नाज क्यो न ऐ "बिसमिल"
मेरा शुमार भी है "दाग"(५) के घराने में।

---

(२०)

दुनिया की बुराई हममें है दुनिया को बुरा हम कहते हैं

मुद्दत से यह सुनते आते हैं वह खानये दिल मे रहते हैं।
आ जायँ नजर तो हम जाने कहने के लिए सब कहते है॥
नजरों को नजर आते जो नहीं तो हम यही दिल से कहते है।
इस परदे में भी कुछ परदा है वह परदे मे क्यों रहते है॥
दुनियाय मुहब्बत मे दिल से मजबूर बहुत हम रहते हैं।
जो बात नहीं है कहने की वह बात भी उनसे कहते हैं॥

१—पिंजड़ा। २—क़ैद। ३—उपदेशक। ४—सौंपना।
५—महाकवि 'दाग़' देहलवी मेरे गुरु के गुरु थे।

कहता है उड़ा कर ख़ाक यही सन्नाटा शहर(१) ख़ामोशी का।
जो दुनिया से उठ जाते है वह इस दुनिया में रहते है॥
बेदर्द जफ़ा जू बानिये(२) शर मक्कार फिसूँगार(३) अहदे शिक़न(४)
ऐ सुननेवाले उसको सुन जो कहनेवाले कहते हैं॥
दुनिया के समुन्दर में देखी तिनके को तरह अपनी हस्ती।
साहिल(५) पे क़दम रखते ही नहीं हर सिम्त योंही हम बहते है॥
हाथों को उठाना दूभर है लब हमको हिलाना मुशकिल है।
आँखों के इशारे ही से फ़क़त अब हाले मुसीबत कहते है॥
मैं सामने लाने को कोशिश करता हूँ तो नाहक़ करता हूँ।
वह रोजे अजल से पर्दे मे कुछ सोच समझ कर रहते हैं॥
मतलब ये तुम्हारा है शायद दर्द उट्ठे तो रोये न कोई।
क्यों तुमको हँसी आ जाती है आँसू जो किसी के बहते है॥
इस सोच मे है इस चक्कर मे इस फ़िक्र मे इस दुनियावाले।
वह आलम कैसा आलम है जिस आलम मे वह रहते है॥
सौ अच्छे के तुम अच्छे हो दुनिया को तुम अच्छा कहते हो।
दुनिया को बुराई हममे है दुनिया को बुरा हम कहते हैं॥
हम रोएँ कहाँ तक उलझन मे हद होती है कोई रोने की।
अब दिल के टुकड़े आँखो से बन बन कर आँसू बहते हैं॥
छुपने को छुपे सौ परदो मे इस छुपने से क्या होता है।
वह ढूँढ निकालेगे उनको जो खोज मे उनके रहते है॥

१—स्मशान। २—झगड़ालू। ३—तन्त्रकार। ४—वचन का पालन न करनेवाला। ५—किनारा।

है 'नूह' से निसबत 'बिसमिल' को तूफ़ाने सखुन(१) से डर कैसा।
हर बज़्म मे गज़ले पढ़ते है हर बहर में गज़ले कहते है॥

---

(२१)

यह न पूछो किस तरह फ़रियाद कर लेता हूँ मैं

जब तसौउर(२) में किसी को याद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाँ ने आज़ूँ आवाद कर लेता हूँ मैं।
इस क़दर पाबन्दियाँ हैं फिर भी मुझको नाज है,
यह न पूछो किस तरह फरियाद कर लेता हूँ मैं॥
दीदये तर को मेरे होता है जब रोने का शौक़,
कोई क़िस्सा रंजोगम का याद कर लेता हूँ मैं।
हर नफ़स(३) एक मौत है तो हर नफ़स के साथ साथ,
क़ैदे ग़म से अपने को आज़ाद कर लेता हूँ मैं॥
ग़म नहीं तुम दिल से जी से भूल भी जाओ मुझे,
फिर भी दिल से, जी से तुमको याद कर लेता हूँ मैं।
यह मेरा दावा है जब चाहो सता कर देख लो,
अपने नालों में असर ईजाद कर लेता हूँ मै।
मेरे दिल को जब कोई सदमा पहुँचता है कहीं,
ऐशो राहत का जमाना याद कर लेता हूँ मैं॥

१—कविता। २—ध्यान। ३—सांस।

अल्ला अल्ला यह मेरे मश्के तसौउर का असर,
एक दुनिया दूसरी आबाद कर लेता हूँ मैं।
छेड़ता हूँ आस्माँ से गुफ़्तगू का सिलसिला,
जब कोई तर्जे फुगाँ(१) ईजाद कर लेता हूँ मै॥
हज़रते "बिसमिल" अभी तक क़तआ(२) रस्मो राह पर,
भूलनेवाले को दिल से याद कर लेता हूँ मैं।

---

(२२)

आह मेरी है बेअसर आह में कुछ असर नहीं

तुमको यह है अगर यकी दिल में वह जल्वागर(३) नही,
ढूँढा करो तमाम उम्र मिलने का उम्र भर नही।
आप न आप बे ख़बर क्या तुझे यह ख़बर नही,
सास का एतबार क्या शाम तो है सहर(४) नही।
दैर(५) हो काबा हो कि दिल किसमे वह जल्वागर नही,
देख सकूँ मगर उसे इतनी मेरी नजर नही।
किसने यह तुमसे कह दिया तुमने यह किससे सुन लिया,
आह मेरी है बेअसर आह मे कुछ असर नही॥
कुञ्जे क़फ़स मे अन्दलीब(६) मुज़्तरो(७) बेकसो गरीब,
कहने को बालो पर तो है उडने को बालो पर नही।

१—आह करना। २—अलग होना। ३—सर्वव्यापी। ४—सुबह। ५—मन्दिर। ६—बुलबुल। ७ बेचैन।

दिल में बला का जोश है सर लिए सर फरोश(१) है,
जीने का होश है कहाँ मरने का उसको डर नही ॥
तोड रहा है आज दम गम में कोई मरीजे गम,
फिर भी है आप बे खबर आपको कुछ ख़बर नही ।
जान गए यह मर के हम मुल्के अदम(२) था दो क़दम,
खत्म हो जल्द जो सफ़र ऐसा कोई सफ़र नहीं ॥
अब कहाँ हसरतों की धूम दिल मे वह शौक़ का हुजूम,
उजडा हुआ मेरी तरह और किसी का घर नही ।
परदे मे आप बैठ कर रखते है हर तरफ़ नज़र,
और ज़ुबान पर यह है शोख़ मेरी नज़र नही ॥
उफ़ यह मेरा नसीबे बद जा के बनी कहाँ लहद(३)
सब को है रह गुजर जहाँ आप की रह गुज़र नही ।
बात यह तुमने सच कही "बिसमिल" वे हुनर सही,
यह भी है एक बडा हुनर उसमे कोई हुनर नहीं ॥

---

(२३)

उनका मतलब है यही मैं हर तरह बरबाद हूँ

मुन्तजिर इस हुक्म का मैं कब से ऐ सैयाद हूँ,
जिस जगह कह दे चमन मे उस जगह आबाद हूँ ।

१—सर बेचनेवाला । २—परलोक । ३—कब्र ।

है कज़ा नज़दीक मैं क्या शाकिये(१) सैयाद हूँ,
रात भर की है असीरी(२) सुबह को आजाद हूं॥
बैठते उठते हमेशा मूरिदे(३) बे दाद हूँ,
उनका मतलब है यही मै हर तरह बरबाद हूँ।
रोग की सूरत समाई है तने ख़ाकी में रूह,
सोचता हूँ किस तरह इस रोग से आज़ाद हूँ।
मेरी बरबादी पे कोई रोनेवाला भी नही,
बाद मर जाने क मै ऐसी जगह आबाद हूँ॥
मुझको बे ढूँढे कहाँ दाना मिला पानी मिला,
क्या समझ कर तेरे घर से मै .जुदा सैयाद हूँ।
ख़ाक समझी है अगर दुनियाँ मुझे समझी है ख़ाक,
ख़ाक हूँ लेकिन बिनाये(४) आलमे(५) ईजाद हूँ॥
हर तरफ़ फिरता हूँ अपने आशियाँ के वास्ते,
चार तिनको की हवसमे किस कद्र बरबाद हूँ॥
नाम पाया है निकल कर लाल ने कोहसार(६) से,
रंग कहता है कि मैं ख़ूने सरे फरहाद हूँ॥
कह रहा है दिल फरेबो(७) गुलशने ईजाद की,
बाग़वाँ के भेष में हूँ मैं मगर सैयाद हूँ।
कह गया 'बिसमिल' सरे महफ़िल यह उस्तादो की बात
'नूह' का शागिर्द हूँ लेकिन बडा उस्ताद हूँ॥

१—शिकायत करनेवाला। २—कैद। ३—बार बार .जुल्म करना। ४—जड़। ५—सृष्टि। ६—पहाड़। ७—दिल लुभानेवाली।

(२४)

क्या समझ कर और जीने की तमन्ना कीजिए

फ़िक्रे दुनिया कीजिए या फ़िक्रे ओक़बा(१) कीजिए,
मौत है सर पर खड़ी ऐसे मे क्या क्या कीजिए।
शौक़ कहता है कि इज़हारे तमन्ना कीजिए,
ख़ौफ़ कहता है कि चर्चा ही न इसका कीजिए।
कह गई यह आख़री हिचकी मरीज़े इश्क़ की।
क्या समझ कर और जीने की तमन्ना कीजिए।
लोग कहते हैं बुरी होती है अच्छों की निगाह,
कुछ समझकर सोच कर आइना देखा कीजिए॥
उसको भी रगे वफ़ा का हाल कुछ मालूम हो,
ग़ैर को ख़त मेरे ख़ूने दिल से लिक्खा कीजिए।
मेरी बाली(२) से यह कहकर उठ गए सब चारा गर(३),
हो चुका किसमत मे जो होना था अब क्या कीजिए।
ख़ून की छीटों से रंगी दामने क़ातिल हुआ,
इस तरह ऐ हज़रते 'बिसमिल' न तड़पा कीजिए।

१—परलोक। २—सिरहाना। ३ दवा करनेवाले।

(२५)

हम न रहने पायें दुनिया तेरी महफ़िल में रहे

कोई तो अपना शरीके हाल मुशकिल मे रहे,
तुम नही रहते तुम्हारी याद ही दिल में रहे।
कोई रहने को किसी के ख़ानये दिल में रहे,
सब से अच्छा है वही जो तेरी महफ़िल मे रहे।
कशमकश(१) में फँस गए जहमत में, मुशकिल में रहे,
आप बे समझे हुए क्यों ग़ैर के दिल में रहे।
उस तरफ़ महशर(२) का ख़टका इस तरफ दुनिया का शौक़,
मरनेवाला मरते दम क्यों कर न मुशकिल में रहे।
लुत्फ़ तो जब है कि ख़ुद आ कर मेरे दिल में रहो,
क्या रहे कहने से मेरे तुम अगर दिल मे रहे।
यह है कोई बात भी यह है कोई इन्साफ़ भी,
हम न रहने पाये दुनिया तेरी महफ़िल मे रहे।
है वही तिनके मे तिनका जो बनाये आशियाँ,
गुल वही गुल है जो मिनक़ारे(३) अनादिल(४) में रहे
मिल गई सदमो से फ़ुरसत जान दे देने के बाद,
दम मे जबतक दम रहा हम सख़्त मुशकिल में रहे।
हो बुतों की आरज़ू इश्क़े ख़ुदा के साथ साथ,
एक बुतख़ाना भी अपने काबये दिल मे रहे।

१—खींचातानी। २—प्रलय। ३—चोंच। ४—बुलबुल।

वक़ो(१) सर(२) सर को हमारे आशियाँ से लाग थी,
चार तिनकों की बदौलत हम भी मुशकिल मे रहे।
साँस उखडी नब्ज छूटी बन्द आँखें हो गईं,
वक़्ते आख़िर क्या कोई अरमाँ मेरे दिल में रहे।
बहते बहते लाश आख़िर को किनारे आ लगी,
गर्क़ दरिया हो के हम आगोशे(३) साहिल मे रहे।
ग़ौर से देखे कोई कसरत मे यह वहदत(४) की शान,
एक तू है और दुनिया भर के तू दिल में रहे।
उसकी किसमत उसकी तकदीर उसका बख़्त(५) उसका नसीब,
जो तेरे कूचे मे ठहरे तेरी महफ़िल मे रहे।
यह दुआएँ माँगता था आज एक ईजा(६) तलब,
दर्द भी दिल में रहे बेदर्द भी दिल में रहे।
कुश्तये तेग़े मुहब्बत क्या हिलाये हाथ पाँव,
दम रहे तो दम तडपते का भी "बिसमिल" में रहे।

---

(२६)

जिसपे दुनिया मर रही है वह तेरी तसवीर है

जो कहे हालाते गम वह आशिक़े दिलगीर है,
जो बुलाये से न बोले वह तेरी तसवीर है।

१—बिजली। २—आँधी। ३—गोद। ४—एक। ५—भाग्य।
६—कष्ट चाहने वाला।

वक़्ते आख़िर मैं जो ख़ुश हूँ उनकी सूरत देखकर,
वह समझते है कि मरने में अभी ताखीर(१) है।
ढूँढते हो किसलिए तरकस मे अपने बार बार,
मेरे दिल मेरे कलेजे मे तुम्हारा तीर है।
पाँव रखिएगा ज़रा फ़र्शेजमी पर देख कर,
ज़र्रे ज़र्रे मे दिले मरहूम(२) की तसवीर है।
यह नही कहना कि सेहत मुझको हो ही जायगी,
चारागर तदबीर कर आगे मेरी तक़दीर है।
एक तरफ़ रक्खी हुई है तेरे दीवाने की लाश,
एक तरफ़ जिन्दाँ(३) मे उसके पाँव की जञ्जीर है।
यह अगर निकला तो जानो दम भी निकला इसके साथ,
दिलकी सूरत मेरे पहलू मे किसी का तीर है।
सारा आलम देखने को इसके खिच कर आएगा,
जिसपे दुनिया मर रही है वह तेरी तसवीर है।
वह रहे दिल मे तुम्हारे मैं रहूँ आँखो से दूर,
एक मेरी तक़दीर है एक ग़ैर की तक़दीर है।
कुछ कलेजे मे चुभे कुछ मेरे दिल मे रह गए,
अब कहाँ बाक़ी कोई तरकश मे उनके तीर है।
शोख़ियो से एक जगह दम भर कभी रहते नही,
खिचनेवाली किस तरह फिर आपकी तसवीर है।

१—देरी। २—स्वर्गवासी। ३—क़ैदखाना।

फिरते है रक्खे हुए सर पर जिसे अह्ले जुनूं,(१)
वह हमारे पॉव की उतरी हुई ज़ञ्जीर है।
हश्र(२) में यह पूछता है सबसे दीवाना तेरा,
वह कहॉ है जिसकी मेरे हाथ मे तसवीर है।
जो तुझे भूला हुआ है वह बहुत है बदनसीब,
याद है जिसको तेरे दिल मे वह ख़ुश तक़दीर है।
अपनी गोयाई(३) का दावा था तुझे 'बिसमिल' मगर,
तू भी उनको देखकर चुप सूरते तसवीर है।

---

(२७)

मिट्टी कहीं हो जाय न बरबाद किसी की

मशहूर जहाँ क्यो न हो बेदाद किसी की,
फिरती है उड़ाये हुए फ़रियाद किसी की।
सुनते नही तुम किस लिए फ़रियाद किसी की,
पुर दर्द है पुर लुत्फ़ है रू दाद(४) किसी की।
तू भी तो हो वाक़िफ़ कि सितम सहते है क्योंकर
उल्फ़त हो तुझे भी सितम ईजाद किसी की।
इस नाज़ो नज़ाकत पे यह दावा हो अबस(५) है,
तुमसे न सुनी जायगी फ़रियाद किसी की।

१—पागल। २—प्रलय। ३—बोलने का। ४—वाकयात। ५—व्यर्थ।

सब कहते हैं तू हाथ मुहब्बत से उठा ले,
सुनता नही क्यों ऐ दिले नाशाद किसी की ।
वह अञ्जुमने(१) नाज़ मे तसवीर बने हैं,
शायद उन्हे फिर आ गई है याद किसी की ।
क्या इससे यह मतलब है कि गुलशन को भुलादे,
ख़ातिर जो किया करता है सैयाद किसी की ।
वह नाज़ से चलते है लरज़ता(२) है मेरा दिल,
मिट्टी कही हो जाय न बरबाद किसी की ।
कल रात तडपते रहे तुम बिस्तरे ग़म पर,
"बिसमिल" तुम्हें क्या आगई थी याद किसी की?

---

(२८)

रहते रहते दिल में वह दिल की तमन्ना हो गए

इश्क़ो उल्फ़त का बुरा हो क्या से हम क्या हो गए,
सारी दुनिया हँस रही है किसके शैदा(३) हो गए ।
क्या बताएँ क्या जताएँ क्या कहे क्या हो गए,
हम तमाशागाहे उल्फ़त में तमाशा हो गए ।
और पर क्यो जान दें क्यो और पर क़ुर्बान हो,
जिसके शैदा हो गए हम उसके शैदा हो गए ।

---

१ - सभा । २—कांपना । ३—प्रेमी ।

मै निकालूँ भी तो अब उनको निकालूँ किस तरह,
रहते-रहते दिल मे वह दिल की तमन्ना(१) हो गए।
हाले दिल उल्फ़त मे हमसे पूछता कोई नही,
पूछते है सब यही दो दिन मे तुम क्या हो गए।
सूरते फरहाद उस शीरीं(२) दहन को देके दिल,
हज़रते "बिसमिल" ज़माने भर मे रुसवा हो गए।

---

(२९)

अभी गर्दन पे खंजर और ए जल्लाद रहने दे

तसव्वुर(३) दिल का दिल मे ऐ सितम ईजाद रहने दे,
बहुत सी रह नही सकती ज़रा सी याद रहने दे।
चमन मे यादगारे बुलबुले नाशाद रहने दे,
नशेमन(२) शाखे गुल पर ए मेरे सैय्याद रहने दे।
कोई दिल थाम कर कहता है क्या इसकी ज़रूरत है,
कलेजा मुँह को आ जायेगा तू फरियाद रहने दे।
मज़ा मिलने लगा कुछ कुछ मुझे शौके शहादत का,
अभी गर्दन पे खंजर और ए जल्लाद रहने दे।
मज़ा तो जब है वह बेदर्द भी कह दे यह घबरा कर
सुनी जाती नही अब दिल जली फरियाद रहने दे।

१—आरज़ू। २—शीरीं का प्रेमी जो उसके प्रेम पर बलिदान हो गया। ३—ध्यान। ४—घोंसला।

जो मै उनसे कभा ज़िक्रे दिल नाशाद करता हूँ,
तो वह कहते है ऐसी बेतुकी रूदाद(१) रहने दे।
खुदा की शान मै मरता हूँ जिन पर अब वह कहते है,
मुहब्बत अपनी तू ए "बिसमिले" नाशाद रहने दे।

---

(३०).

जफ़ा किसकी जफ़ा तेरी वफ़ा किसकी वफ़ा मेरी

मआले(२) इश्क अच्छा हो यही है इल्तिजा मेरी,
तुम्हारे हाथ से आए अगर आए कजा मेरी।
ज़रा ए बेखुदीये शौक यह मुझको बता देना,
हुई कब इब्तिदा(३) मेरी हुई कब इन्तेहा(४) मेरी।
तमाशा देखनेवाले तमाशा देख कर जाना,
जरा दम ले अभी दम भर मे आती है कज़ा मेरी।
अगर मुझ पर न तुम दुनिया में बेदादो(५) जफ़ा करते,
तो फिर मशहूरे आलम किस तरह होती वफा मेरी।
बस इतना याद है वह जलवा गाहे नाज मे आए,
खुदा जाने हुई कब रूह कालिब(६) से जुदा मेरी।
मुझे नाकाम रखती है तुझे बदनाम करती है,
जफा किसकी जफ़ा तेरी वफा किसकी वफा मेरी।

१—बीती हुई घटना। २—नतीजा। ३—प्रारम्भ। ४—अन्त।
५—ज़ुल्म। ६—देह।

जो मर जाने को कहते हो तो उट्ठो जाओ बाली(१) से,
तुम्हारे सामने हर्गिज़ न आएगी कज़ा मेरी।
वह जालिम किस क़द्र रोया वह क़ातिल किस क़द्र तड़पा,
उसे जब याद आई हज़रते "बिसमिल" वफ़ा मेरी।

---

(३१)

आदमी खोता है ख़ुद तौक़ीर अपने हाथ से

दिल में रख ले आशिक़े दिलगीर अपने हाथ से,
उसको दे दो तुम जो अपना तीर अपने हाथ से।
क़ाबिले तौक़ीर वह दीवानो मे दीवाना है,
जिसको पहनाते हो तुम ज़ञ्जीर अपने हाथ से।
खींच लूंगा जी बहलने के लिए ए हम बशी(३),
आलमे बहशत(४) की एक तसवीर अपने हाथ से।
लज्जते आज़ार(५) उससे पूछ ले बेदादगर(६),
जो चुभो लेता हो दिल में तीर अपने हाथ से।
मर गया दीवानये गेसू तेरा ज़िन्दाँ(७) में आज,
काट दे अब पॉव की ज़ञ्जीर अपने हाथ से।
मुझसे खिंचते हो खिँचो इससे तो खिचना है फ़िज़ूल,
फेकते हो क्यों मेरी तसवीर अपने हाथ से।

१—सिराहना २—इज़्ज़त। ३—साथी। ४—पागलपन। ५—कष्ट। ६—कैदखाना। ७—अत्याचारी।

इश्क़ मे पेश आते है "बिसमिल" कुछ ऐसे वाक़यात,
आदमी खोता है खुद तौकीर अपने हाथ से।

---

(३२)

दिखाएगी हमें जो गर्दिशे तक़दीर देखेंगे

जुनूने इश्क मे है या नही तासीर देखेंगे,
हिलाकर हम भी अपने पॉव की ज़ञ्जीर देखेंगे।
हम अपनी आह में जिस वक्त कुछ तासीर देखेंगे,
तो पहले सबसे तुझको आसमाने पीर(१) देखेंगे।
गले में तौक़ दोनों पॉव मे जञ्जीर देखेंगे,
वह मेरे आलमे बहशत की जब तसवीर देखेंगे।
तेरे दर से तेरे कूचे से उठना ग़ैर-मुमकिन है,
दिखाएगी हमे जो गर्दिशे तक़दीर देखेंगे।
उन्हें चुन-चुन के रक्खेंगे जिगर में, दिल में, पहलू मे,
जो अच्छे सब से तरकश में तुम्हारे तीर देखेंगे।
नजर करते हैं मेरे दिल की जानिब तो यह मतलब है,
मुहब्बत की वह जीती-जागती तसवीर देखेंगे।
यहा तो दोस्तों का मशग़ला(२) ऐ चारागर(३) होगा,
तेरी तदवीर देखेंगे मेरी तक़दीर देखेंगे।

१—अनुभवी आकाश। २—धन्धा। ३—चिकित्सक।

मँगा ली उसने अब तसवीर अपनी हजरते "बिसमिल"
जो दिल घबराये गा तो कौन मो तसवीर देखेंगे ?

---

(३३)

दुनिया महक रही है जिस फूल से वह तू है

हिर-फिर के ढूँढता हूँ हर सिम्त जुस्तजू(१) है,
मिल जाय तू कहीं से बस तेरी आरजू है।
बागे जहाँ में हरसू फैली यह किसकी बू है,
दुनिया महक रही है जिस फूल से वह तू है।
हसरत जहान की है हसरत मे कोई हसरत,
दुनिया की आरजू भी क्या कोई आरजू है ?
आँखें उठा-उठा कर जिस सिम्त देखता हूँ,
सूरत तेरी है जलवा तेरा है और तू है।
यह भी समझ ले दिल मे ए दूर रहनेवाले !
बेकार जाने वाली कब अपनी जुस्तजू है।
तू मेरे सामने हो मैं तेरे सामने हूँ
क्या दिल की आरजू है यह दिल की आरजू है।
जो मर रहा है तुझ पर जो मिट गया है तुझ पर
दुनियाये आशिकी मे बस उसकी आबरू है।
दुनिया है दोस्त किस की दुनिया है दोस्त तेरी।
किसका जहाँ उदू(२) है मेरा जहाँ उदू है।

१—खोज। २—शत्रु।

पुतला बना हुआ है यह हसरतो हवस(१) का,
नन्हे से दिल को "बिसमिल" दुनिया की आरज़ू है।

---

(३४)

अब तो ख़ुश हो कि मर गया कोई

(एक क़ाफ़िया)

जो न करना था कर गया कोई,
वक़्त से पहले मर गया कोई।
इश्क़ मे नाम कर गया कोई,
आ गई मौत मर गया कोई।
तुम न आए तो यह सितम टूटा,
खुदकुशी कर के मर गया कोई।
जज़्बे उल्फ़त(२) का यह मआल(३) हुआ,
आप ही आप मर गया कोई।
अब तो कोई तुम्हें मलाल नही,
अब तो ख़ुश हो कि मर गया कोई।
वह न आए तो बिस्तरे गम पर,
कर के एक आह मर गया कोई।
पूछते हैं वह किस तगाफुल(४) से,
हम यह सुनते है मर गया कोई।

१—लालसा। २—प्रेमाकर्षण। ३—नतीजा। ४—बेपरवाही।

तुम्ही सोचो तुम्ही ख़याल करो,
क्यों यह बेमौत मर गया कोई।
इस पे बिगड़े है वह कि वे पूछे,
किस लिए मुफ़्त मर गया कोई।
जी उठा कोई देख कर तुम को,
देख कर तुमको मर गया कोई।
क्यो वह मातम करें मलाल करे,
मर गया आज मर गया कोई।
देखने भी न आए वह "बिसमिल"
इस तमन्ना मे मर गया कोई।

---

(३५)

दिल में क्या रक्खेगा क्या चाहेगा तू दिल से मुझे

आज बरसों में मिला मौक़ा यह मुश्किल से मुझे,
दिल के बस दो हर्फ़ कहने है तेरे दिल से मुझे।
किस नज़र से देखना मै आना-जाना ग़ैर का,
ख़ुद-ब-ख़ुद उठना पड़ा आज उनकी महफ़िल से मुझे
मौत आकर फिर पलट जाये यह है आसान बात,
ज़िन्दा रहने देंगे उनके नाज मुश्किल से मुझे।
दो तरह का इश्क़ है लेकिन वही है एक बात,
मेरे दिल से हो तुझे या हो तेरे दिल से मुझे।

मौत आई थी यहाँ तो दफ़्न करना था यही,
लोग क्यों ले जा रहे हैं कूए कातिल(१) से मुझे।
वह यह कहते हैं अगर पहलू में तेरे दिल नहीं,
दिल में क्या रक्खेगा क्या चाहेगा तू दिल से मुझे।
क़स्द(२) होता है कि बज़्मे दहर(३) से उठ जाऊँ अब,
ख़ुद उठाने आए हैं वह अपनी महफ़िल से मुझे।
कर दिया 'बिसमिल'' को उस कातिल ने बिस्मिल और भी,
इस क़दर कह कर नहीं तुम चाहते दिल से मुझे।

---

(३६)

कोई दामन में गुल चुनता है कोई खार गुलशन से

टपकता है लहू मक़तल(४) में रिस रिस कर सरोतन से,
किसी की तेग़ जब मिलती है खिचकर मेरी गर्दन से।
निकलने को निकलते हैं वह बच कर मेरे मदफ़न(५) से,
मगर फिर भी लिपट जाती है उड़ कर ख़ाक दामन से॥
हवा भरती है आहें सर्द पत्ते हाथ मलते हैं,
ख़ुदा जाने यह किस की लाश अब उठती है गुलशन से।
क़फ़स(६) में जब से हूँ दुनिया उसे बरबाद करती है,
मेरे होते न पाता था कोई तिनका नशेमन(७) से॥

१—प्रेमिका की गली। २—विचार। ३—संसार। ४—कत्ल करने की जगह। ५—दफन करने की जगह। ६—पिंजड़ा। ७—घोसला।

यहाँ के एक-एक पत्थर से होता है गुमाँ मुझको,
पड़ी है नेव भी काबे की तो दस्ते बिरहमन(१) से।
फ़लक हो बर्क़(२) हो सैय्याद हो या बादे सरसर(३) हो
जिसे देखो उसी को लाग है मेरे नशेमन से।
करिश्मे है यह किस्मत के यह खूबी है मुक़द्दर की,
कोई दामन मे गुल चुनता है कोई ख़ार(४) गुलशन से।
यह रंग आमेज़ीये क़ातिल कही कम होनेवाला है
बहेगा हश्र तक योंही लहू "बिसमिल" का गर्दन से।

---

(३७)

जो कल काँटा चुभा था
आज तक वह दिल में बाक़ी है

यह कैसी आग अभी ए शमआ(५) तेरे दिल मे बाकी है,
कोई परवाना जल मरने को क्या महफिल मे बाकी है।
हज़ारों उठ गए दुनिया से अपनी जान दे दे कर,
मगर एक भीड फिर भी कूचये क़ातिल में बाक़ी है॥
बहुत कुछ नाखुने तदबीर ने तदबीर को लेकिन,
जो कल काँटा चुभा था आज तक वह दिल में बाक़ी है।

१—पवित्र हाथ। २—बिजुली। ३—आँधी। ४—काँटा। ५—दीपक।

अभी से अपना दिल थामे हुए क्यों लोग बैठे हैं,
अभी तो हश्र(१) उठने को तेरी महफिल में बाकी है ॥
वह मुझसे दूर खिचते है खिंचे कुछ गम नही इसका,
कि दिल पहलू मे बाकी है कशिश भी दिल मे बाकी है ।
क़ज़ा से कोई कह दे मै भी मुश्ताक़े(२) शहादत हूँ,
नया एक मरनेवाला कूचये क़ातिल मे बाक़ी है ॥
समझते हैं कि मिलना हर तरह है उनका नामुमकिन,
तमन्ना फिर भी मिलने को हमारे दिल में बाकी है ।
अभी से तूने क़ातिल म्यान मे तलवार क्यो रख ली,
अभी तो जान थोडी सी तने "बिसमिल" मे बाकी है ॥

---

(३८)

तसवीर की सूरत फिरने लगी
आँखो में जवानी फूलो को ।

गुलजार(३) मे आया मौसिमे गुल
अल्लाह रे जवानी फूलो की ।
अब फूल के बुलबुल कहती है
फूलो मे कहानी फूलों की ॥

१—प्रलय । २—मरने का उत्सुक । ३—बाग ।

सैय्याद के घर में कहता है
यूँ कोई कहानी फूलों की।
जाँची-परखी देखी-भाली
मैने भी जवानी फूलों की॥
रह जायगी कहने-सुनने को
गुलशन मे कहानी फूलों की।
कै रोज़ यह आलम फूलों का
दुनिया है ये फानी(१) फूलों की॥
जब मौसिमे गुल का जिक्र आया
तो अश्क बहाये गुल्चीं(२) ने।
तसवीर की सूरत फिरने लगी
आँखों मे जवानी फूलों की॥
ए बादे सबा ! यह ज़ुल्मो सितम
पत्ते भी अलग-शाखें भी जुदा !
गुलशन में न रहने पायेगी
क्या कोई निशानी फूलों की॥
गुलचीं भी मुख़ालिफ सरसर भी
कुछ बस नही चलता बुलबुल का।
मिट्टी मे मिलाई जाती है
पुरजोश जवानी फूलों की॥

१—नश्वर। २—फूल तोड़नेवाला।

वह महफ़िले गुल बाक़ी न रही
वह अहले चमन। बाक़ी न रहे।
अब कौन सुनायेगा हमको
दिल-चस्प कहानी फूलों की॥
गुलशन मे न क्योंकर दिल बहले
वह सुनते हैं मै सुनता हूँ।
फूलो से फ़िसाना बुलबुल का
बुलबुल से कहानी फूलो की॥
बुलबुल के मुक़द्दर से बेशक
तकदीर इसी की अच्छी है।
चल-फिर के सबा(१) ही चूमती है
क्या क्या पेशानी फूलो की॥
मजमून के गुल क्यों कर न खिले
"बिसमिल" फिर सफ़इये काग़ज पर।
सौ रङ्ग से लिक्खी है तुमने
खुश रङ्ग कहानी फूलों की॥



१—हवा।

(४०)

आज क़ायल हो गए हम गर्दिशे तक़दीर के

होगए पैवस्त(१) यों पैकाँ तुम्हारे तीर के,
रूह बाहर आगई दिल से मेरा दिल चीर के।
बढते-बढते आह की नाकामियाँ अब बढ गई,
मिटते मिटते मिट गए सब हौसले तासीर के।
उनकी नजरो मे जमाने भर की शक्लें हेच है,
जिनके दिल पर खिंच गए नक़्शे तेरी तसवीर के॥
मिलते-मिलते दफ़अतन(२) उनकी निगाहें फिर गई,
आज कायल हो गए हम गर्दिशे तकदीर के।
अश्क बन-बन कर वही आँखो से निकलेंगे कभी,
रह गए है दिल मे जो पैकाँ तुम्हारे तीर के॥
होते-होते दूर कब दिल से हुआ तेरा ग़ुबार,
खाक मे जब मिल गए खाके मेरी तसवीर के।
फिर गया रुख़ हा हवाये दामने तदबीर का,
उठते-उठते रह गए पर्दे मेरी तक़दीर के।
एक ये है और लाखों तालिबे(३) दीदार है,
देखें किस किसको मिलें दर्शन तेरी तसवीर के।
बर्क़ ने फूँका जो खिरमन को तो हासिल क्या हुआ ?
चन्द दाने रह गए फिर भी मेरी तक़दीर के।

---

१ – मिल जाना। २—अकस्मात। ३—दर्शक। ४—खलिहान।

हो गए मशहूर ए "बिसमिल" हरम(१) में हक़-परस्त,
बुतकदे मे पूजनेवाले किसी तसवीर के।

---

(४०)

छुपता है कोई हुस्न की दुनिया लिए हुए

दिल मे तरह-तरह की तमन्ना लिए हुए,
बैठा हूँ जौक़ो शौक़ की दुनिया लिए हुए।
एक-एक-क़दम पे जलवये जाना है साथ-साथ,
मैं फिर रहा हूँ तूर(२) का नक़शा लिए हुए॥
महशर(३) मे देखना है मुझे उनका हश्र(४) भी,
आए हैं हसरतो की जो दुनिया लिए हुए।
जोशे जुनूँ मे है यह तसव्वुर(५) की ख़ूबियाँ,
मजनूँ है अपनी गोद में लैला लिए हुए॥
आने मे सौ हिजाब बुलाने में सौ ख़याल,
छुपता है कोई हुस्न की दुनिया लिए हुए।
उस बेवफ़ा को हाथ लगाने में उज्र है,
अहबाब(६) दोश(७) पर है जनाज़ा लिए हुए॥

१—क़ाबा। २—वह पहाड़ जिसपर हज़रत मूसा ईश्वरीय चमत्कार देखने गए थे। ३—प्रलय। ४—नतीजा। ५—ध्यान। ६—मित्र। ७—कन्धा।

यह बात है मोहाल कि महशर मे जायँ हम,
अपनी ज़बान पर तेरा शिकवा(१) लिए हुए।
इक तू न हो ख़िलाफ जमाना रहे ख़िलाफ़,
"बिसमिल" है अपने साथ मे दुनिया लिए हुए।

---

(४२)

जो न कहना था मुनासिब कह गई दुनिया मुझे

सोजे(२) उल्फ़त ने जला कर ख़ाक कर डाला मुझे,
मै नही मिलने का अब ढूँढा करे दुनिया मुझे।
किस कद्र मैं दिल ही दिल मे शाद हूँ देखा मुझे,
इक तेरे मिलने मे गोया मिल गई दुनिया मुझे।
ख़ाक होकर ख़ाक में मिलने का गम कैसा मुझे,
मैं तो यह समझा कि कुछ समझी नही दुनिया मुझे।
मै कफस(३) मे आशियाँ को भूलनेवाला नही,
याद है सैय्याद अब तक एक इक तिनका मुझे।
आगये कब खिँच के जब खिँचने लगी रग-रग से रूह,
वक्त आख़िर आपने देखा तो क्या देखा मुझे?

१—उलटना। २—प्रेमाग्नि। ३—पिंजड़ा।

किस कद्र बेफ़ैज(१) निकली बाग़े आलम की बहार,
एक इक फूल इस चमन का होगया काँटा मुझे।
क्या है और इसके सिवा पर्दे में रहने का सबब,
चाहते है वह यो ही ढूँढ़ा करे दुनिया मुझे।
वह यह कहते है कि मुझ पर जान देते हो अबस(२),
मैं यह कहता हूँ दिखाओ दूसरा ऐसा मुझे।
बेरुख़ी एक इक ने बरती रुख़ तुम्हारा देख कर,
जो न कहना था मुनासिब कह गई दुनिया मुझे।
बर्क़(३) ने इसके सबब से ढाए मुझ पर भी सितम,
क्या ख़बर थी आशियाँ(४) हो जायगा काँटा मुझे।
जिन्दगी मे कद्र ऐ "बिसमिल" मेरी होती नहीं,
बाद मर जाने के रोएगी बहुत दुनिया मुझे।

---

(४२)

बहार आने न पाई और छूटा आशियाँ हमसे

ख़ुदा के वास्ते इसको न पूछ ए बाग़वाँ! हम से,
चमन मे आशियाँ से हम थे या था आशियाँ हमसे।
चमन वाले उजड़वाते है होकर बदगुमाँ हमसे,
बनेगा किस तरह अब इस तरह का आशियाँ हमसे।

१—अनर्थक। २—व्यर्थ। ३—बिजली। ४—घोसला।

निकाली दुश्मनी तू ने कहाँ की आसमाँ हमसे,
बहार आने न पाई और छूटा आशियाँ हम से।
ज़ुबाँ भी जब नही खुलती नहीं चलती नही फिरती,
वह सुनने के लिये कब आये दिल की दास्ताँ हमसे।
रहेगी फ़स्ले(१) गुल जब तक यह बातें ग़ैरमुमकिन है,
जुदा हम आशियाँ से हो जुदा हो आशियाँ हमसे।
जफ़ा वाले हमें क्यों गिन रहे है बेवफ़ाओं मे,
गया है कौन-सा वक़्ते मुहब्बत रायगाँ(२) हमसे।
वह नाहक़ पूछते है मुफ़्त का एहसान रखते है,
हमारा हाले रंजो-ग़म नही होता बयाँ हम से।
चमन में सौ तरह की जब बहारे हमने लूटी है,
तो आँखों से न देखा जायगा ज़ुल्मे खिज़ाँ हम से।
अज़ल(३) से फ़िक्र उनकी जुस्तजू उनकी तलाश उनकी,
अबद(४) तक रह नही सकते वह पर्दे मे निहाँ हमसे।
हमारा सिलसिला है ख़ानदाने 'दाग़' से "बिसमिल",
जिसे हो सीखनी वह सीख ले उर्दू ज़बाँ हम से

१—वसन्त ऋतु। २—व्यर्थ। ३—आदि। ४—अन्त।

(४३)

हमें दिल से परेशानी बहुत है

यह मेरा दुश्मने जानी बहुत है,
तुम्हारी चाल मस्तानी बहुत है।
मुहब्बत मे बहुत मुश्किल है जीना,
मगर मरने मे आसानी बहुत है।
न होता दिल तो मुज़्तर(१) हम न होते,
हमे दिल से परेशानी बहुत है।
तुम्हारे तीर ख़ुश रहते है दिल मे,
यहाँ सामाने मेहमानी बहुत है।
जिसे कहते है दीवानी जवानी,
जवानी उनकी दीवानी बहुत है।
मेरी मइयत(२) पे तुम आये परेशाँ,
तुम्हारी यह परेशानी बहुत है।
तुम्हारे देखने को सारी दुनिया,
क़यामत मे भी दीवानी बहुत है।
जनाबे 'नूह'(३) का शागिर्द "बिसमिल",
न हो कुछ फिर भी तूफानी बहुत है।

१—बेचैन। २—लाश। ३—मेरे काव्य-गुरु।

(४४)

पत्ती-पत्ती में झलक देखी तेरी तसवीर की

क़द्र करनी चाहिए तुमको दिले नख़्चीर(१) की,
उसके दम से इतनी शोहरत है तुम्हारे तीर की।
तीर वाले तू ने देखी चाल अपने तीर की,
इसने दुनिया ही बदल डाली दिले नख़्चीर की।
उसकी सूरत हो गई मज़रूह(२) की नख़चीर की,
पड़ गई परछाई जिस दिल पर तुम्हारे तीर की।
इनसे हो जाती है ताज़ा उनके दीवाने की याद,
चन्द कड़ियाँ क़ैदख़ाने मे जो है जञ्जीर की।
गुलशने आलम(३) मुझको महवे(४) हैरत कर दिया,
पत्ती पत्ती मे झलक देखी तेरी तसवीर की।
अपने-अपने लख़्ते(५) दिल हाज़िर करेंगे अहले दिल,
आज सुनता हूँ कि दावत है तुम्हारे तीर की।
मैं क़फ़स(६) मे हूँ मगर है बर्क़(७) को अब भी तलाश,
आग भड़काने लगी गर्दिश मेरी तक़दीर की।
नज़ा(८) मे निकले मेरा अर्मान ख़ामोशी के साथ,
मरते दम ले लूँ बलाएँ मैं तेरी तसवीर की।

१—शिकार किया हुआ। २—जख़्मी। ३—संसार-वाटिका।
४—मगन। ५—टुकड़े। ६—पिंजड़ा। ७—बिजली। ८—अन्तिम समय।

दोस्त दुश्मन हो गये अपने पराये हो गये।
यह भी इक गर्दिश थी ऐ 'बिसमिल' मेरी त

---

(४५)

मेरी तरफ़ से नज़र फिर गई ज़माने की

वह अब निकालो जो सूरत हो मुँह दिखाने की,
अज़ल(१) के दिन से नजर तुम पे है जमाने की।
कोई हवस(२) न करे उनसे दिल लगाने की,
लिखा गई यही सुर्खी मेरे फिसाने(३) की।
हुजूमे(४) रंजो अलम देख कर वह पूछते है,
तुम्हारे दिल की यह दुनियाँ है किस ज़माने की।
असीरे(५) जुल्फ हिलाता है पाँव की जंजीर,
कही न गिर पडे दीवार क़ैदख़ाने की।
दमे(६) अख़ीर नही कोई पूछनेवाला,
मेरी तरफ से नजर फिर गई ज़माने की।
जो अहले इश्को वफा है वह होशियार रहें,
किसी के दिल मे उमङ्गें है दिल दुखाने की।
अभी वह अहले मुहब्बत का हाल क्या जाने,
अभी हवा नही उनको लगी जमाने की।

१—आदि। २—लालसा। ३—किस्सा। ४—भीड़। ५—कैदी
६—अन्तिम समय।

कहीं भी शीशओ सागर(१) जो हमने देख लिए,
नजर मे फिर गई सूरत शराबख़ाने की ।
ख़ुशी की मुझको ख़ुशी क्या हो ग़म का ग़म क्या हो,
नजर में दो रुख़ी तसवीर है जमाने की ।
वह किसके मुँह में ज़बाँ है जो कह सके "बिसमिल",
मेरी ज़बान नही 'दाग़'(२) के घराने की ।



१—प्याला । २—नवाब मिर्जा दाग़ देहलवी जो मेरे गुरु के गुरु थे ।

राष्ट्रीय-सामाजिक

(१).

जो सतायेगा सताया जायगा

जो सरे दर्बार पाया जायगा,
हर तरह वह सर चढ़ाया जायगा।
मुझको हैरत है किसी बेकस(१) का दिल,
किस तरह तुमसे सताया जायगा।
पुर असर(२) नालों से क्या मतलब है और,
आस्माँ सर पर उठाया जायगा।
आज उनके हाथ मे तलवार है,
क्या लहू मेरा बहाया जायगा।
हम मिलाये जा रहे हैं ख़ाक में,
इस तरह ख़ाका उड़ाया जायगा।
बैठ जावोगे कलेजा थाम कर,
दिल का जब क़िस्सा सुनाया जायगा।

१—दुखी। २—प्रभावशाली।

इस तरफ़ से आनेवाली है सड़क,
घर हमारा भी गिराया जायगा।
ख़ूब है यह हज़रते 'बिसमिल' का कौल,
जो सतायेगा सताया जायगा।

---

(२)

क्या समझ कर मैं करूँ दावा किसी पर ख़ून का

रग क्यो चल कर नही तुम देखते क़ानून का,
आज सुनते है 'सिशन' मे 'कस' होगा ख़ून का।
रो रहे है आज मन्दिर मे यह कह कर बरहमन,
अपनी धोती पर भी साया पड गया पतलून का।
फाग गाता हूँ सरे दर्बार आज़ादी के साथ,
मै नही पाबन्द होली मे किसी कानून का।
रग-बेरगी से अब इन्साफ होता ही नही,
क्या समझ कर मै करूँ दावा किसी पर ख़ून का।
वह यह कहते है कि है भूला हुआ 'लीडर' इसे,
'पानियर' को याद है सारा सबक़ कानून का।
तेगे कातिल से गले मिल-मिल के होली खेल ली,
सुर्ख़रू(१) 'बिसमिल' को लाजिम है कफ़न भी टून का।

१—सफलता प्राप्त।

(३)

देश का फ़ायदा हो काम वह करना अच्छा

जीते जी काम यह दुनिया में है करना अच्छा,
मुल्क के वास्ते मरना हो तो मरना अच्छा।
ख़िद्मते मुल्क मे हरगिज़ नही डरना अच्छा,
मौत यह अच्छी यह हर हाल मे मरना अच्छा।
एक मुद्दत से है मॅझदार मे अपनी क़श्ती,
ऐसी सूरत में है अब पार उतरना अच्छा।
बेहतरो मुल्क की हो बात वह करनी अच्छी,
देश का फ़ायदा हो काम वह करना अच्छा।
देखते-देखते मिट्टी में मिले जाते हो,
कब यह समझोगे कि अपना है उभरना अच्छा।
उनके जीने की जमाने मे ज़रूरत ही नही,
जो समझते है वतन पर नहीं मरना अच्छा।
इस तेरे क़ौल को हम मानते हैं ऐ 'बिसमिल'
देश सेवा के लिए जी से गुजरना अच्छा।

---

(४)

कहीं फिर हो पैदा दुबारा कन्हैया

छुपा है कहाँ जा के प्यारा कन्हैया,
दिखाये तो सूरत हमारा कन्हैया।
बहुत नाम रोशन है उसका जहाँ मे,
कि चमका है बन कर सितारा कन्हैया।
सुदामा को बख्शी ख़ुदाई(१) की दौलत,
ग़रीबों का था बस सहारा कन्हैया।
फिरेगा निगाहों मे फिरता रहा है,
यशोदा की आँखों का तारा कन्हैया।
इधर भी इधर भी निगाहे करम(२) हो
इधर भी इधर भी इशारा कन्हैया।
तेरे हाथ से कंस पापी के सर पर,
चला क़हरो(३) आफ़त का आरा कन्हैया।
तरसती है जलवो(४) को मेरी निगाहे,
दिखा दे अब अपना नजारा कन्हैया।
कन्हैया है प्यारा किसे जानो दिल से !,
मुझे जानो दिल से है प्यारा कन्हैया।

१—ससार। २—कृपा दृष्टि। ३—कोप। ४—ज्योति।

बुरा हाल है देश भारत का 'बिसमिल'
कहीं फिर हो पैदा दोबारा कन्हैया।

---

(५)

हाय क्या वक़्त था कैसा था ज़माना मेरा

अब भी एक एक के लब(१) पर है फ़िसाना(२) मेरा,
क्या जमाना था ज़माने मे ज़माना मेरा।
कोई ग़मख्वार नही कोई मददगार नही,
कौन सुनता है मुसीबत मे फ़िसाना मेरा।
उम्र भर हो गई बरबाद सनद भी न मिली,
लुट गया लुट गया कालिज में ख़ज़ाना मेरा।
नुक्ते। नुक्ते मे है पोशीदा(३) हजारो नुक्ते(४),
दिल अगर है तो सुनो दिल से फिसाना मेरा।
आप हैं दोस्त तो है दोस्त खुदाई मेरी,
आप दुशमन है तो दुशमन है जमाना मेरा।
सारी दुनिया में है मशहूर कहानी तेरी,
सारे आलम मे है मशहूर फ़िसाना मेरा।
याद आते हैं वह अय्याम(५) गुजश्ता 'बिसमिल',
हाय क्या वक़्त था कैसा था जमाना मेरा।

१—ओठ। २—क़िस्सा। ३—छिपा। ४—बारीकी। ५—बीता हुआ जमाना।

(६)

बस वह होगा जो है तक़दीर में होने वाला

हमको मालूम है यह हाल है होने वाला,
बाद मरने के नही कोई भी रोने वाला।
है सलामत अगर आपस के लड़ाने वाले,
इनके होते हुए एका नही होने वाला।
है जिसे अपनी तरक्क़िये मरातिब(१) का ख़याल,
वह नही चैन से दमभर कभी सोने वाला।
कोई अहबाब(२) से कह दे कि परीशाँ न रहे,
बस वह होगा जो है तकदीर मे होने वाला।
उनकी ग़फलत पे हँसें क्यों न ज़माने वाले,
जो बुरे हाल पर अपने नही रोने वाला।
कोई ख़ंजर लिए कहता है कि हुशियार रहो,
इम्तिहाँ आज तुम्हारा भी है होने वाला।
हर घड़ी सर पे वही बारे(३) अलम(४) रहता है,
कोई मुझ सा न मिला बोझ का ढोने वाला।
देखकर मेरा तड़पना कोई बोला 'बिसमिल',
ख़त्म यह आज तमाशा नही होने वाला।

१—पदवी। २—मित्र। ३—बोझ। ४—रंज।

(७)

कोई दुनिया में नहीं हमको मिटाने वाला

गिर पड़े हम नही अब कोई उठाने वाला,
काम आफ़त मे भला कौन है आने वाला।
कहने-सुनने के लिए यो तो है लाखों रहबर(१),
ठोक रस्ता नही कोई भी बताने वाला।
खुद मिटा देगी ज़माने को हमारी हस्ती(२),
कोई दुनिया मे नही हमको मिटाने वाला।
चैन लेने नहीं देता कभी गरदूँ(३) हो कि बख़्त(४),
जिसको देखो वही हमको है सताने वाला।
मर गये हम तो हुआ हाल यह मर जाने पर,
कोई मिलता ही नही लाश उठाने वाला।
क्या समझ कर हो फ़क़त अहले जमी के शाकी(५),
आसमाँ भी तो हमीं को है मिटाने वाला।
ख़ून रग-रग में जो दौड़े तो चले काम मगर,
कोई मिलता ही नहीं जोश दिलाने वाला।
ख़ाक में मुझको मिलाते हैं अइज़्ज़ा(६) 'बिसमिल',
लेकिन उनसे नही कोई भी मिलाने वाला।

१—पथप्रदर्शक। २—क़ायम रहना। ३—आकाश। ४—भाग्य। ५—शिकायत करने वाला। ६ – कुटम्बी।

(८)

देखते देखते बदला है ज़माना कैसा

हाथ मलता है यह कह-कह के ज़माना कैसा,
जब नहीं ऐश तो इशरत(१) का तराना कैसा।
सुन चुके सुन चुके रूदाद(२) हमारे ग़म की,
कहिए कहिए यह है पुर दर्द(३) फ़िसाना कैसा।
बह गये सैकड़ो आँसू शबे(४) ग़म आँखों से,
क़ाफ़िला आज हुआ घर से रवाना कैसा।
ख़ल्क़(५) मे बद्ह(६) में दुनिया में ज़माने भर में,
है मेरा आपका मशहूर फ़िसाना कैसा।
क्या वह नावक में है नावक जो बहक जाता हो,
जो ख़ता हो वह निशाने मे निशाना कैसा।
अब न वह हम है न वह अहले वतन ऐ 'बिसमिल',
देखते देखते बदला है ज़माना कैसा।

१—आनन्द। २—हाल। ३—दर्द से भरा हुआ। ४—दुःख की रात। ५—संसार। ६—संसार।

(९)

ज़िन्दगी का लुत्फ़ जीने का मज़ा मिलता नहीं

यह न पूछो हमसे क्या मिलता है क्या मिलता नही,
और सब मिलता है कालिज में ख़ुदा मिलता नहीं।
क्यों न बैठें वादिये(१) ग़ुर्बत(२) में हिम्मत हार कर,
मंज़िलों तक हमको मंज़िल का पता मिलता नहीं।
सोचते है मर के हम हासिल करें ग़म से निजात(३),
ज़िन्दगी का लुत्फ़ जीने का मज़ा मिलता नहीं।
मंज़िले मक़सूद(४) पर पहुँचा दे इतमीनान से,
कोई हमको इस तरह का रहनुमा मिलता नहीं।
लुत्फ़ उठाने के लिए चेले भी होते है शरीक,
रह के मन्दिर मे गुरूजी तुमको क्या मिलता नही।
दिल को आईना बनाओ तो बराये आरज़ू,
दो जिला(५) इसमें कि बे इसके ख़ुदा मिलता नहीं।
उनसे जो मिलता है ऐ 'बिसमिल' वह पाता है ख़िताब,
नक़्द तो लेकिन किसी को यक टका मिलता नही।

१—घाटी। २—परदेश। ३—छुटकारा। ४—इरादा किया हुआ स्थान। ५—साफ़ करना।

(१०)

यह भी है कोई जीना बेकार जी रहे हैं

दुनिया यह जानती है दुनिया में जी रहे है,
हम पी रहे है पानी वह चाय पी रहे है
जोशे जुनूं(१) यही है तो तार तार होगा,
हम क्या समझ कर अपने दामन को सी रहे हैं।
ग़ुरबत(२) में कह रहा था यह आज यक मुसाफ़िर,
जो दूर है वतन से वह ख़ाक जी रहे है।
मिलती नही गिज़ाये इसका गिला अबस(३) है,
घर बैठे आप पानी नल का तो पी रहे है।
लाखों तरह के किस्से लाखों तरह के झगड़े,
यों लोग जी रहे है तो ख़ाक जी रहे है।
कहते हैं किसको धोती पाजामा नाम किसका,
पतलून फट गई है पतलून सी रहे है।
मौत आये हमको 'बिसमिल' ग़म से तो मुख़लिसी(४) हो,
यह भी है कोई जीना बेकार जी रहे हैं।

१—पागलपन। २—परदेश। ३—बेकार। ४—छुटकारा।

(११)

वह चक्कर में पड़ा जो फँस गया साहब के चक्कर में

रहा करते हैं क्या क्या रात दिन अहबाब(१) चक्कर में,
समाया जब से 'सर' होने का सौदा बेतरह सर में।
उसे आराम दम भर मिल नहीं सकता कभी घर में,
जिसे जीना हो दफ़्तर में जिसे मरना हो दफ़्तर में।
वतन की जो करे बे लाग ख़िदमत बस वह लीडर है,
यह ख़ूबी हो न लीडर में तो क्या ख़ूबी है लीडर में।
ज़माने को यह देती है सबक़ गर्दिश ज़माने की,
वह चक्कर में पडा जो फँस गया साहब के चक्कर में।
असीराने(२) क़फ़स बाज़ आओ अब फ़िकरे रेहाई से,
न वह है जोर बाज़ू में न वह क़ूवत है शहपर(३) में।
करूं अरमान किस बिरते पे लुत्फो ऐशो राहत का,
मलालो, रंजो, ग़म जब लिख दिये मेरे मुकद्दर(४) में।
उडाते हैं सरे महफ़िल नई तहज़ीब(५) का ख़ाका,
तआज्जुब है कि 'बिसमिल' आगए रँगे 'अकबर'(६) में।

१—मित्र। २—क़ैदी। ३—परो। ४—तकदीर। ५—सभ्यता।
६—स्वर्गीय महाकवि 'अकबर' इलाहाबादी।

(१२)

लुट गई—मिट गई बहारे वतन

(एक क़ाफ़िया)

उड के कहता है यह ग़ुबारे वतन,
ख़ाक मे मिल गई बहारे वतन।
आ गई—छा गई चमन में ख़िज़ाँ,
लुट गई—मिट गई बहारे वतन।
दश्ते(१) ग़ुर्बत(२) में क्यों न घबराये,
जिस की आँखों में हो बहारे वतन।
सब्र से काम लो वतन वालो,
फिर कभी आएगी बहारे वतन।
क्यों न फूले-फले, निहाल न हो,
जिस की क़िस्मत में हो बहारे वतन।
मैं वतन में नहीं मगर क्या ग़म,
है मेरे सामने बहारे वतन।
मेरी आँखें तरस गईं क्या क्या,
नज़र आए कहीं बहारे वतन।

१—जंगल। २—परदेश। ३—तबीयत।

तबा(१) रंगी से लाये है 'बिसमिल'
खींच कर नक़शये बहारे बतन।

---

(१३)

वह कुछ समझे नहीं अपने को जो अच्छा समझते हैं

जो अच्छे है बुरों को हर तरह अच्छा समझते हैं,
मगर वह सामने अपने किसी को क्या समझते हैं।
हम अपनी मौत को हर हाल में अच्छा समझते हैं,
तमाशा ज़िन्दगी है ज़िन्दगी को क्या समझते हैं।
ज़माने में उन्हें अच्छा ज़माना कह नहीं सकता,
ज़माने भर से जो अपने ही को अच्छा समझते हैं।
नहीं मालूम नादानी हमारी या तुम्हारी है,
हमें तुम क्या समझते हो तुम्हें हम क्या समझते हैं।
हुआ मालूम हम को इतने दिन दुनिया में रहने पर,
वह कुछ समझे नही अपने को जो अच्छा समझते हैं।
लगाएँ तीर दिल पर वह चलाएँ तेग़(२) गर्दन पर,
हम अपने सामने 'बिसमिल' किसी को क्या समझते हैं।

१—सूझ। २—तलवार।

(१४)

हम अपनी आबरू ख़ुद खो रहे हैं

वतन वाले अभी तक सो रहे हैं,
अबस(१) यह वक़्त अपना खो रहे हैं।
हँसी रुकती न थी दुनिया में जिन की,
वही अब कुछ समझ कर रो रहे हैं।
नहीं कुछ हाथापाई का नतीजा,
यह क्यों आपस में झगड़े हो रहे हैं।
मिला सर्कार की ख़िद्मत का इनआम,
कि बेसर है मगर 'सर' हो रहे हैं।
यह कह दे कोई फ़रियादी रहें चुप,
अभी बँगले में साहब सो रहे हैं।
कोई इमदाद(२) को उठता नहीं अब,
अकेले बैठ कर हम रो रहे हैं।
हमें था नाज़ जिनकी दोस्ती पर,
वही दुशमन हमारे हो रहे हैं।
नही इलज़ाम इसका कुछ उन्हीं पर,
हम अपनी आबरू ख़ुद खो रहे हैं।

१—बेकार। २—सहायता।

जहाँ देखो वही है ज़िक्र इनका,

बहुत मशहूर 'बिसमिल' हो रहे हैं॥

---

(१५)

वही हो जायँगे ठंडे जो हमसे दिल में जलते हैं

यह आलम देख कर क्या क्या कफ़े(१) अफ़सोस मलते है,

हमारे दिल के अरमाँ सख़्त मुशकिल से निकलते है।

बह पौदे मग़रबो(२) आबो-हवा ही मे जो पलते है,

जमीने मशरक़ी(३) पर फूलते है ख़ाक फलते हैं।

कहाँ तलवार का साया कहाँ कानून की बातें,

कभी पलते थे हम उसमे मगर अब इसमे पलते हैं।

ज़माने में हमेशा गर्म महफ़िल रह नही सकती,

वही हो जायँगे ठण्डे जो हमसे दिल में जलते है।

यह चन्दा है वह चन्दा है कुछ इसमें दो कुछ उसमें दो,

मिला कर हाथ साहब से कफ़े अफ़सोस मलते हैं।

मदारी डुगडुगी पर अपनी ख़ूब इनको नचाता है,

यह बन्दर की तरह स्टेज पर क्या क्या उछलते हैं।

१—हाथ। २—पश्चिमी। ३—पूर्वी।

तरक्की पा गया बेशक़ नई तालीम से फ़ैशन,
मगर हम है कि गिर कर भी समझते हैं सम्हलते हैं।
बला ठहरे नई तहज़ीब के पुतले भी पे 'बिसमिल',
कि जिस साँचे मे ढाले जाते है यह उसमें ढलते हैं।

---

(१६)

हमीं को ताक लिया सब ने अब ज़माने में

(एक क़ाफ़िया)

यह कह के मह्ले(१) है आँसू कोई बहाने मे,
मुझे भी ऐश था हासिल किसी ज़माने में।
मज़ा इसे बहुत आने लगा सताने में,
मिटा रहा है ज़माना हमें ज़माने में।
न ज़ोर है, न वह ज़र है, न इल्म है, न हुनर,
हमारा नाम ही बाक़ी है अब ज़माने में।
हम अपने हाल पे रोते है बैठ कर क्या क्या,
उड़ाई जाती है ऐसी हंसी जमाने में।
यों ही जियेंगे जो बेनामो, बे निशाँ होकर,
हमारा नामो-निशाँ रह चुका जमाने मे।

१— मगन।

किसी ज़माने में जो बादशाहे वक़्त रहे,
वह ख़ाक छानते हैं आज कल ज़माने में।
अगर यह सच है कि है इनकिलाब(१) आलम को,
हमारे दिन भी फिरेंगे किसी जमाने मे।
हम इसको जानते हैं यह हमें भी है मालूम,
कि साथ देगा न कोई गिरे ज़माने में।
सबब यह है जो निशाना बने है ऐ 'बिसमिल',
हमीं को ताक लिया सबने अब ज़माने में।

---

(१७)

आज मिट्टी में मिली जाती है सब शाने वतन

बेहतरी चाहते हो अपनी जो याराने(२) वतन,
तुम बनो फ़ख्रे(३) वतन, शाने वतन, जाने वतन।
एक का एक नज़र आता है दुशमन मुझको,
दोस्ती भूल गये अपनी वह याराने वतन।
हसरते दीद(४) नहीं जिनको नही वह आँखें,
दिल वह दिल ही नही जिसको नहीं अरमाने वतन।
शान थी सारे ज़माने में बहुत कुछ कल तक,
आज मिट्टी में मिली जाती है सब शाने वतन।

१—उलट-फेर। २—मित्रवर। ३—गौरव। ४—देखना।

देख कर हाल वतन का अभी रोए क्या है,
और रोएँगे अभी सोच के याराने वतन।
आते-जाते रहे हर वक़्त हमारे दिल मे,
बैठते-उठते हमेशा रहे अरमाने वतन।
दिल तड़प उट्ठा हुए आँखों से आँसू जारी,
याद परदेश में आए जो अज़ीज़ाने(१) वतन।
जीते जी क़द्र नही अहले वतन मे 'बिसमिल',
याद मरने पे करेंगे मुझे याराने वतन।

---

(१८)

अब तो आपस में लड़ाई खूब है

हर तरफ़ जंग(२) आज़माई ख़ूब है,
लफ़्ज़ो मानी पर लड़ाई ख़ूब है।
लाट साहब से भी मिल लेता हूँ मैं,
हर जगह मेरी रसाई(३) ख़ूब है।
बाद लड़ने के वह कहते हैं मिलो,
उन के भी दिल की सफ़ाई ख़ूब है।

१—कुटुम्बी। २—लड़ाई। ३—पहुँच।

वोट मिल जाए ख़ुदा की राह पर,
शहर भर की यह गदाई(१) ख़ूब है।
तज़किरा(२) मिलने-मिलाने का नही,
अब तो आपस में लडाई ख़ूब है।
है यही तौक़े(३) ग़ुलामी की सनद,
ख़ूब है गरदन की टाई ख़ूब है।
ख़ल्क़ (४) हो कर क़ायले क़ुदरत नहीं,
यह ख़ुदा की भी ख़ुदाई(५) ख़ूब है।
उन के दर(६) से मिलने वाला कुछ नहीं,
यह गदाई भी गदाई ख़ूब है।
हो गया 'बिसमिल' का सर तन से अलग,
तेग़े क़ातिल मे सफ़ाई ख़ूब है।

---

(१९)

बदनाम वही होंगे जो बदनाम करेंगे

हम कुछ न करेंगे यही यक काम करेंगे।
पी कर मये(७) हुब्बे(८) वतन अब नाम करेंगे॥

१—फ़क़ीरी। २—चर्चा। ३—हँसुली। ४—पैदा होकर
५—ससार। ६—दर्वाज़ा। ७—शराब। ८—प्रेम।

आराम की हसरत है तो तकलीफ़ उठायें,
तकलीफ़ उठायेंगे तो आराम करेंगे।
हम सुबह को बँगले से चले आए यह कह कर,
साहब से मुलाक़ात सरे शाम करेंगे।
बदनाम जो है उनका कभी नाम न होगा,
कुछ नाम किया है अभी कुछ नाम करेंगे।
बेकार न बैठेंगे, न बैठेंगे कभी हम,
अरबाबे(१) वतन के लिए कुछ काम करेंगे।
आग़ोश(२) मे दिल होगा तो आराम कहाँ का,
पहलू मे न दिल होगा तो आराम करेंगे।
'बिसमिल' को न बदनाम करे मान लें कहना,
बदनाम वही होगे जो बदनाम करेंगे।

---

(२०)

सांस लेने को भी हासिल नहीं आज़ादी है

नाले कहते हुए निकले हमें आज़ादी है,
क़ैद में तो वह रहे क़ैद का जो आदी है।
हम न आज़ाद हैं हम को न वह आज़ादी है,
बन्दिशे(३) क़ैदे ग़मो-रंज से बर्बादी है।

१—वतन के रहने वाले। २—गोद। ३—जकड़ना।

आज आलम नज़र आया वहाँ बर्बादी का,
कल जहाँ हमने यह देखा था कि आबादी है।
हमको पाबन्द अज़ल(१) ही से किया .कुदरत ने,
साँस लेने को भी हासिल नहीं आज़ादी है।
बेकसों(२) की कभी फ़रियाद न सुननेवाले,
इसको सुन ले कि ज़माना तेरा फ़रियादी है।
उनकी तक़दीर बड़ी उनकी है तदबीर अच्छी,
रह के दुनिया मे जिन्हें फ़िक्र से आज़ादी है।
इस ज़माने में कुछ ऐसे भी है शायर 'बिसमिल',
होके शागिर्द जिन्हें दावए उस्तादी है।

---

(२१)

बहार याद रही हम खिज़ां को भूल गये

फ़ना(३) के बाद हम अपने निशाँ को भूल गये,
ज़मी को भूल गये आसमाँ को भूल गये।
सवार सर पे हुआ जिनके भूत यूरुप का,
वह रहकर हिन्द में हिन्दोस्ताँ को भूल गये।

१—आदि। २—अनाथ। ३—नाश होना।

बयान क्या करें कुछ याद ही नही आती,
कि हम तो गुज़री हुई दास्ताँ को भूल गये।
क़फ़स(१) मे लुत्फ़ मिला वह हमे असीरी(२) का,
चमन को भूल गये आशियाँ को भूल गये।
समाँ निशात(३) का आँखो में छा गया ऐसा,
बहार याद रही हम खिज़ाँ को भूल गये।
जगह है ख़ास अभी तक जो बज़्म(४) में ख़ाली,
ज़रूर आप किसी मेहरबाँ को भूल गये।
वतन की क़द्र कुछ ऐसी है दिल में ऐ 'बिसमिल'
कि इसके सामने सारे जहाँ को भूल गये।

---

(२२)

धूनी रमाये बैठे हैं दफ़्तर के सामने

आक़ा(५) लिहाज़ क्या करे नौकर के सामने,
चलती नही किसी की भी अफ़सर के सामने।
फ़ैशन के साथ चाहिए यों ज़िन्दगी का लुत्फ़,
मिस भी कोई ज़रूर हो मिस्टर के सामने।

१—पिंजड़ा। २—क़ैद। ३—ख़ुशी। ४—सभा। ५—मालिक।

तहज़ीबे मग़रीबी(१) में कहाँ वह लिहाज़ो शर्म,
बीबी से बात करते हैं फ़ादर के सामने।
कबतक जगह न पायेंगे हम इस उम्मीद पर,
धूनी रमा के बैठे हैं दफ़्तर के सामने।
ऐसा न हो कि छाप दे अख़बार में कहीं,
सर(२) गोशियाँ करो न एडीटर के सामने।
बर्बादियों का इससे नही बढ़ कर अब सबूत,
कूड़ा पड़ा हुआ है मेरे घर के सामने।
रिस-रिस के क्यों बहे न मेरे दिल का आबला,
रहता है रात-दिन तेरे नश्तर के सामने।
इस पर है ख़ास तौर से सरकार की नज़र,
क्यों 'पानियर' झुके कभी 'लीडर' के सामने।
'बिसमिल' मिलेगी दाद वहीं इस कलाम(३) की,
चल कर सुनाओ तुर्बते(४) 'अकबर' के सामने।

---

(२३)

हमारे लिए बस हमारा वतन है

अनोखा निराला हमारा वतन है,
हमे जानो-दिल से भी प्यारा वतन है।

१—पश्चिमी। २—कानाफूसी। ३—कविता। ४—क़ब्र।

न आलम(१) से मतलब न दुनिया से मतलब,
हमारे लिए बस हमारा वतन है।
मुसीबत भी आफ़त भी ज़ुल्मो-सितम(२) भी,
तेरे वास्ते सब गवारा वतन है।
हमें हो तमन्नाय(३) जन्नत(४) तो क्यों हो,
कि जन्नत से बढ़कर हमारा वतन है।
ज़माने से तुझको नहीं कुछ सहारा,
ज़माने को तेरा सहारा वतन है।
निगाहों में फिरता है मन्ज़र(५) वतन का,
सफ़र में भी हमराह(६) प्यारा वतन है।
मिले ग़म यहाँ हमको 'बिसमिल' तो क्या ग़म
हमारा वतन फिर हमारा वतन है।

---

(२४)

दोस्ती कर लीजिए या दुशमनी कर लीजिए

चलते-फिरते क़द्र अच्छे वक्त की कर लीजिए,
कोई डिगरी ले के फ़ौरन नौकरी कर लीजिए।

१—संसार। २—जुल्म। ३—इच्छा। ४—वैकुंठ। ५—दृश्य।
६—साथी।

चार दिन की ज़िन्दगी में आप को है अख़्तियार
दोस्ती कर लीजिए या दुशमनी कर लीजिए।
क़स्द(१) होता है यही हालाते आलम देख कर,
खा के कुछ सो जाइए अब ख़ुदकुशी कर लीजिए।
ख़ल्क(२) में बेकार रहने का नतीजा कुछ नहीं,
लीडरी का है ज़माना लीडरी कर लीजिए।
मशरक़ी(३) तहज़ीब(४) की इज्ज़त नहीं वक़अत(५) नहीं,
वज़ा(६) अपनी शौक़ से अब मग़रबी कर लीजिए।
कोर्ट, स्टेशन, क्लब सरकस की है तख़सीस(७) क्या,
जिस जगह साहेब मिले बस बन्दगी कर लीजिए।
हज़रते 'बिसमिल' न होंगी दोनों बातें एक साथ,
नौकरी कर लीजिए या शायरी कर लीजिए।

---

(२५)

बहुत कुछ आप कर सकते हैं
क्या कुछ कर नहीं सकते।

जो अपने मुल्क या अपने वतन पर मर नहीं सकते,
वह मेरी राय में हरगिज़ तरक्की कर नहीं सकते।

१—विचार। २—दुनिया। ३—पूर्वी। ४—सभ्यता। ५—इज्ज़त। ६—ढंग। ७—विशेषता।

किसी ने नश्तरे ग़म, खंज़रे गम यों चुभोया है,
हमारे ज़ख्मे दिल, ज़ख्मे जिगर अब भर नहीं सकते।
.खुशामद मैं किये जाता हूँ यह दिल में समझता हूँ,
बहुत कुछ आप कर सकते है क्या कुछ कर नहीं सकते।
नतीजा क्या है धमकाने का खंज़र क्यों उठाते हो,
क़ज़ा जब तक न आएगी हमारी मर नहीं सकते।
वह हमको नालओ फ़रियाद से अब मनआ करता है,
सितम यह है कि इज़हारे(१) सितम भी कर नहीं सकते।
भरेंगे दूसरों के जख्मे दिल क्या फाक़ा मस्ती में,
यह आलम है कि अपना पेट भी हम भर नही सकते।
ज़माना जानता है यह खरी कहने में यकता हैं,
.खुशामद हज़रते "बिसमिल" किसी की कर नहीं सकते।

१—ज़ाहिर करना।

व्यंग्य

फुटकर

(१)

वह फ़रमाते हैं तुझको रंग ही लाना नहीं आता,
डिनर में साथ सब के बैठ कर खाना नहीं आता।
कभी पूछे सितम क्या है, कभी पूछे करम(१) क्या है,
जो ऐसा नासमझ हो उसको समझाना नही आता।
अब इसकी बहस ही क्या है न वह आयें, न हम जायें,
उन्हें आना नही आता, हमें जाना नहीं आता।
उसे दुनिया कहे क़ातिल मगर हम कह नही सकते,
जिसे अच्छी तरह 'बिसमिल''को तड़पाना नहीं आता।

(२)

इसे .कुरबान(२) उसे चाहनेवाला पाया,
हमने एक-एक को बस तालिबे(३) दुनिया पाया।
दहशतो ख़ौफ़ के वायस(४) से ज़बाँ भी न खुली,
मैंने गर्दन में जो क़ानून का फंदा पाया।

१—कृपा। २—चाहनेवाला। ३—गाहक। ४—सबब।

अपनी ही अक़्ल पै मौक़ूफ़(१) है आलम की शिनाख़्त,
हमने जैसा जिसे समझा उसे वैसा पाया।
मैं जो दरबार से निकला तो जनाबे "बिसमिल"
पूछा एक-एक ने यह मुझसे कहो क्या पाया।

(३)

रहा जो दोस्त बरसों दोस्ती का हक़ नहीं समझा,
उसे दुश्मन समझ कर मैं तो मारे(२) आस्तीं समझा।
हज़ारों लफ़्ज एक एक लफ़्ज़ में भी सैकड़ों मानी,
तुम्हारी बात सब समझे मगर मैं कुछ नहीं समझा।
उसे हसरत न बाक़ी रह गई फिर दूसरे घर की,
कि जिसने तुमको अपने ख़ानये दिल में मकीं(३) समझा।
किसी का डर नहीं यह बरमला(४) कहता हूँ ऐ 'बिसमिल',
जो मुझको कुछ नहीं समझा उसे मैं कुछ नहीं समझा।

(४)

लाट साहब का ज़माने को अदब करना पड़ा,
जो न करना था सरे कौंसिल वह सब करना पड़ा।
जानता हूँ मैं खुशामद का नतीजा कुछ नहीं,
यह मुझे बेफ़ायदा यह बे सबब करना पड़ा।

१—निरभर। २—बाँह का सांप। ३—रहनेवाला। ४—साफ़।

जब न राज़ी हम हुए "बिसमिल" शहादत(१) के लिए,
तो सफ़ीना काट कर उनको तलब करना पड़ा।

(५)

हमको मरने के सिवा ख़ल्क़(२) में चारा क्या था,
थी क़ज़ा सर पे तो जीने का सहारा क्या था।
देखते-देखते वह बन गये घर के मालिक,
अब यह फ़रमाते है हमसे कि तुम्हारा क्या था।
न तो 'सरविस' की तमन्ना है न परवाये 'डिनर',
आप से हज़रते 'बिसमिल' को सहारा क्या था।

(६)

गुञ्चये(३) दिल का बहर तौर है खिलना अच्छा,
काम निकले तो है सरकार से मिलना अच्छा।
सफ़हये दह्र(४) से मिट जाय निफ़ाक़ ऐ 'बिसमिल'
हो ग़लत हर्फ़ तो उस हर्फ़ का छिलना अच्छा।

(७)

आलम मेरी नज़र से न क्यों हो गिरा हुआ,
दुनिया फिरी हुई है ज़माना फिरा हुआ।
महफ़िल में कह रहे हैं वह 'बिसमिल' को देखकर,
आने से इनके अपना मज़ा किरकिरा हुआ।

१—गवाही। २—संसार। ३—कली। ४—संसार।

(८)

पेट भरने से ग़रज़ है पेट भरना चाहिए,
नौकरी मिल जाय तो कुप्पे की सूरत फूल जा।
या क्लब की सिम्त चल दे या सुये(१) स्कूल जा,
है तरक्की की तमन्ना दीनो-दुनिया भूल जा।

(९)

थाह बहरे(२) ग़मे उल्फ़त की कोई पा न सका,
जो हुआ ग़र्क़(३) किनारे पे वह फिर आ न सका।
उसको समझाते हो किस वास्ते तुम ऐ 'बिसमिल'
कि ज़माने मे ज़माना जिसे समझा न सका।

(१०)

कहीं घर को न अपने भूल जाना,
समझ कर, सोच कर स्कूल जाना।
कोई यह बाग़ में फूलों से कह दे,
बुरा है रंगो-बू पर फूल जाना।
वही होगा .खुदा की याद में मस्त,
जिसे आयेगा .खुद को भूल जाना।
.खुदी(४) में लुत्फ़ क्या उल्फ़त का 'बिसमिल'
तुम्हें लाज़िम था .खुद को भूल जाना।

१—तरफ़। २—समुद्र। ३—डूबना। ४—घमण्ड।

(११)

रवा(१) है बुलबुले शैदा चमन के वास्ते मरना,

वतन के वास्ते जीना वतन के वास्ते मरना।

वतन से दूर क्या परदेश जायँ हज़रते 'बिसमिल'

नही बेहतर कही दो गज़ कफ़न के वास्ते मरना।

(१२)

आख़िर को मुझे मौत के क़ानून ने घेरा,

हैज़े से बची जान तो ताऊन ने घेरा।

(१३)

मैने देखा 'पानियर' में आज यक मज़मून था,

नाम को मज़मून था और अस्ल मे क़ानून था।

(१४)

वह इसका राज़(२) समझा वह इसका पेच समझा,

दुनिया में जिसने रह कर दुनिया को हेच समझा।

(१५)

यह हर पहलू से बेहतर है यही है बिल(३) यक़ीं अच्छा,

कि मरना जल्द अच्छा है बहुत जीना नहीं अच्छा।

हज़रते दिल आप हैं नादान हम समझायें क्या,

ग़म ही जब मिलता है खाने को तो खाना खायें क्या।

१—जायज़। २—भेद। ३—निश्चय।

(१७)

ज़ाहिरी अल्ताफ़(१) पर एक एक मायल(२) हो गया,
आपके बर्ताव का बन्दा भी क़ायल हो गया।

(१८)

मिलेंगे हम तो यह साहब से काम निकलेगा,
कि 'पानियर' में हमारा भी नाम निकलेगा।

(१६)

नहीं पाबन्द दीनो-मज़हब का,
मैं पुजारी हूँ अपने मतलब का।

(२०)

मुद्दआ(३) था पेट भरने से वह हासिल हो गया,
यानी इंगलिश पढ़के मैं दफ़्तर में दाख़िल हो गया।

(२१)

जो उक़्दये(४) मुश्किल है वह खोला नहीं जाता,
यह हाल हुआ अपना कि बोला नहीं जाता।

(२२)

सहल लिख-लिख कर यह क्या अच्छा तमाशा कर दिया,
हज़रते "बिसमिल" ने तो उर्दू को भाषा कर दिया।

१—कृपा। २—पसन्द करना। ३—मतलब। ४—गिरह।

(२३)

हर घड़ी बैठते-उठते हैं वही नाम की बात,
बात तो जब है करें आप कोई काम की बात।

(२४)

बरंगे(१) नकहते(२) गुलशन(३) परेशानी से क्या मतलब,
मुझे सैरे बहारे आलमे फ़ानी(४) से क्या मतलब।
रोलाता मैं नहीं महफ़िल में रोतों को हँसाता हूँ,
ग़ज़लगोई(५) से मतलब मरसिया(६) ख़्वानी से क्या मतलब।
हमेशा बैठते-उठते ग़रज़ है फ़ौजदारी से,
जो दीवाना है 'बिस्मिल' उसको दीवानी से क्या मतलब।

(२५)

दूर है सहने(७) चमनसे गिर के पत्ती की तरह,
क़ौम पिघली जा रही है मोमबत्ती की तरह।

(२६)

जिसको देखो वही दुनिया मे है अब जंग(८) पसन्द,
लेकिन आता नहीं मुझको कभी यह ढंग पसन्द।
रखते हैं हजरते "बिसमिल" तो ज़राफ़त(९) का ख़याल,
है यही तर्ज़ यही ढंग यही रंग पसन्द।

१—प्रकार। २—सुगन्ध। ३—बाग़। ४—मिटने वाला। ५—आनन्दमयी कविता। ६—रुलानेवाली कविता। ७—आँगन। ८—लड़ाई। ९—व्यंग।

(२७)

लै कि सूरत रहै दरबार में बे सुर हो कर,

शेख़जी कुछ न हुए ख़ानबहादुर होकर।

(२८)

क्या कीजिएगा हाले दिले ज़ार(१) देख कर,

मतलब निकाल लीजिए अख़बार देख कर।

(२९)

किस लिए बदनाम .खुद हो और को बदनाम कर,

काम करने का मज़ा जब है कि दिल से काम कर।

(३०)

काम करना हमको आया काम करना देख कर,

पाँव का पड़ना था लाज़िम पाँव धरना देख कर।

वक़्ते आख़ीर कर सके कुछ भी न अहबाबो(२) अज़ीज़,

हाथ मलते रह गये "बिस्मिल" का मरना देख कर।

काम उनका देख कर और उनका धन्दा देख कर,

होगया चुपचाप क्या कहता ये बन्दा देख कर।

हज़रते 'बिस्मिल' नज़र आयेंगे सौ बहुरूपिये,

तुमको देना चाहिए ऐसों को चन्दा देख कर।

(३१)

रख दिया रिश्ता वफ़ा का खटमलों ने तोड़ कर,

लेटता हूँ मैं ज़मी पर चारपाई छोड़ कर।

१— बुरी अवस्था। २—मित्रगण।

हज़रते "बिस्मिल" को अब है क्या ग़रज़ क्या वास्ता,
होगये है यह अलग दुनिया से नाता छोड़ कर।

(३२)

बुत सदा(१) देते हैं यह पाप है तू पाप न कर,
देख मन्दिर में दिखाने के लिए जाप न कर।
और कामों में तो है ख़ातमा अच्छा "बिस्मिल"
शायरी मे कभी भूले से '.फुलिसटाप' न कर।

(३३)

मुझे पसन्द न आई जो मेम की आवाज़।
तो हर तरफ़ से उठी 'शेम शेम' की आवाज़।

(३४)

यह किसने कह दिया कि ज़माने से बैर कर,
दुनिया में आगया है तो दुनिया की सैर कर।

(३५)

होगया नाचार मैं मजबूरिये दिल देख कर,
ख़िज़्(२) चलते होगये कालिज की मंज़िल देखकर।
इसमें कोई राज़ है इसमें है कोई ख़ास बात,
हम ग़ज़ल पढ़ते हैं 'बिस्मिल' रंगे महफ़िल देखकर।

१—आवाज़। २—पैग़म्बर का नाम है जो भूले भटको को रास्ता दिखाने के लिए मशहूर हैं।

(३६)

पढ़ कर अंगरेज़ी वह बैठें किसके पहलू की तरफ़,
आप 'हिन्दी' की तरफ़ हैं मैं हूँ 'उर्दू' की तरफ़।
काँप उट्ठे जिस्म सारा फूल जायें हाथ-पाँव,
देख लें साहब अगर ग़ुस्से से बाबू की तरफ़।

(३७)

मुस्तक़िल(१) होकर रहे साहब भला किसकी तरफ़,
यह कभी उसकी तरफ़ हैं यह कभी इसकी तरफ़।
मुझसे पूछो तो पते की बात मैं कह दूँ अभी,
जाग उट्ठी उसकी किस्मत वह हुए जिसकी तरफ़।
मेरे नाम आया है ऐ 'बिसमिल' यह एक साहब का हुक्म,
'इन्डियन' होकर न तुम देखा करो "मिस" की तरफ़।

(३८)

लीडर का रोना एक तरफ़, पबलिक का रोना एक तरफ़,
दोनों का असर क्या रखता है, सरकार का होना एक तरफ़।
वह क़द्र नहीं कुछ भी करते, कुछ भी नहीं उनकी नज़रों में,
जान अपनी खोनी एक तरफ़, दिल अपना खोना एक तरफ़।
हँसता है ज़माना दिल में इसे, सोचो तो सही, समझो तो सही,
ऐ शेख़ो बरहमन अब रक्खो, मज़हब का रोना एक तरफ़।

१—स्थायी।

आलम से नहीं कुछ हो सकता, पत्थर की लकीर इसको समझो।
दुनिया का होना एक तरफ़, सरकार का होना एक तरफ़।
क्या मन्ज़रे(१) इबरत(२) वह भी है, दुनिया के लिए आलम के लिए।
क़ातिल का हँसना एक तरफ़, 'बिसमिल' का रोना एक तरफ़।

(३९)

रात को दिन दिन को वह यों रात करते ख़ूब हैं,
काम कम करते हैं लेकिन बात करते ख़ूब हैं।
हज़रते "बिसमिल" तो क्या क़ायल ज़माना हो गया,
बन्दा(३) परवर मिल के सब से घात करते ख़ूब हैं।

(४०)

हक़ तो यह है कोई सूरत हक़नुमा(४) मिलती नहीं,
मैं भटकता हूँ मगर राहे ख़ुदा मिलती नहीं।
'डाक्टर(५) झा' के दवा ख़ाने में है सब कुछ मगर,
मौत की ऐ हज़रते 'बिसमिल' दवा मिलती नहीं।

(४१)

सरे दरबार कहते हैं हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं,
तरक़्क़ी क़ौम की चाहें जो दुनिया में कम ऐसे हैं।
कहीं का भी न रक्खा हमको इस हम-तू ने ऐ 'बिसमिल
यही सब की ज़बाँ पर है हम ऐसे हैं हम ऐसे हैं।

१—दर्शनीय। २—शिक्षा-योग्य। ३—श्रीमान्। ४—ईश्वरीय मार्ग बताने वाला। ५—श्रीयुत कृष्णराम झा जो प्रयाग के प्रसिद्ध डाक्टर है।

(४२)

ख़ूगरे(१) ग़म हो गये अहसासे(२) ग़म कुछ भी नहीं,
सर उठायें किस तरह जब हममें दम कुछ भी नहीं।
कहनेवालों से कहें क्या हमको जो चाहें कहें,
हम तो ऐ 'बिसमिल' यही कहते है हम कुछ भी नहीं।

(४३)

रहरौ(३) यह क्यों कहें किसी राही के साथ हैं,
दुनिया मे जिस जगह है तबाही के साथ हैं।
मन्जिल किधर है इसपे हमारी नजर नहीं,
जो राह में मिला उसी राही के साथ हैं।
'बिसमिल' मिलेगा पेरा ज़माने मे मिल चुका,
हम है तबाह हाल तबाही के साथ हैं।

(४४)

बहारे गुल का आलम देखकर सर अपना धुनता हूँ,
मेरी तकदीर में काँटे है मैं काँटों को चुनता हूँ।
कहूँ तो क्या कहूँ है गोमगो(४) का हाल ऐ 'बिसमिल'
कोई सुनता नहीं मेरी मगर मैं सब को सुनता हूँ॥

(४५)

कह दिया हाँ कह दिया कुछ भी नहीं,
ज़िन्दगी का आसरा कुछ भी नहीं।

१—आदी। २—मालूम करना। ३—बटोही। ४—दुविधा।

ख़ल्क़(१) होकर फिर .खुदाई देख कर,
आप कहते हैं .खुदा कुछ भी नहीं।
हज़रते 'बिसमिल' से क्यों कोई कहे,
'डाक्टर झा' की दवा कुछ भी नहीं।

(४६)

मैं तो अच्छा ये काम करता हूँ,
लोडरी में जो नाम करता हूँ।
साहब आते है मेरे घर जो कभी,
तो बहुत धूमधाम करता हूँ।
इस कदर डर है उनका ऐ 'बिसमिल'
दूर ही से सलाम करता हूँ।

(४७)

वह दुनिया भर को कहते है यह ऐसे है वह ऐसे हैं,
मगर उनसे कोई पूछे कि सरकार आप कैसे है।
जहाँ जाते हैं महफ़िल में जमा देते हैं रग अपना,
ज़माना जानता है हज़रते 'बिसमिल' को जैसे हैं॥

(४८)

समझ तो देखिए इस पर भी .खुश हैं तनते हैं,
वह रोज जा के वहाँ बेवक़ूफ़ बनते हैं।

१—पैदा होना।

मेरी ज़ुबाँ से निकलते है फ़िक्रे उर्दू के,
मगर हुज़ूर तो 'इङ्गलिश' के लफ़्ज़ चुनते हैं।

(४९)

कुर्सी टेबुल नही तो कुछ भी नहीं,
ज़ुज़्बे(१) से कुल(२) नही तो कुछ भी नही।
अब ज़माने मे आदमी 'बिसमिल'
'फ़ैशनेबुल' नही तो कुछ भी नही।

(५०)

आबरू पसन्द न दौलत पसन्द हूँ,
हाँ यह ज़रूर है कि मुहब्बत पसन्द हूँ।
बदनाम कर रहे है वह 'बिसमिल' का हर तरफ़,
यह किसने कह दिया है कि शोहरत पसन्द हूँ।

(५१)

धुन के पक्के जो है वह ज़ुल्म सहे जाते है,
बात कहने की मगर सबसे कहे जाते हैं।
सैकड़ों कोस गया हमसे जमाना आगे,
पीछे हम सारे ज़माने से रहे जाते है।
कोई सुनता नही फ़रियाद ही मज़लूमों(३) की,
ज़ुल्म पर ज़ुल्म हमेशा यह सहे जाते हैं।
सारी दुनिया की निगाहों में वह अच्छा है बहुत,
फिर भी 'बिसमिल' को बुरा आप कहे जाते है।

१—हिस्सा। २—पूरा। ३—जिस पर ज़ुल्म किया जावे।

(५२)

मेरा सर काट कर क़ातिल बने हैं,
लहू में दोनो हाथ उनके सने हैं।
किसी दिन आप को झुकना पड़ेगा,
नहीं मालूम मुझसे क्यों तने हैं।
कोई पूछे न पूछे उनको 'बिसमिल'
वह अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बने हैं।

(५३)

कुछ लिख नही सकते है बेकार निकलते हैं।
किस वास्ते फिर इतने अख़बार निकलते हैं।
दीदार की हसरत में घबराये न क्यों 'बिसमिल'
बाहर हो नहीं घर से सरकार निकलते हैं।

(५४)

देख कर हम मिसे लन्दन को परी कहते है,
हुस्न कहते हैं इसे जलवागरी कहते हैं।
लगी-लिपटी कभी रखते नही हम ऐ 'बिसमिल'
कोई नाखुश हो कि .खुश बात खरी कहते हैं।

(५५)

जेठ की दुपहर में तपता हूँ,
फिर भी साहब का नाम जपता हूँ।

नाम को बर्गो(१) बार(२) मुझमें नही,
देखना यह है कब पनपता हूँ।
है तख़ल्लुस(३) का यह असर 'बिसमिल'
दिन हो या रात हो तड़पता हूँ।

(५६)

समझते है कि सुर्ख़ी हम बड़ी माकूल देते हैं,
ज़रा सी बात को अख़बार वाले तूल देते हैं।
कहें क्या हाल तुम से महफ़िले आलम का ऐ 'बिस्मिल'
जिसे देते थे कुर्सी अब उसे 'स्टूल' देते हैं।

(५७)

क़ौम को कालिज में ले जाने से कुछ हासिल नही,
कौन समझाये उन्हें समझाने से कुछ हासिल नहीं।
उनकी किस्मत ही में लिक्खा है तडपना-लोटना,
हजरते 'बिसमिल' को तडपाने से कुछ हासिल नहीं॥

(५८)

ये उनसे मैं नहीं कहता कि दुश्मनी न करें
कभी करें वह मेरे साथ इसे कभी न करें।
बस एक बात कही तुमने हज़रते 'बिसमिल'
कहाँ से पेट भरें सब जो नौकरी न करें।

१—पत्ता। २—फल। ३—उपनाम।

(५९)

हम देख के क़िस्मत को जबी(१) कूट रहे हैं,
वे बस वह समझ कर जो हमे लूट रहें है।
हिन्दू भी मुसलमान भी रस्ते से भटक कर,
मैदाने तरक्की की सड़क कूट रहे है।
आपस की लड़ाई से हुआ नफ़ा(२) यह 'बिसमिल'
रिश्ते जो मुहब्बत के थे वह टूट रहे है।

(६०)

वह पुन करते हैं इससे दूर अपना पाप करते है,
जो पहरो बैठकर गङ्गा किनारे जाप करते हैं।
ज़बाँ पर ज़िक्र हक़(३) भी आर दिल में ज़ौक़े(४) नाहक़ भी,
ख़ुदा को याद 'बिसमिल' इस तरह क्यों आप करते हैं।

(६१)

ख़्याले सुबह कभी फ़िक्रे शाम है कि नही,
अलावा ज़ुल्म के और उनको काम है कि नही।
'डिनर' मे तो कभी कहते नहीं यह पण्डितजी,
मेरे लिए कुछ अलग इन्तजाम है कि नही।
निराली बात निराला ख़्याल ऐ 'बिसमिल'
मेरा कलाम निराला कलाम है कि नहीं।

१—माथा। २—फ़ायदा। ३—ईश्वर। ४—मज़ा।

(६२)

बेअसर नालों मे पहले तुम असर पैदा करो,
हो अगर मतलब कि सब के दिल में घर पैदा करो।
ये है 'बिसमिल' .खूब 'मिश्रीलाल'(१) का शीरीं सखुन(२),
लुत्फ़ जीने का तो जब है नामोज़र पैदा करो।

(६३)

बन्दा परवर क्या ये अच्छे ढङ्ग अच्छे तौर है,
आप कहते और हैं और आप करते और हैं।

(६४)

तुम्हारे दौर(३) में ग़म खाते हैं और अश्क(४) पीते हैं,
मगर है ज़िन्दगी मर मर कर हम इस पर भी जीते हैं।

(६५)

जहाँ में हज़रते 'बिसमिल' हमेशा सबसे मिलते हैं,
जिन्हें मतलब से मतलब है वही मतलब से मिलते हैं।

(६६)

गर्दिशे तक़दीर से राहत कही मिलती नहीं,
बाग़ मे रह कर भी अब दिल की कली खिलती नहीं।

(६७)

उछलता है कलेजा दिल नही रहता है आपे में,
जवानी याद आ जाती है जब मुझको बुढ़ापे में।

१—लाला मिश्रीलालजी रईस, प्रयाग। २—मधुर वाक्य।
३—ज़माना। ४—आँसू।

(६८)

कुछ लहू तन में है बाक़ी वह पिये लेते हैं,
जोंक बन-बन के मेरी जान लिये लेते हैं।

(६९)

यह समझ कर सोच कर भरिए असर मजमून में,
आप ने कुछ लिख दिया और आ गये क़ानून में।

(७०)

असर होता अगर कुछ कौम के शेवन(१) में नाले में,
क़दम काहे को रखते आके साइब(२) पाठशाले में।

(७१)

आ गये पण्डित भी आख़िर आख़िर उनके 'रूल' में,
पाठशाला छोड़कर दाख़िल हुए स्कूल में।

(७२)

दीनों दुनिया का सबक़ इनसे कोई पाता नही,
नाम को पण्डित है कुछ आता नहीं जाता नहीं।

(७३)

मौलवी साहब बजा कहते हैं क़ाज़ी क्या करें,
हाल का यह हाल हो तो ज़िक्रे माज़ो(३) क्या करें।

१—आह। २—पीयर्स साहब जो कायस्थ पाठशाला प्रयाग के प्रिंसिपल थे। ३—भूत।

(७४)

यह है अँधेरे मे रहते है वह उजाले में,
बस इतना फ़र्क़ है गोरे में और काले में।

(७५)

लुत्फ़ लिखने का यही है जा लिखें बेजा लिखें,
जब न आज़ादी हो तो अख़बार वाले क्या लिखें।

(७६)

वह दूर-दूर से करते हैं दूर की बातें,
समझ से हो गईं बाहर हुज़ूर की बातें।

(७७)

नहीं है और कोई शौक़ हमको आलम में,
हमारा नाम छपे 'पानियर' के कालम में।

(७८)

नख़ले(१) उल्फ़त(२) काट कर बैठोगे किसकी छाँव में,
अपने हाँथों से न मारो तुम कुल्हाड़ी पाँव में।

(७९)

हम उनके काम आते वह हमारे काम आते हैं,
जो वह स्पीच देते है तो हम ताली बजाते हैं।

१—दरख़्त। २—प्रेम।

(८०)

उनको आँखो का इशारा है कि शिकवा न करो,
जिसमें कुछ लय न हो वह राग अलापा न करो।
यह सितम तुर्फा(१) सितम है कि वह फ़रमाते हैं,
तुम सहो ज़ुल्म मगर ज़ुल्म का चर्चा न करो।
जिससे झगड़ा हो उठे जिससे ज़माने में फ़िसाद
ऐसे मजमूं कभी अख़बार में लिक्खा न करो।
तन्दुरुस्ती की तमन्ना है अगर ऐ 'बिसमिल'
दिन को सोया न करो रात को जागा न करो।

(८१)

बेकार के मज़मून न बेकार निकालो,
शोहरत की तमन्ना है तो अख़बार निकालो।
दम भर का वह मेहमान है अब दम नहीं बाक़ी,
'बिसमिल' के लिए किस लिए तलवार निकालो।

(८२)

मिटो ग़ारत हो महवे नालओ फ़रियाद हो जाओ,
उन्हें परवा नही कुछ इसकी तुम बर्बाद हो जाओ।
कलामे(२) 'बिसमिले' रंगी बयाँ देखा नही तुमने,
अगर भूले से भी पढ़ लो तो पढ़कर शाद(३)हो जाओ।

१—अनोखा। २—कविता। ३—ख़ुश।

(८३)

सैय्याद(१) की सुनते नहीं माली की तो सुन लो,
आ निकले हो जब बाग़ में कुछ फूल ही चुन लो।
हर बात में ज़िद अच्छी नही हज़रते 'बिसमिल'
दुनिया कहे जिस बात को उस बात को सुन लो।

(८४)

तुम ज़ह्र के घूँट अब पिये जाव,
जीने से ग़रज़ है बस जिये जाव।
दुनिया में सुकूत(२) सब से अच्छा,
कुछ भी न करो यही किये जाव।
हुज्जत की नहीं कोई ज़रूरत,
जो वह कहें बस वही किये जाव।
आये हो क्लब में आज 'बिसमिल'
दो घूँट शराब तो पिये जाव।

(८५)

दिन कहेगा एक दिन यह रात को,
कुछ न पूछो 'पानियर' की बात को।
बात कोई घात से ख़ाली नही
हम समझते है तुम्हारी बात को।

१—बहेलिया। २—चुप रहना।

आज कल के .खूब हैं साइन्सदाँ(१)
भूल बैठे यह .खुदा की ज़ात को।
मुफ़्त पे 'बिसमिल' धुना करते हो सर,
कौन सुनता है तुम्हारा बात को।

(८६)

बदला है जो रङ्ग कुछ न पूछो,
आपस की ये जंग कुछ न पूछो।
हर वक़्त नया सितम नया जौर(२)
हम जी से है तङ्ग कुछ न पूछो।
'बिसमिल' की है शायरी निराली,
यह रङ्ग यह ढङ्ग कुछ न पूछो।

(८७)

हर बात में घात कुछ न पूछो,
सरकार की बात कुछ न पूछो।
साहब 'डिनर' आज खाने आये,
यह रात है रात कुछ न पूछो॥
क़ब्ज़े में उसी के है .खुदाई,(३)
अल्लाह की ज़ात कुछ न पूछो।
जीते है .गुलाम होकर अबतक,
मरने की है बात कुछ न पूछो॥

१—वैज्ञानिक। २—.ज़ुल्म। ३—संसार।

मशहूरे जहाँ बहुत है 'बिसमिल'

क्या बन गई बात कुछ न पूछा ॥

(८८)

उनका मतलब है तबीयत का बदलना सीखो,

है यह क़ानून कि क़ानून पे चलना सीखो ।

(८९)

हुब्बे(१) क़ौमी के लिए काम ये करना सीखो,

तुमको मरना नही आता अभी मरना सीखो

पढ़कर इँगलिश भूल बैठे बाप को,

देखते है अब वह अपने आप को।

(९०)

लाज़िम तुझे यही है शुमालो(२) जनूब(३) देख,

दुनिया में रहके रग भी दुनिया का .खूब देख।

'बिस्मिल' से कह गया सरे शाम आफ़ताबे कौम,

मैं डूबता हूँ अब मुझे वक्त .गुरूब(४) देख।

(९१)

बोले लीडर बड़े .गुरूर के साथ,

कुछ भी हो हम तो हैं हुज़ूर के साथ।

उनकी हर बात अब निराली है,

बोलते भी है तो .गुरूर के साथ।

१—प्रेम। २—उत्तर। ३—दक्षिण। ४—डूबना।

किसलिए तुम अलग हो ऐ 'बिसमिल'
सारी दुनिया तो है हुज़ूर के साथ।

(६२)

हो गईं गलियाँ भी शामिल शह्र की सड़कों के साथ,
लड़कियाँ पढ़ने लगीं कालिज में अब लड़कों के साथ।

(६३)

उमंग दिल मे रहे जोशे आरज़ू के साथ,
अगर जिओ तो ज़माने में आबरू के साथ।

(६४)

उम्र यारों की गुज़रती नही परहेज़ के साथ,
रोज़ होटल में 'डिनर' खाते हैं अँग्रेज़ के साथ।
उसको हसरत है न मन्दिर न बुतों की 'बिसमिल'
बिरहमन 'चर्च' में है एक मिसे नौखेज़ (१) के साथ।

(६५)

वह भी देते है दुहाई मेरी,
हर जगह अब है रसाई (२) मेरी।
दोस्त कल तक था ज़माना मेरा,
आज दुश्मन है ख़ुदाई मेरी।

१—युवती। २—पहुँच।

कहते थे मुझको जो अच्छा 'बिसमिल'
वही करते हैं बुराई मेरी।

(९६)

क़ह(१) है कह जी से मिलना भी,
ग़ुञ्चये(२) दिल का अपने खिलना भी।
ज़िक्र है क्या निबाह का 'बिसमिल',
अब तो मुश्किल है उनसे मिलना भी।

(९७)

दिखाते है तमाशे क्या तरक्की के ज़माने भी,
नई तहज़ीब(३) पर लट्टू हुए दिल में पुराने भी।
बस इतना याद है स्कूल के लड़को को ऐ 'बिसमिल'
कभी मक़तब मे हम पढ़ते थे हिज्जे भी रवाने भी।

(९८)

अब न बाक़ी रह गया जोश अब न मस्ती रह गई,
ख़ैर ये भी है ग़नीमत अपनी हस्ती रह गई।
सर बलन्दी पाके तुम सारा बलन्दी ले उड़े,
मेरे हिस्से में फ़कत पस्ती(४) ही पस्ती रह गई।
नेस्ती(५) ने हर तरफ़ आलम पे क़ब्ज़ा कर लिया,
कहने-सुनने के लिए दुनिया में हस्ती रह गई।

१—ग़ज़ब। २—कलियाँ। ३—सभ्यता। ४—निचाई।
५—मिटना।

मैंने देखा फिरकर ऐ 'बिसमिल' जहाँ में हर तरफ़
हक़(१) परस्ती(२) की जगह नाहक परस्ती रह गई ॥

(९९)

बे तरह फिर गई नज़र 'मिस' का,
देखिये मौत आये किस-किस की।
सब सुनाते हैं बे तुकी 'बिस्मिल'
बात दुनिया में हम सुनें किस की।

(१००)

पुन से नफ़रत और हसरत पाप की,
ख़ैर 'पबलिक' क्या मनावे आपकी।
जाऊँ क्या गङ्गा का साहिल(३) छोड़ कर,
लह पैदा हो गई है जाप की।
अब के लड़के कुछ समझते ही नहीं,
आबरू जाती रही माँ-बाप की।
हज़रते 'बिस्मिल' हुई मशहूर ख़ल्क़(४)
हर ग़ज़ल 'नोटिस' थी गोया आपकी।

(१०१)

जिसने कुछ भी न क़द्र की मेरी,
उस सितमगर(५) से दिल्लगी मेरी।

१—ईश्वर। २—पूजना। ३—तट। ४—ससार। ५—ज़ालिम।

ग़ौर फ़रमायें देखने वाले,
ख़त्म होती है ज़िन्दगी मेरी।
बैर रखता नही किसो से मैं,
दुश्मनों से है दोस्ती मेरी।
मैं हूँ मशहूरे ख़ल्क़ ऐ 'बिस्मिल'
ले उड़ी मुझ को शायरी मेरी।

(१०२)

क़ानून ने कहा तेरी हसरत(१) निकल चुकी,
बस अब क़लम चलेगा वह तलवार चल चुकी।
'बिस्मिल' का हाल देख के चुप डाक्टर भी हैं,
परहेज़ है यही तो तबीयत सम्हल चुकी।

(१०३)

राह में ख़ूब मुलाक़ात हुई,
मिल गये आप बड़ी बात हुई।
ख़त्म जब रात हुई दिन निकला,
दिन हुआ ख़त्म तो फिर रात हुई।
रात-दिन रोने से है काम इसको,
चश्मे(२) तर क्या हुई बर्सात हुई।
याद रक्खा इन्हें वर्षों उसने,
जिसकी 'बिस्मिल' से मुलाक़ात हुई।

१—इच्छा। २—आँखें।

(१०४)

बरगश्ता(१) है ज़माना क़िस्मत है अपनी खोटी,
खाने को पेट भर अब मिलती नहीं जो रोटी।
तहज़ीबे मुफ़लिसी(२) से मैं डर रहा हूँ 'बिस्मिल'
बन जायगी किसी दिन धोती भी क्या लँगोटी।

(१०५)

यह चौकीदार से कहता रहा कल गाँव का पासी,
तरद्दुद(३) क्या अगर रोटी हो ताज़ी दाल हो बासी।
करो तो ग़ौर ऐ 'बिस्मिल' हुकूमत कल जो करते थे,
बने हैं आज आ-आ कर वही दफ़्तर में चपरासी।

(१०६)

मुनहरिफ़(४) रहते हैं मुझसे दोस्त भी ग़मख़्वार(५) भी,
मेरी 'फ़ेवर' में नहीं लिखता कोई अख़बार भी।
हज़रते 'बिस्मिल' ने देखा अब नया सामाने जङ्ग,
तोप के आगे तो रक्खी रह गई तलवार भी।

(१०७)

परवा जो डाक्टर को नहीं मेरे हाल की,
बेकार पी रहा हूँ दवा अस्पताल की।

१—फिरा हुआ। २—गरीबी। ३—संकोच। ४—खिलाफ़।
५—साथी।

(१०८)

सुनता नही कोई भी तो कहना फ़िज़ूल है,
ऐसी सभा में आपका रहना फ़िज़ूल है।
दरिया का रुख़ जिधर हो बहो उस तरफ ज़रूर,
उसके ख़िलाफ़ ज़ोर में बहना फ़िज़ूल है।
'बिसमिल' नई रविशे(१) पे नये रङ्ग-ढङ्ग में,
जब कह सको न ख़ूब तो कहना फ़िज़ूल है।

(१०६)

वह यह कह कर हँस रहे है बस यह होना चाहिए,
कोई रोये या न रोये तुमको रोना चाहिए।
जिसको रास(२) आये हमेशा मग़रबी(३) आबोहवा,
ऐसे गमले में न तुमको बीज बोना चाहिए।
हजरते 'बिसमिल' कहाँ हंसती हुई वह सोहबतें,
बैठ कर चुपचाप एक कोने में रोना चाहिए।

(११०)

यास(४) में है कोई तो आस में है,
ज़िन्दगी सब की फेल-पास में है।
ख़ल्क़ में हर तरह जगह है दुःख 'बिसमिल'
सुख मुझे अपने 'सुखनिवास'(५) में है।

१—तरीका। २—म्वाफ़िक़। ३—पश्चिमी। ४—नाउम्मीदी।
५—मैंने अपने घर का यह नाम रक्खा है।

(१११)

आप अगर हमसे मिल नहीं सकते,
दिल के ग़ुञ्चे(१) भी खिल नहीं सकते।
तन गये जिससे तन गये 'बिसमिल'
उम्र भर उससे मिल नही सकते।

(११२)

जान आफ़त में और पड़ती है,
ज़िन्दगी मौत से जो लड़ती है।
किसलिए सर उठाये' ऐ 'बिसमिल'
सर उठाने में मार पड़ती है।

(११३)

सर पे जब से सवार 'फ़ैशन' है,
न वह हम हैं न अगली 'नेशन' है।
है 'डिनर' में मज़ा कि ऐ 'बिसमिल'
आज मेरा भी 'इनविटेशन' है।

(११४)

बेकारये रोना है चन्दा नहीं मिलता है,
क्या इसके सिवा कोई धन्धा नहीं मिलता है।
मतलब के जो बन्दे है मतलब के पुजारी हैं,
दुनिया मिले ऐसो से बन्दा नही मिलता है।

१—कली।

(११४)

कब तक कोई चन्दा दे कब तक कोई चन्दा ले,
चन्दा नहीं आता है चन्दा नहीं मिलता है।
क्या देख सके जलवा महदूद(१) नजर 'बिसमिल'
अल्लाह तो मिलता है बन्दा नही मिलता है।

(११५)

इस बहम(२) इस ख़्याल मे पड़ना फिजूल है,
सरकार के ख़िलाफ़ अकडना फ़िज़ूल है।
आपस मे मेल-जोल बढाओ .खुशी के साथ,
क्यों रञ्ज कर रहे हो ये लडना फ़िज़ूल है।
दुनिया से झुक के हज़रते 'बिसमिल' मिला करो,
दो दिन की जिन्दगी पर अकड़ना फ़िज़ूल है।

(११६)

बहरे(३) हस्ती में कज़ा के घाट उतरना देखिए,
मर रहा हूँ आइए अब मेरा मरना देखिए।
फ़लसफ़ी(४) की अक़्ल .गुम है वह्म भी मजबूर है,
ख़ाक के ज़र्रों का मिट्टी में संवरना देखिए।

(११७)

चमन में एक एक .गुञ्चा .खुशी से फूल जाता है,
मगर जब ख़ाक़ मे मिलता है सब कुछ भूल जाता है।

१—घिरा हुआ। २—शक मे पड जाना। ३— समुद्र। ४—बुद्धिमान्।

(११७)

ताज्जुब क्या जो 'बिसमिल' याद उन्हे मेरी नहीं आती
ज़माना कुछ दिनो के बाद सब को भूल जाता है।

(११८)

ये बज़्मे(१) ऐश(२) में क्या .खूब काम चलता है,
कि जाम(३) चलने से रिन्दों(४) का नाम चलता है।
न दिन से है इसे मतलब न रात से मतलब,
नफ़स(५) का सिलसिला हर सुबहो-शाम चलता है।
मुखालफ़त(६) करें हम इनकी यह मजाल नहीं
क़दम-क़दम पे तो साहब से काम चलता है।
अदब के साथ कहे 'गेट' पर न क्यों 'बिसमिल'
बग़ैर हुक्म कब आगे .गुलाम चलता है।

(११९)

.खुदा ही को ख़बर है इसमें क्या मरजी खुदा की है
कि वह शाकी(७) ज़माने के जमाना उनका शाकी है।
भरोसा ख़ाक दुनिया पर करें ऐ हज़रते 'बिसमिल'
हमें मिट्टी मे मिलना है हमारा जिस्म ख़ाकी(८) है।

(१२०)

आज कल बदला हुआ मज़मून है
हर क़दम पर एक नया क़ानून है।

१—सभा। २—आराम। ३—प्याला। ४—शराबी। ५—स्वांस।
६—विमुख। ७—शिकायत करना। ८—मिट्टी का।

क्या लिखें मज़मून यह मज़मून है,
नुक़्ते-नुक़्ते के लिए क़ानून है।

(१२१)

जौ की रोटी है चने का साग है,
यह भी मिल जाए तो अच्छा भाग है।
आपकी नजरों में काला आदमी,
कुछ नही है और है तो 'डाग' है।
अहले मिर्ज़ापूर क्योंकर ख़ुश न हों,
उस तरफ़ काशी इधर प्रयाग है।
क्या सुनें 'बिसमिल' वतन वालों की तान,
अपनी ढफ़ली और अपना राग है।

(१२२)

कान अगर है तो सुनो यह किसी फ़रियादी से,
साँस लेना भी है मुश्किल मुझे आज़ादी से।
हम भी शागिर्द हुए देख के यह ऐ 'बिसमिल'
लीडरी आप किया करते हैं उस्तादी से।

(१२३)

क्या बात करूँ गर्दिशे अय्याम(१) के आगे,
दफ़्तर में तो फ़ुरसत ही नही काम के आगे।

१—ज़माना।

'बिसमिल' उन्हें तौक़ीरे(१) मरातिब(२) से है इनकार,
लिखते नहीं मिस्टर भी मेरे नाम के आगे ॥

(१२४)

मरते हैं और लोग तो दौलत के वास्ते,
मैं जान दे रहा हूँ मुहब्बत के वास्ते।
क़िस्मत से बात बन गई शाही(३) भी मिल गई,
आया था कोई सिर्फ़ तिजारत के वास्ते।
कहते हैं वह कि रोज़ पहिनता नहीं हूँ मैं,
बनवा लिया है 'सूट' जरूरत के वास्ते।

(१२५)

बन्दा नवाज़(४) आप तास्सुफ़(५) न कीजिए,
मर जाऊँ मै तडप के मगर उफ़ न कीजिए।
बर्ताव क्या ज़रूर हैं मेहमान की तरह,
'बिसमिल' के वास्ते यह तकल्लुफ़ न कीजिए।

(१२६)

मेरी तरफ़ से उन्हें हर घड़ी कुदूरत(६) है,
जो है यह हाल तो मिलने की कौन सूरत है।
गया छुड़ाने को रोज़ा, पड़ी नमाज़ गले,
वह कह रहे हैं कि चन्दे की अब ज़रूरत है।

१—इज्ज़त। २—रुतबा। ३—बादशाही। ४—महाशय। ५—अफ़सोस। ६—मैल।

(१२७)

नज़र से कह दो यह किसको 'रिजेक्ट'(१) करती है,
कि अच्छी चीज़ को दुनिया 'सेलेक्ट'(२) करती है।
कलामे 'बिसमिल' रंगी बयाँ पढ़ो तो सही,
वह शायरी है जो दिल पर 'एफेक्ट'(३) करती है॥

(१२८)

दो दिन जहाँ में रह के तमाशा दिखा गये,
ऐ आने जाने-वालो यह क्या आये क्या गये।
मिट्टी के हम थे मिट्टी लिखी थी नसीब में,
मिट्टी में लोग इसलिए हमको मिला गये॥
लाखों तरह के ज़ुल्म हैं लाखों तरह के ग़म,
हम किस ख़याल से तेरे कहने में आ गये।
अरबाबे(४) ज़ौक़ो(५) शौक को वज्द(६) आज आ गया,
'बिसमिल' कुछ अपने शैर भी आकर सुना गये॥

(१२९)

हमेशा यासो(७) हसरत ही के दम भरने से मतलब है,
न कुछ करने से मतलब था न कुछ करने से मतलब है।
क़यामत(८) तक जहाँ में कौन जिन्दा रह सका 'बिसमिल'
हमारा काम है मरना हमें मरने से मतलब है॥

१—अस्वीकार। २—चुनना। ३—असर। ४—मित्रगण। ५—पसन्द करने वाले। ६—मगन हो जाना। ७—नाउम्मेदी। ८—प्रलय।

(१३०)

दिल इश्क में बदनाम है रुसवा(१) भी बहुत है,
नाक़द्रिये अय्याम पर इतना भी बहुत है।
आया न कभी अक़्ल में दुनिया का तमाशा,
समझा भी बहुत है इसे देखा भी बहुत है।
कहते है सरे बज़्म(२) वह .ख़ुश होके ये 'बिसमिल'
पढ़ना भी बहुत है तेरा कहना भी बहुत है।

(१३१)

कसरते ग़म मे भी चेहरे पर बहाली चाहिए,
सामने नज़रों के तस्वीरे ख़याली चाहिए।
पढ़िए 'लीडर' में यह 'मुन्शीजी'(३) का एक निकला है नोट,
पाठशाले के लिए इमदादे माली चाहिए।
कामयाबी का तो है फ़ज़्ले(४) .ख़ुदा पर इनहिसार(५)
काम से पहले हमेशा .ख़ुश ख़याली चाहिए।
पेड़ सूखे जा रहे है बाग़ में 'बिसमिल' मगर,
लाट साहब के लिए नायाब डाली चाहिए।

(१३२)

रंज से वह निजात(६) पा जाये,
मौत की जिसको नींद आजाये।

१—अपमानित। २—सभा। ३—मुन्शी ईश्वरशरन भूतपूर्व प्रेसीडेन्ट कायस्थ-पाठशाला। ४—कृपा। ५—निर्भर। ६—छुटकारा।

जिस जगह पूछ-गछ नहीं 'बिसमिल'

जाचुका मैं मेरी बला जाये।

(१३३)

कोट, पतलून और जाड़ा है

सब को सरदी ने अब पछाड़ा है।

हैं क्लब में बहुत मिसें 'बिसमिल'

राजा इन्दर का ये अखाड़ा है।

(१३४)

किस मुसीबत में जान रहती है

रोज़ यक ताजा रंज सहती है।

हमको साहिल(१) नज़र नही आता

नाव दरियाये ग़म में बहती है।

तुम बुरे हो तो क्यों बिगडते हो

ख़ल्क़(२) तुम को बुरा जो कहती है।

चैन वहशत(३) से क्या मिले 'बिसमिल'

यह बला साथ-साथ रहती है।

(१३५)

दीन वाले कह रहे हैं पेच है

लुत्फ़े दुनिया कुछ नही सब हेच(४) है।

१—तट। २—संसार। ३—पागलपन। ४—कुछ नहीं।

(१२३)

जिसको .फ़ुरसत हो वह सुलझाया करे,
आपकी हर बात में एक पेच है।
हो चुकी बस हो चुकी 'बिसमिल' की क़द्र
आपकी नज़रों मे बन्दा हेच है।

(१३६)

वह बोले अगर ज़बाँ खुली है
क़ानून की भी दुकाँ खुली है।
'बिसमिल' न रुकेगी अब यह हरगिज़
महफिल मे मेरी ज़बाँ खुली है।

(१३७)

मज़मूने(१) मुहब्बत की यह तमहीद(२) बड़ी है
उम्मीद पे जीता हूँ कि उम्मीद बड़ी है।
'बिसमिल' तुम्हें क्या अर्जे तमन्ना(३) की ज़रूरत
कुछ भी न कहो चुप रहो ताकीद बड़ी है।

(१३८)

अब उभरने न कभी देगा मेरा जोश मुझे
आप क़ानून से करने लगे ख़ामोश मुझे।
ज़ीस्त(४) कहते है जिसे नींद है बेहोशी की
मौत जब आयेगी तो आयेगा कुछ होश मुझे।

१—विषय। २—भूमिका। ३—इच्छा। ४—ज़िन्दगी।

देख लेता हूँ ज़माने की तरफ़ ऐ 'बिसमिल'

अब तड़पने का वह बाक़ी न रहा जोश मुझे !

(१३९)

पाजामे की इज़्ज़त नही पतलून के आगे

क्यों बहस अबस(१) हम करें क़ानून के आगे।

गर्मी से कोई दम हमें राहत(२) नही मिलती

शर्मा गई दोज़ख भी मई, जून के आगे।

पामालिये(३) तौक़ीर(४) से डरते हो जो 'बिसमिल'

तो सर न उठाना कभी क़ानून के आगे।

(१४०)

तंग हूँ जीने से मै यह काम करने दीजिए

डाक्टर साहब सरफ़िये मुझको मरने दीजिए।

वह यह कहते है तड़पने से तो मरना ख़ूब है

हज़रते 'बिसमिल' अगर मरते हों मरने दीजिए।

(१४१)

उन्हें बे तरह मुझ से अब दुश्मनी है

मुसीबत मे दिल और ज़हमत में जी है।

तकल्लुफ़(५) ने रङ्ग अपना आकर जमाया

कहाँ अब वह पोशाक में सादगी है।

१—बेकार। २—आराम। ३—मिट जाना। ४—मान, इज़्ज़त।
५—बनावट।

सुनाऊँ अगर हो कोई सुनने वाला,
बड़ी लम्बी-चौड़ी मेरी 'हिस्ट्री' है।
कहे कौन दुनिया में 'बिसमिल' को अच्छा,
जो दुनिया कहे यह बुरा आदमी है।

(१४२)

सितम पर हम सितम लाखों सहेंगे,
मगर फिर-फिर के गिरजा में रहेंगे।
बदन में ख़ून तक बाक़ी नहीं है,
मेरी आँखों से आँसू क्या बहेंगे।
सभा में चुप नहीं रहने के 'बिसमिल'
ख़री जो बात होगी वह कहेंगे।

(१४३)

मेरा सर काट कर क़ातिल बने हैं,
लहू में दोनों हाथ उनके सने हैं।
किसी दिन आप को झुकना पड़ेगा,
नहीं मालूम मुझसे क्यों तने हैं।
कोई पूछे न पूछे उनको 'बिसमिल'
वह अपने मुह मियाँ मिट्ठू बने हैं।

(१४४)

अलम(१) है, रञ्ज है, सदमा है, ग़म है,
सहूँगा सब को जबतक दम में दम है।

१—दुख।

सरे तसलीम इस दहशत(१) से खम(२) है,
वह अब खञ्जर है जो उनका क़लम है॥
वह हमको कुछ समझते ही नहीं है,
हमारा मर्तबा इस दरजा कम है।
जो कह सकते नही लिखते है उसको,
हमारे हाथ मे 'बिसमिल' क़लम है॥

(१४५)

यह आलम देख कर दम घुट रहा है,
कि फ़ैशन में ख़जाना लुट रहा है।
पिसे है इस तरह क़ानून से हम,
सडक पर जैसे कंकर कुट रहा है।
यह कह कर बन्द कीं 'बिसमिल' ने आँखे,
हमारा साथ सबसे छुट रहा है।

(१४६)

तुम्हारी जो सदा है बेसुरी है,
करो तर्क इसको यह आदत बुरी है।
वह आदी हो गये काँटा-छुरी के,
वहाँ खाने में भी कांटा छुरी है।
जो कहता हूँ वह मैं कहता हूँ मुंह पर,
यही तो मझमें एक आदत बुरी है।

१—भय। २—झुका हुआ।

(१२७)

हुआ जीना बहुत दुश्वार(१) 'बिसमिल'
हमारा हल्क है उनकी छुरी है।

(१४७)

पाठशाले का सबक सब भूल जाना चाहिए,
मुख़्तसिर(२) यह है मुझे स्कूल जाना चाहिए।
उनसे पूछो हज़रते 'बिसमिल' यह क्या दस्तूर है,
मैं न याद आऊँ तो मुझको भूल जाना चहिए।

(१४८)

ख़ुदा ही ख़ैर करे क्या पयाम(३) आया है,
बजाय ख़त मुझे टेलीग्राम' आया है।
खुशी के साथ वहाँ जायँ हज़रते 'बिसमिल'
यहाँ तुम आओ यह उनका पयाम आया है।

(१४९)

ज़िन्दगी में यह काम करना है,
एक न एक रोज़ हमको मरना है।
फिर गया बे तरह हवा का रुख़,
कुछ समझ-सोच कर उभरना है।
क्यों वतन पर न हो फ़िदा 'बिसमिल'
मर के दुनिया में नाम करना है।

१—कठिन। २—संक्षेप। ३—निमन्त्रण।

(१५०)

मुंह से हम कहते हैं भगवान का दर्शन मिल जाय,
और है पेट का यह हुक्म कि भोजन मिल जाय।
कोई अरमान नही इसके सिवा ऐ 'बिसमिल'
उनक फ़ैशन से हमारा कहीं फ़ैशन मिल जाय।

(१५१)

दुनिया को छोड़ बैठे फ़कत इसके वास्ते,
'मिस्टर' हैं बे करार बहुत 'मिस' के वास्ते।
"बिसमिल" को बात-चीत की .फुरसत नही है अब,
तैयार हो रहे है यह आफ़िस के वास्ते।

(१५२)

सब पूछते है किसलिए ख़ामोश रह सके,
कहने की जो थी बात वहां हम न कह सके।
'बिसमिल' यह उठते-बैठते हरदम रहे ख़याल,
वह काम कर बुरा तुझे दुनिया न कह सके।

(१५३)

चार दिन की जीस्त(१) मे यह काम करना चाहिए,
दूसरों को फ़ायदा पहुँचा के मरना चाहिए।
पूछते है लीडरो से हज़रते 'बिसमिल' सलाह,
क्या न करना चाहिए क्या हमको करना चाहिए।

१—ज़िन्दगी।

(१५४)

दरसे(१) हक़(२) भूले हुए हैं क्या ग़ज़ब की भूल है
हाफ़िज़े(३) में उनके या कालिज है या स्कूल है।
फ़र्श पर अब बैठना तो दाखिले फ़ैशन नहीं
बैठने के वास्ते कुर्सी है या स्टूल है।
शौक़ से अखबार में पढ़ते हैं 'न्यूलाइट'(४) के लोग
हज़रते 'बिसमिल' तुम्हारी शायरी मक़बूल(५) है।

(१५५)

क्यों न बॅगले पर फिरें अहबाब इतराए हुए
जो कलेक्टर थे वह बन कर लाट हैं आये हुए।
कह रहे थे लोग यारों में बड़ी शेख़ी के साथ
हम हज़ारों इस तरह के है 'डिनर' खाये हुए।
अर्दली यह कह के लेता है ख़बर एक-एक की
क्यों हो बदली की तरह बंगले पे तुम छाये हुए।
लोग कहते है तडपने को हमारे देख कर
तुम हो 'बिसमिल' क्या किसी क़ातिल के तड़पाये हुए।

(१५६)

ख़ाक होना है मुझे ख़ाक की हस्ती क्या है;
चार दिन बाद बता दूँगा कि मस्ती क्या है।

१—पाठ। २—ईश्वर। ३—याद। ४—नई रोशनी। ५—लोकप्रिय।

वह बलन्दी पे है आज उनका सितारा है बलन्द,

इससे आगाह नहीं कुछ भी कि पस्ती(१) क्या है।

नेस्ती(२) से उन्हें आगाह(३) करो ऐ 'बिसमिल'

जो समझते ही नहीं दिल में कि हस्ती क्या है।

(१५७)

कौन उनकी बात समझे कौन उनकी बात जाने,

हुशियार वह बड़े हैं वह है बडे सयाने।

'बिसमिल' किसी से मिलना खुल कर हो क्या गवारा

हम तो यह चाहते हैं दुनिया हमें न जाने।

(१५८)

दिल में वह गर्मी कहाँ अब दिल हमारा सर्द है,

ख़ून की सुर्ख़ी के गम में रंग रुख़(४) का ज़र्द है।

आते-जाते बस वही पामाल(५) करने से ग़रज़,

आपकी नज़रों मे क्या बन्दा सडक की गर्द(६) है।

शायद ऐसा हो मगर हमको यकीं आता नहीं,

लोग कहते है कि 'बिसमिल' शायरी में फर्द(७) है।

(१५९)

तर्ज़े उल्फ़त से कोई नाशाद(८) कोई शाद है,

मुख़्तसिर यह है कि हर दिल में तुम्हारी याद है।

१—निचाई। २—मिट जाना। ३—सूचित करना। ४—चेहरा।
५—मिटाना। ६—धूल। ७—अद्वितीय। ८—दुःखी।

(१३१)

हर जगह 'साइन्स' का ही तज़किरा(१) सुनता हूँ मै।
आज एक ईजाद(२) है कल दूसरी ईजाद है।
क्यों न फ़न्ने शायरी हो बे तरह 'बिसमिल' ज़लील(३)
आज जो शागिर्द है कल देखिये उस्ताद है।

(१६०)

वह बदगुमान(४) हुए इश्क़ के फ़िसाने(५) से,
बुलाओ लाख अब आते नहीं बुलाने से।
रहूँ ज़माने मे क्योकर ज़मानासाज़(६) है सब,
ज़माना कुछ नहीं दिल हट गया ज़माने से।
बुरी बला में फँसे ख़ैर अब नही 'बिसमिल'
तुम्हारे नाम सफ़ीना(७) कटा है थाने से।

(१६१)

कुत्ते लड़ाये जायँगे बोटी के वास्ते,
अख़बार अब निकलते हैं रोटी के वास्ते।
आपस में नोक-झोंक है मज़हब के नाम पर,
डाढ़ी के वास्ते कहीं चोटी के वास्ते।
धोती का छोडकर बढ़े पतलून की तरफ़,
तरसेंगे कुछ दिनों में लँगोटी के वास्ते।

१—ज़िक्र। २—एक आविष्कार। ३—ख़राब। ४—बुरे भाव
५—क़िस्सा। ६—ढोंगी। ७—सरकारी काग़ज़ का नाम है।

(१३२)

'बिसमिल' है इस पे मुनहसिर(१) अपनी शिकमपुरी(२),

दफ़्तर को रोज़ जाते हैं रोटी के वास्ते।

(१६२)

आ जाओ न देखो कहीं क़ानून के नीचे,

धोती को समेटे रहो पतलून के नीचे।

(१६३)

परजा के वास्ते हो कि राजा के वास्ते,

क़ानून उनका एक है बाजा के वास्ते।

(१६४)

इसका ख़याल ही मुझे करना फ़िज़ूल है,

जब मौत है तो मौत से डरना फ़िज़ूल है।

(१६५)

अब दिन अपना है रात अपनी है,

बात यह है कि बात अपनी है।

मर भी जायेंगे तो न होगी सुबह,

किस मुसीबत की रात अपनी है।

'नूह' साहब के फ़ैज़(३) से 'बिस्मिल'

हर जगह आज बात अपनी है।

१— निर्भर। २—पेट भरना। ३—कृपा।

(१६६)

मिलिए सब से मिल कर उलफ़त कीजिए,
क्यों किसी से भी अदावत कीजिए।
बात यह 'बिस्मिल' ने भी अच्छी कही,
बस मुहब्बत बस मुहब्बत कीजिए।

(१६७)

मैं हूँ फ़ैशन और चदा है,
बस इसी कशमकश(१) में बन्दा है।
तौक़े(२) गर्दन बने न क्यों कालर,
यह भी 'योरूप' का एक फन्दा है।
शायरी के अलावा ऐ 'बिस्मिल',
और भी तेरा कोई धन्धा है।

(१६८)

यही तलवार और झन्डा है,
हाथ में तीन फ़ुट का डन्डा है।
अब वह गर्मी नही रही 'बिस्मिल'
देखिए जिसके दिलको ठन्डा है।

(१६९)

काम आयेगा यही गुन बस यही गुन सीखिए।
सीखनी है धुन अगर तो देश की धुन सीखिए।

१—सोच-विचार। २—पट्टा।

(१७०)

आलम(१) का रंग देख के परवा नहीं रही
दिल में किसी तरह की तमन्ना नहीं रही।
'बिस्मिल' मेरी जबान खुले यह मोहाल(२) है,
वह लोग अब नही रहे दुनिया नही रही।

(१७१)

अब कहाँ इज़्ज़त महाशयजी की 'सर' के सामने
कौन पूछे वैद्यजी को डाक्टर के सामने।
दौर दौरा बेतरह है मग़रबी(३) तालीम का,
एक तमाशा है गुरुभी मास्टर के सामने।
खुल गया इससे कि थे 'बिस्मिल' कभी हम बादशाह,
आज तक रक्खा हुआ है तख़्त घर के सामने।

(१७२)

तमाशा इसको समझे खेल समझे दिल्लगी समझे
बस उसकी ज़िन्दगी है मौत को जो ज़िन्दगी समझे।

(१७३)

यह आलम देख कर आलम का दिल में सब्र करना है,
हमी को एक नहीं मरना ख़ुदाई भर को मरना है।
समझता है ज़माना हो रहा है क्या ज़माने में,
ज़माने को वह अब अगला ज़माना याद करना है।

१—संसार। २—कठिन। ३—पश्चिमी।

(१७४)

क़ज़ा आयेगी अपने वक़्त ही पर रुक नहीं सकती,
झुकाये जिन्दगी लाख इसको लेकिन झुक नहीं सकती।
खुदा के हुक्म से हर लहजा सब की साँस चलती है।
यह वह गाड़ी है स्टेशन से पहले रुक नही सकती।
किया पामाल(१) उनको ग़म ने जिनका क़ौल(२) था 'बिस्मिल'
किसी के सामने गर्दन हमारी झुक नही सकती।

(१७५)

ज़र्रे मिले हुए हैं यही हेर फेर है,
इन्सान क्या है कुछ नहीं मिट्टी का ढेर है।

(१७६)

हाकिम का हुक्म सख़्त सुना सुन के रह गए,
कुछ बन पडी न हम से तो सर धुन के रह गए।
'बिस्मिल' ख़्याल अहदे(३) खिजा(४) का जो आ गया,
दो-चार फूल बाग मे हम चुन के रह गए।

(१७७)

आज़ारो(५) अलम(६) जिन को सहन नही आता है।
दुनिया मे वह रहते है रहना नही आता है।

१—मिटाना। २—वाक्य। ३—समय। ४—पतझड़। ५—दुःख।
६—रञ्ज।

मैं बज़्में(१) सखुन्दां(२) में क्या शैर पढ़ूं 'बिस्मिल'
कहने को तो कहता हूँ कहना नहीं आता है।

(१७८)

कोई इसके साथ है अब कोई उसके साथ है,
देखना यह चाहिए मैदान किसके हाथ है।

(१७६)

हमें क्या दीन से मतलब हमें दुनिया से मतलब है,
जो अहमक़ हैं वह कहते है यही है हाँ यही सब है।
किसी की दोस्ती या दुश्मनी की कुछ नही परवा,
हमें ऐ हज़रते 'बिसमिल' फ़क़त मनलब से मतलब है।

(१८०)

खुश करने को मैं कह दूँ सौ बार बहुत अच्छे,
सरकार का क्या कहना सरकार बहुत अच्छे।
'अकबर'(३) की तरह चमके 'बिसमिल' भी ज़माने मे,
ग़ज़लें हैं बहुत अच्छी अशआर(४) बहुत अच्छे।

(१८१)

जिस बात की धुन है उन्हें उस बात की धुन है,
काले में नहीं गुन है यह गोरे ही में गुन है।

१—सभा। २—कविताप्रेम। ३—स्वर्गीय महाकवि अकबर इलाहाबादी। ४—पद्य।

'बिसमिल' से पुजारी ने कही बात बहुत .खूब,
जो पाप है वह पाप है जो पुन है वह पुन है।

(१८२)

मगरबी(१) फूलों की इसमें बू(२) है इसमे बास है,
बाप है जाहिल मगर बेटा तो बी० ए० पास है।

(१८३)

इनक़िलाबाते(३) जहाँ से क्या रहे क्या बन गये,
थे कभी राजा मगर हम आज परजा बन गये।

(१८४)

सब को मतलब है अपने मतलब से
न ग़रज दीन से न मजहब से।
यह तरीक़ा है .खूब ऐ 'बिसमिल'
सब मिलें तुमसे तुम मिलो सब से।

(१८५)

हज़रते 'बिसमिल' कहें क्योंकर कि हममें ज़ोर है
वह लिखे हर रङ्ग में जिसके क़लम में जोर है।

(१८६)

हासिल .खुशी कहाँ से हो जब दिल हज़ीं(४) रहे
यह बात इस लिए है कि वह हम नही रहे।

१—पश्चिमी। २—महक। ३—उलट-फेर। ४—दु:खी।

(१३८)

दुनियाँ कहाँ से चल कहाँ तक पहुँच गई
लेकिन यहाँ यह हाल जहाँ थे वही रहे।

(१८७)

नज़ा(१) में हम .खुश हुए यह बात सुन कर वैद्य से
जाओ अब आज़ाद हो तुम जिन्दगी की क़ैद से।

(१८८)

आप भी क्या चीज़ है कुछ कदरे 'फैशन' कीजिए
छोड़िये शौक़े 'पसिन्जर' 'मेल' में 'रन' कीजिए।

(१८९)

मानता हूँ मैं कि शानो तमकनत(२) की बात थी
चुप हुए 'बिसमिल' तो इसमें मसलहत(३) की बात थी।

(१९०)

तुम्ही बताओ बुरा कौन काम करता है
अदब से तुमको ज़माना सलाम करता है।

(१९१)

इसका वादा भी अबस(४) इक़रार भी बेसूद(५) है।
आप जब आ जायँ सामाने 'डिनर' मौजूद है।
मुझसे साहब की नजर ही फिर गई तो क्या रहा,
ज़िन्दगी बेकार है जीना मेरा बेसूद है।

१—अन्तिम समय। २—दबदबा। ३—गुर। ४—बेकार व्यर्थ।

हज़रते 'अकबर'(१) तो पे 'बिस्मिल' यहाँ से चल बसे,

अब इलाहाबाद में मशहूर सिर्फ़ अमरूद है।

(१९२)

मिलती-जुलती दोनों शक्लों का तमाशा देखिए,

मुद्दआ(२) यह है कि उर्दू और भाषा देखिए।

उनको 'बिसमिल' ने यह कह कह कर मुख़ातिब(३)कर लिया,

मैं तड़पता हूँ ज़रा मेरा तमाशा देखिए।

(१९३)

सच कहा क़ानूने सरकारी से डरना चाहिए,

तुम हो मुन्सिफ़ तुमको तो इन्साफ़ करना चाहिए।

(१९४)

ग़म तो इसका है कि दिल ने मेरी ग़म(४) ख़्वारी न की,

दुश्मनों से क्या गिला जब यार ने यारी न की।

जानता था मैं कि हर शै(५) है यहाँ की बे सबात(६),

रह के दुनिया में किसी शै की ख़रीदारी न की।

(१९५)

जिसमें कुछ असर ही नहीं किस काम का गुन है,

वह राग से है राग वह धुन में कोई धुन है।

कहता रहा 'बिसमिल' से यह मन्दिर का पुजारी,

काशी में जो हो पाप तो वह पाप भी पुन है।

१—स्वर्गीय महाकवि 'अकबर' इलाहाबादी। २—मतलब। ३—सम्बोधन करना। ४—हाथ बटाना। ५—वस्तु। ६—न ठहरनेवाली।

(१९६)

यह जानता हूँ मैं कि ख़ुशी ग़म के साथ है
दुनिया का सारा लुत्फ़ मगर दम के साथ है।

(१९७)

जनाबे 'पानियर' का आज यह मज़मून अच्छा है,
जो है सरकार का क़ानून वह क़ानून अच्छा है।
न हो जो मानने की बात क्यों कर मान लूँ 'बिसमिल'
वह कहते है कि धोती से मेरा पतलून अच्छा है।

(१९८)

बूढ़ा पिदर(१) यह कहकर हसरत से रो रहा है।
कालिज मे पढ़ के लडका अब दीन खो रहा है।

(१९९)

अब फ़क़ीरी से बदल दी गई शाही मेरी,
सब पे रोशन है ज़माने में तबाही मेरी।
क्या समझ-सोच के बन्दों से करूँ मै फ़रियाद,
इलतिजा(२) जब नही सुनता है ख़ुदा ही मेरी।
हर तरफ़ आज ज़माने में है चर्चा इसका
दास्ताँ बन गई दुनिया मे तबाही मेरी।
काम अपनो ही से निकलेगा 'सिशन' में 'बिसमिल'
लाटसाहब नही देने के गवाही मेरी।

१—पिता। २—प्रार्थना।

(२००)

बोल उठा बाग़े हिन्द का माली,
काट डालो निफ़ाक़(१) की डाली।
शेर किसको सुनायें ऐ 'बिसमिल'
कि न 'अकबर' रहे न अब 'हाली'(२)।

(२०१)

दिल ने यह उनसे बात कही कितना दूर की,
राज़ी उसी में हम हैं जो मर्ज़ी हुज़ूर की।

(२०२)

.खुशी के साथ जिये हम कि पुरमलाल(३) जिये,
बहुत जिये तो समझ लो पचास साल जिये।

(२०३)

नाम निकला है गज़ट में अब .खुशी का राज़ है,
इम्तिहाँ में पास हो जाने को दावत आज है।

(२०४)

है यह जाहिर नहीं अरमान निकलने वाले,
सैकड़ो रंग बदलते हैं बदलनेवाले।

१—फूट। २—स्वर्गीय मौलाना हाली पानीपती। ३—कष्ट में।

(२०५)

हुई जो और से कुछ और 'हेल्थ(१) नेशन' की,
वह बोल उठे कि ज़रूरत है 'आपरेशन'(२) की।

(२०६)

मरज़े दिल में 'पिपर मिन्ट' की हसरत कैसी,
आपको 'सेल्फ गवर्नमेन्ट' की हसरत कैसी।

(२०७)

हर घड़ी बे तावो मुजतर(३) आज कल सीने में है,
चैन जब दिल को नहीं तो लुत्फ़ क्या जीने में है।
वक्ते आखिर डाक्टर साहब करें तो क्या करें,
उखड़ी-उखड़ी सांस जब बीमार के सीने मे है।

(२०८)

नाम अब छापा तुम्हारा 'पानियर' अख़बार ने,
और अब क्या चाहिए 'सर' कर दिया सरकार ने।

(२०९)

कहा वह दिल वह कहाँ अब दमाग़ बाक़ी है
न तेल है न है बत्ती चराग़ बाक़ी है।

(२१०)

वह कह रहे है कि हम दिल का दाग़ देखेंगे
जो रात-दिन जले ऐसा चराग़ देखेंगे।

१—तन्दुरुस्ती। २—चीरफाड़। ३—बेचैन।

(२११)

पण्डित को देख लीजिए गङ्गा पे ठाट से
लेकिन ग़रज़ नहीं उन्हें पूजा से पाठ से।

(२१२)

कोई आज़ाद नही क़ैदे गमे आलम (१) से
आप क्या पूछते है हाल हमारा हम से।

(२१३)

वह तरीक़े छुट गये हम छुट गये तुम छुट गये
तुम उधर कालिज में पहुँचे और इधर हम लुट गये।

(२१४)

यहाँ भी चलने लगी अब हवायें 'फ़ैशन' की
कि बुतक़दे(२) मे वह इज्जत नहीं बरहमन की।

(२१५)

तहज़ीब(३) का लिहाज़ न बेसूद(४) कीजिए
कालिज में पढ़ चुके अब उछल-कूद कीजिए।

(२१६)

न इसका ज़ायक़ा न मेल अच्छा है
मेरे ख़याल में अब घी से तेल अच्छा है।

(२१७)

और अब क्या चाहिए सरकार के गुन गाइए
नल का पानी पीजिए चक्की का आटा खाइए।

१—संसार। २—मन्दिर। ३—सभ्यता। ४—बेफ़ायदा।

(२८)

जो काम हो दुरुस्त वही काम कीजिए
मज़हब को आप मुफ़्त न बदनाम कीजिए।
यह मेरे बख़्त(१) में है कि छानूं गली की ख़ाक
बंगले पर आप शौक़ से आराम कीजिए।
ऐसा न हो कि हज़रते 'बिसमिल' न हों शरीक
दावत जो कीजिए तो सरे शाम कीजिए।

(२१६)

तुमने सरकार से जब अनबन की
तो है क्यों आरज़ू 'कमीशन' की।
बाग़वाँ है ख़िलाफ़ ऐ 'बिसमिल'
ख़ैर माँगो तुम अब नशेमन(२) की।

(२२०)

हक़(३) बजानिब कह रहा हूँ मै यह कहना मान भी
मेरी नज़रों में है यकसाँ(४) वेद भी कुरआन भी।
देखते ही देखते बदली है दुनिया की हवा
पर लगा कर उड गये अब दीन भी ईमान भी।
ढूँढ़ने वाले को 'बिसमिल' जुस्तजू(५) की शर्त है
उसका मिल जाना बहुत मुशकिल भी है आसान भी।

१—भाग्य। २—घोसला। ३—सच-सच। ४—एक ही। ५—तलाश।

(२२१)

चलते-चलते थक गया अफ़सोस है,
फिर भी मन्जिल मेरी लाखों कोस है।

(२२२)

फ़िक्र दिल मे हर घड़ी उस बात की इस बात को,
मैं हूँ ख़ुश किस बात से मुझको ख़ुशी किस बात की।

(२२३)

लीडरी के लिए यह घात है दुनिया भर की,
काम तो कुछ भी नहीं बात है दुनिया भर की।

(२२४)

ख़राब दिन करे बर्बाद रात कौन करे,
वह कह रहे हैं कि ऐसों से बात कौन करे।

(२२५)

जान ले यह जान ले यह जान ले यह जान ले,
हसरते 'आनर' है तो साहब का कहना मान ले।
मैं असीरी(१) में भी आज़ादी का नग़मा(२) गाऊँगा,
ऐ मेरे सैयाद तू अच्छी तरह यह जान ले।
'पानियर' कहता है ऐ 'बिसमिल मुनासिब है यही,
लाट साहब जो कहें उस बात को तू मान ले।

१—कारागार। २—राग।

(२२६)

फिरते है क्या सोच कर वह इस तरह अकड़े हुए,
मज़हबी झगडों में है दिन-रात जो जकड़े हुए।
उनसे हम बंगले पे कहने जा रहे थे राज़े(१) दिल,
रह गए कुछ सोच कर अपनी जबाँ पकड़े हुए,
कुछ लिखें 'बिसमिल' तो आफ़त लिख के सर पर मोल लें।
सब है क़ानूनी शिकञ्जों(२) में बहुत जकड़े हुए।

(२२७)

अज़ीज़(३) वक़्त के खोने से फ़ायदा क्या है,
उठो सहर(४) हुई सोने से फायदा क्या है।
हँसी ज़माने को आये जो हजरते 'बिसमिल'
तो सब मे बैठ के रोने से फ़ायदा क्या है।

(२२८)

जिसमें ग़फ़लत काम से हो जिनको हसरत नाम को,
ऐसे लीडर और ऐसी लोडरो किस काम की।

(२२९)

हम न होंगे न जमाने में निशानी होगी,
जिन्दगी अपनी किसी रोज़ कहानी होगी।

(२३०)

सोज़े(५) ग़म से काम चलने दीजिए,
जल रहा हूँ मुझको जलने दीजिए।

१—भेद। २—फन्दों में। ३—प्यारा। ४—प्रातःकाल। ५—जलन।

क़ौम एक दीवार है दीवार को,

पहले गिरने फिर सम्हलने दीजिए।

हज़रते 'बिस्मिल' हमारी हल्क(१) पर,

चलती है तलवार चलने दीजिए।

(२३१)

इस तरफ अपनी निगाहें कीजिए,

फ़िर यह कहिए मुझसे आहें कीजिए।

बन गई हर सिम्त(२) अगर सड़कें तो क्या,

सबके दिल में अपनी राहें कीजिए।

हज़रते 'बिस्मिल' किसी का हुक्म है,

रात-दिन चुपचाप आहें कीजिए।

(२३२)

यह कहानी वह फ़िसाना(३) हेच है,

मेरी नज़रों में ज़माना हेच है।

हज़रते 'बिस्मिल' कोई सुनता नही,

आपका क़ौमी तराना(४) हेच है।



१—गर्दन। २—तरफ़। ३—क़िस्सा। ४—राग।